|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | सितम्बर-201
दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

क्रोध पर क्षमा की विजय

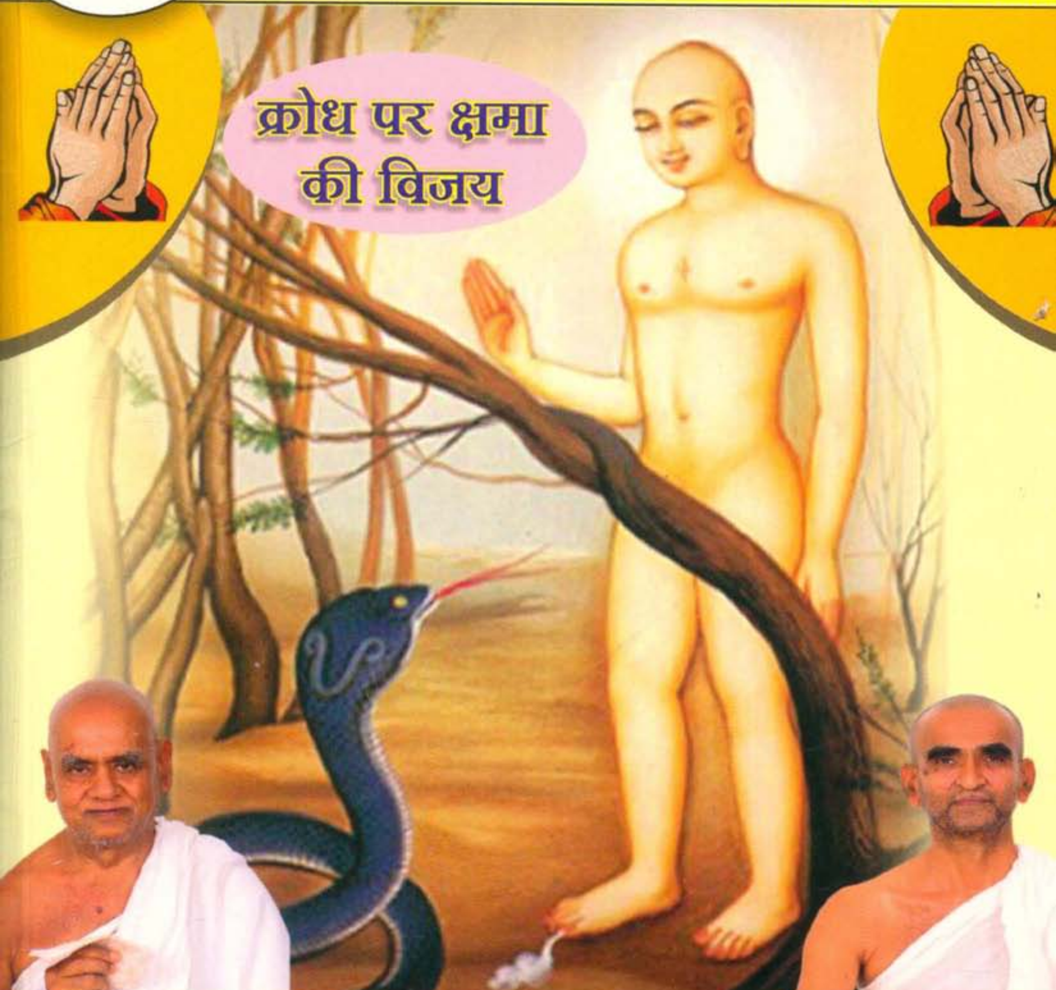

पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजन

पिपलौदा में गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में श्री उपधान तप आराधना प्रथम प्रवेश-7 सितम्बर, द्वितीय प्रवेश 9 सितम्बर, रथयात्रा वरघोड़ा 22 अक्टूबर, मोक्षमाला दिवस 23 अक्टूबर

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट. सरसी जिला-रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

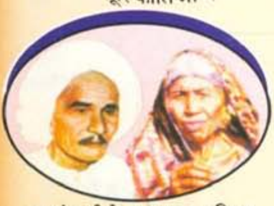

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

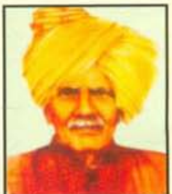

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुडाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा दाधाल

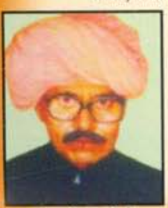

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुडाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जै[illegible] बागरा

Received 19/9/19 3122

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

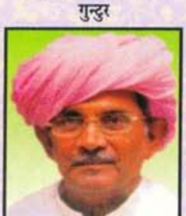
स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

हमारे गौरव

34281

शा. सेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

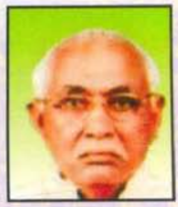
श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसींगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

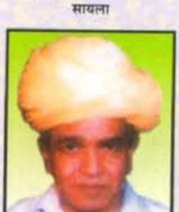
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पावेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

बोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

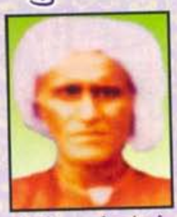
बोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

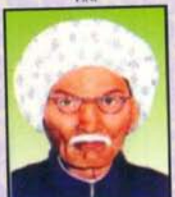
वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा
कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी
राजगढ़

स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंद्रमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

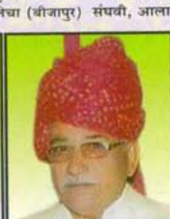

शाह सोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
सितम्बर-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 9
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी (संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू (परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा (सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल (महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन (न्यासी)
श्री विनोद संघवी (न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

सांवत्सरिक क्षमापना का राजवंशी आदर्श

'मिच्छामि दुक्कडं'

'..........'

'आप मौन हैं। हम सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर रहे हैं। अपने कृत अपराधों के लिये मिच्छामि दुक्कडम् कह रहे हैं राजन्।'

'ऐसा कैसा मिच्छामि दुक्कडं। महाराज आपने मेरा राज्य ले लिया, मुझे कैदी बना दिया, मेरे ललाट पर दासीपति लिखवा दिया। मैं कैसे माफ कर दूँ आपको महाराज ?

'देखो राजन् ! आज संवत्सरी का पर्व है, हम सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में हैं, यदि आप मुझे क्षमा नहीं करोगे तो मेरी पर्वाराधना सफल नहीं होगी।'

'ठीक है लेकिन महाराज इस सीने पर रखने के लिये इतना बड़ा पत्थर कहाँ से लाऊँ ?' अवन्ति के बंदी नरेश चण्डप्रद्योत ने उत्तर दिया।

'नहीं ! नहीं ! राजन् सीने पर पत्थर रखने की जरूरत नहीं है। आप मेरे स्वधर्मी हैं। लो! यह आपका राज्यपाट आप अब स्वतंत्र हैं। मेरे बराबरी के राजा हैं, लो अब कर दो क्षमा मुझे।' सिन्धु सौवीर के महाराजा उदययन ने उत्तर दिया।

उदयन ने अपनी जैन संस्कृति की सांवत्सरिक पर्वाराधना को सार्थक बनाने के लिये चण्डप्रद्योत को मुक्त कर दिया। दो राजा-महाराजा गले मिले।

दशपुर (मंदसौर) में चातुर्मास के अंतर्गत यह घटना हुई। दशपुर की धरती धन्य हो गई। ढ़ाई हजार वर्षों के व्यतीत हो जाने पर भी यह स्वर्ण आख्यान जीवंत है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि वचनामृत	9
2.	गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरि वचनामृत	10
3.	क्षमा करे पावन सदा (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	11
4.	पर्युषण पर्व आठ दिनों का ही क्यों (निर्मल पारख, बीकानेर)	12
5.	क्षमा सत्य है, क्षमा अहिंसा है, क्षमा साधना है (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	14
6.	क्षमा से मैत्रीभाव तक (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	15
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	17
8.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	19
9.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	20
10.	क्रोध चार प्रकार का (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	21
11.	कषायों का निरसन ही क्षमापना (मुनिराज डॉ. विद्वदरत्नविजयजी म.सा.)	22
12.	क्षमा (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.)	23
13.	क्षमापना का रहस्य (साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	25
14.	पर्युषण पर्व (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	28
15.	क्षमा को अपनाओ दिल से (मुनिराजश्री संयमरत्नविजयजी 'प्रवासी')	31
16.	क्षमा के लिए (मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी म.सा.)	32
17.	जन्ममरण रूप संसार समुद्र को तारनारी (पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई)	33
18.	क्षमा वीरस्य भूषणम् (डॉ. सोहनलाल संचेती)	35
19.	संवत्सरी का गुंजन- अहंकार का विसर्जन संवत्सरी का संदेश- क्षमापना (पू. आ. श्री जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.)	42
20.	आध्यात्मिक उर्जा की आराधना का पर्व (आचार्यश्री महाश्रमणजी म.सा.)	45
21.	विभाव से स्वभाव की साधना है पर्युषण पर्व	47
22.	क्रोध एवं उसके शमन के उपाय (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	48
23.	मिच्छामि दुक्कडं (मुनिप्रवर श्री मोक्षरतिविजयजी म.सा.)	53
24.	क्षमा वीरस्य भूषणम् (श्री अचलचन्द जैन)	55
25.	क्षमाः जीवन की भव्यता (श्री अनिल कुमार बोटादरा)	57
26.	सहनशीलता और क्षमा सबसे बड़ी तपस्या है (श्री विवेक मुनिजी म.)	58
27.	क्रोध (श्रमणोपासक डॉ. सत्यनारायण शर्मा	60
28.	गुस्सा अच्छा नहीं (श्री अंकुश जैन)	62
29.	क्षमा दान- उत्कृष्ट दान (श्री अरविन्द सी सोनी, जालौर)	64
30.	क्षमा रूप चिन्तामणी (श्री कल्याणमलजी जैन)	65
31.	क्षमा आत्मा का स्वाभिक गुण	66
32.	क्षमा बड़न को चाहिए (श्री अतुल जैन)	68
33.	क्षमा आत्मा का धर्म (श्री के.के. जैन)	70
34.	अंतर से क्षमा मांगना सबके बस की बात नहीं (श्री विजयजी लोढ़ा 'विजय')	73
35.	परम क्षमा (डॉ. मधु एस. जैन)	75
36.	वर्ग पहेली (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	76
37.	गुजराती संभाग	77-96
38.	क्षमा करना बहुत सरल है !!! (श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)	97
39.	क्षमा समझो और समझाओ (पुण्यसम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व-पाटण)	99
40.	कुमकुम सने पगलिये	100-116
41.	श्री संघ सौरभ	117-118
42.	परिषद् प्रांगण से	119-127
43.	जैन विश्व	128-130
44.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	131-132

गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि वचनामृत

क्षमा अमृत है, क्रोध विष है

* क्षमा अमृत है, क्रोध विष है, क्षमा मानवता का अतीव विकास करती है और क्रोध उसका सर्वथा नाश कर देता है। क्रोधावेशी में दुराचारिता, दुष्टता, अनुदारता, परपीडकता इत्यादि दुर्गुण निवास करते हैं और वह सारी जिन्दगी चिन्ता, शोक एवं सन्ताप में घिर कर व्यतीत करता है, क्षण-भर भी शान्ति से साँस लेने का समय उसे नहीं मिलता, इसलिए क्रोध को छोड़कर क्षमा को अपना लेना चाहिये।

* विनय मानवता में चार चाँद लगाने वाला गुण है। मनुष्य चाहे जितना विद्वान् हो, वैज्ञानिक और नीतिज्ञ हो, किन्तु जब तक उसमें विनय नहीं है तब तक वह सबका प्रिय और सम्मान्य नहीं हो सकता।

* जिस प्रकार मिट्टी से बनी कोठी को ज्यों-ज्यों धोया जाता है,उसमें से गारा के सिवाय सारभूत वस्तु कुछ मिलती नहीं, उसी प्रकार जिस मानव में जन्मतः कुसंस्कार घर कर बैठे हैं, उसको चाहे कितनी ही अकाट्य युक्तियों द्वारा समझाया जाए, वह सुसंस्कारी कभी नहीं होता।

* शरीर जब तक सशक्त है और कोई बाधा उपस्थित नहीं है, तभी तक आत्म-कल्याण की साधना कर लेनी चाहिए, अशक्ति के पंजे में फँस जाने के बाद फिर कुछ नहीं बन पड़ेगा, फिर तो यहाँ से कूच करने का डंका बजने लगेगा और अन्त में असहाय होकर जाना पड़ेगा।

* आत्मकल्याणकारी सच्ची विद्वत्ता या विद्या वही कही जाती है, जिसमें विश्व-प्रेम हो और विषय-पिपासा का अभाव हो तथा यथासम्भव धर्म का परिपालन हो और जीव को आत्मवत् समझने की बुद्धि हो।

* जो विद्वत्ता ईर्ष्या, कलह, उद्वेग, उत्पन्न करने वाली है, वह विद्वत्ता नहीं, महान् अज्ञानता है, इसलिए जिस विद्वत्ता से आत्मकल्याण हो, उस विद्वत्ता को प्राप्त करने में सदा अप्रमत्त रहना चाहिए।

* जिस व्यक्ति ने मनुष्य जीवन पाकर जितना अधिक आत्मविश्वास सम्पादित कर लिया है, वह उतना अधिक शान्तिपूर्वक सन्मार्ग पर आरूढ़ हो सकता है। ■■

गुरुदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरिजी वचनामृत

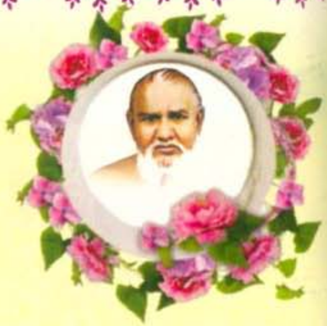

सबसे उत्तम शोभा क्षमा का गुण

मनुष्य की शोभा धन, वैभव, हाथी, घोड़ा, कुटुम्ब परिवार और साम्राज्य आदि से नहीं होती, यह सब शोभा क्षणभंगुर है, सदा साथ रहने वाली नहीं है। इसलिये मानव की सबसे उत्तम शोभा क्षमा गुण है। क्षमाशील मनुष्य अजेय और शक्ति सम्पन्न होता है। उसका दमन देव, दानव, नर नरेन्द्र आदि कोई भी नहीं कर सकते। इस गुण को संसार के संत, महंत, योगी, संन्यासी और अवतारी सभी ने अपनाया है। इसी कारण क्षमा गुण महा प्रभावशाली माना गया है। किसी कवि ने कहा भी है-

क्षमा सकल गुण से बड़ी, क्षमा पुण्य को मूल ।
क्षमा जाहि हिरदे बसे, ताहि देव अनुकूल ।।
अपराधी निज दोष ते, दुःख पावन चिहुँ जाम ।
क्षमा शील निज गुण नते, सुखी रहत सब ठाम ।।

अभिरुचि से सैव्य-पुरुषों की यथायोग्य सेवा भक्ति करता है, उसका उसको जो लाभ मिलता है, वह अवर्णनीय है। अति सरल और आत्मीय शुभ भाव से भरतजी ने अपने पिछले भव में निर्दोष आहारादि लाकर पाँच सौ मुनिराजों को अर्पण किया और बाहुबलजी ने उनकी पगचम्पी की, जिसके फलस्वरूप भरतजी को चक्रवर्ती पद और बाहुबलजी को अजेय बाहुबल मिला। अतएव मानव मात्र को निर्दोष भक्ति करना सीखना चाहिए।

सत्ता मद या बड़प्पन की कामना करने वाला व्यक्ति अपनी दुर्भावना से पारस्परिक संघर्ष एक दूसरे में वैमनस्य, मनमुटाव और एक-दूसरे को हड़पने का रास्ता आदि प्रपंचों में फँसाता है, जो प्रपंच अन्यान्य स्नेह भाव में विद्रोह उत्पादक है। अगर मानव अपनी दुर्भावनाओं के ऊपर अधिकार जमा लेवे, उनको दिल में स्थान न देवे तो दुनिया में किसी भी प्रकार का न संघर्ष ही हो सकता है और न मनमुटाव आदि। अतः मानव मात्र को सदा अपने दिल में सद्भावनाओं का श्रोत बहाना चाहिए तभी उसकी वास्तविक प्रगति हो सकेगी, अन्यथा नहीं। ■■

क्षमा
करें पावन सदा

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

क्षमा दया का मूल है, क्षमा अहिंसा धर्म।
जयन्तसेन बनो क्षमी, करो सदा सत्कर्म ।
क्षमा विश्व का प्रेम है, क्षमा शान्तिवर दूत ।
जयन्तसेन धरोक्षमा, आतम निर्मल पूत।
सुख की जननी है क्षमा, क्षमा परम है मित्र।
जयन्तसेन करो क्षमा, जीवन बने पवित्र।
जीवन प्रदायिनी क्षमा, क्षमा पावनी गंग।
जयन्तसेन करे क्षमा, जीवन शांत सुरंग ।
क्षमा हरे विपदा सदा, क्षमा हृदय में धार ।
जयन्तसेन सुधा क्षमा, क्षमा सुगुण भंडार ।
आभूषण है वीर का, क्षमा धीर का धर्म ।
जयन्तसेन करो क्षमा, हो आतम निष्कर्म ।
पहले जीतो क्रोध को, फिर गुंजाओ नाद ।
जयन्तसेन क्षमा करण, हरता सकल विषाद ।
क्षमा करे पावन सदा, अन्तर मन को जान ।
जयन्तसेन निर्बाध हो, जीवन का उत्थान ।
पर्व पर्युषण को समझ, क्षमा करो अपराध ।
जयन्तसेन चित्त क्षमी, पाता सौख्य अबाध ।

भूलो वैर विरोध को, छोड़ मन की गांठ ।
जयन्तसेन पढ़ो सदा, क्षमा वीर का पाठ।
कहा सुनी जब हो गई, उदय हुआ तब क्लेश।
जयन्तसेन दूरी करो, पहन क्षमा का वेश।
क्रोध सतावे यदि तुझे, डाल क्षमा का मंत्र ।
जयन्तसेन सदा बने, सुखमय जीवन तंत्र ।
कटु वचन नहीं बोलते, क्षमाशील विद्वान् ।
जयन्तसेन सुभाष का, रहते संत समान ।
क्रोध रोग है दवा, जग में क्षमा महान ।
जयन्तसेन बने वही, क्षमा करत गुणवान । ■■

पर्युषण पर्व आठ दिनों का ही क्यों ?

पर्युषण पर्व 8 दिनों का ही क्यों होता है इसमें 7 दिन भी हो सकते थे और 9 दिन भी लेकिन परमात्मा ने 8 दिन ही क्यों बताये ?

सबसे पहले हम आपको यहाँ पर कुछ अंक बताते हैं, जो हमारे पूर्व समय से चलते आ रहे हैं। क्योंकि नई अंक प्रणाली तो अंग्रेज लोगों ने शुरू की है, आदि अनादी काल से हमारे यहाँ जो अंक प्रणाली चल रही है वो कुछ इस तरह से है- 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 ये अंक प्रणाली जो पहले चलती थी और आज भी चल रही है काफी जगह पर...अब आप सोच रहे होंगे की इस सवाल के जवाब में ये अंक गणित प्रणाली का क्या महत्त्व है।

आप सोचो और विचार करो । बहुत महत्त्व है इस गणित का और इसी गणित में ही इसका जवाब है। प्रभु फरमाते है की साल भर में ना जाने कितनी गलतियाँ हम लोग करते हैं, कितने जनों से हम बुराई की या अपने मन से कड़वाहट की गांठ बांधते हैं, उस गांठ को मिटाने के लिए ये पर्व पर्युषण आता है।

आप अपने मन में किसी भी प्रकार की गांठ ना रखे। जिस प्रकार 1 से 10 की अंक प्रणाली के बीच में 8 ही एक मात्र ऐसा अंक है जिसमें किसी भी प्रकार की गांठ नहीं है, और जहाँ गांठ ना हो वो ही सबसे सर्वोपरि होता है इसलिए पर्व पर्युषण 8 दिन का मनाया जाता है। – **स्थूलिभद्र संदेश**

क्षमा वीरस्य भूषणम्

- क्षमा बड़ी अद्भुत एवं अपार शक्ति की सूचक है।
- भले ही कोई तपस्वी तप करे और चमत्कार एवं सिद्धियों की शक्ति प्राप्त करले, किन्तु अगर वह क्षमावान् नहीं है तो उसकी तपस्या अपना सच्चा फल प्रदान नहीं कर सकती।
- उग्र तप की शोभा क्षमा से होती है।
- केवल ज्ञान भी तब तक प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक कि राग या द्वेष का लेश मात्र भी आत्मा में रहता है।
- तपस्या के साथ ही क्षमा का होना भी आवश्यक है।
- क्षमा शीतल जल के समान है जो कि भड़के हुए कषायों को शान्त कर देता है और क्रोध वह भाग है जो कषायों को और भी बढ़ाती है।
- विवेक मानव को सदाचारी बनाता है और अविवेक अनाचारी।
- जहाँ ज्ञान नहीं वहाँ चारित्र भी नहीं रहता।
- 'क्षमावीरस्य भूषणम्' - क्षमा शूरवीरों का आभूषण है।
- वेरी से मत हारो बल्कि क्षमा से वैरी को जीत लो- बाईबल
- यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करता है तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना वीरों का काम है- गुरु गोविन्द सिंह
- विद्वान क्षमा -भाव से ही पवित्र बनते हैं- मनुस्मृति
- आत्मा को धर्ममय बनाकर मैं सभी जीवों को क्षमा अर्पित करता हूँ और सभी जीवों से क्षमायाचना करता हूँ।
- सभी जीवों को वात्सल्य भरी निगाहों से देखता हूँ और चाहता हूँ कि सभी जीव मुझे प्रेम भरे नेत्रों से निहारें। सभी जीवों की हित कामना मेरे हृदय में है और सभी जीवों के हृदय में मेरी हित कामना हो।
- मैं किसी का दुश्मन नहीं हूँ और कोई मेरा दुश्मन न हो। मैं किसी को शत्रु नहीं मानता और न ही कोई मुझे शत्रु माने। मैं सभी का शुभचिंतक हूँ और सभी मेरे शुभचिंतक बनें।

■ ■

क्षमा एक उत्तम औषध

क्षमा संस्कार है, क्षमा संस्कृति है, क्षमा मन की क्षेष्ठ कृति है, क्षमा प्रेम का परिधान, क्षमा विश्वास का विधान, क्षमा नपुरत का निदान है, क्षमा मान-सम्मान बहुमान है। क्षमा ही सच्चा ज्ञान है, क्षमा खुद का भगवान है। क्षमा नैतिकता का निर्वा है, क्षमा पवित्रता का प्रवाह है, क्षमा एक प्रभाव है, क्षमा अहिंसा का अनुवाद है, क्षमा संस्कारी दिलों की साद, क्षमा सद्गुणों का संवाद है। क्षमा न हो तो जीवन में से सब कुछ खत्म है।

क्षमा सत्य है, क्षमा अहिंसा है क्षमा साधना है

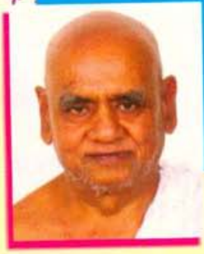

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

'क्षमा वशीकृतो लोकः क्षमया किं न साध्यते'

क्षमापना संसार का वशीकरण मंत्र है। क्षमा से क्या सिद्ध नहीं होता।

क्षान्ति तुल्य तपो नास्ति

सबसे बड़ा तप क्षमा है, इसके समान कोई तप नहीं।

महाभारत में भी उल्लेख किया गया है कि –

'क्षमयेदं धृतं जगतः।'

संसार में क्षमा नहीं होती तो शायद यह जगत अब तक टिका हुआ नहीं रहता। क्षमा के बल पर ही मानव संस्कृति का सौन्दर्य, सद्भाव एवं सुख अस्तित्व बनाये हुए हैं। क्षमा जीवन जीने का विज्ञान है। पृथ्वी का पर्यायवाची क्षमा भी होता है। पृथ्वी की क्षमा तथा सहनशीलता अद्भुत माने जाते हैं।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी से गौतम ने पूछा–

'प्रभो ! खंतिएणं जीवे किं जणयइ।'

भगवान ने उत्तर दिया

'खंतिएणं परीसहे जिणई'

क्षमा से परीषहों के कष्टों तथा कठिनाइयों को सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है।

जैन धर्मावम्बियों के सभी पर्व अहिंसा, संयम तथा तप का पोषण करने वाले हैं। वे व्यक्ति को त्याग तथा वैराग्य से परिपूर्ण जीवन शैली की रचना करने के लिये प्रेरित करते हैं। जीवन के मूल्यों में सरलता, विनम्रता, मृदुता तथा परहित चिन्ता महत्वपूर्ण गुणक हैं। इन सभी के जीवन में अनुगमन का आधार क्षमा है। क्षमा याने अपार शक्ति का भंडार ! जिसमें क्षमा का भाव है, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता है। जो मानते हैं कि क्षमा कायरों का गुण है, वे न धर्म समझते हैं, न क्षमा का अर्थ जानते हैं । हमारे यहाँ योगियों ने 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' की उक्ति के द्वारा क्षमा को वीरों का आभूषण मान्य किया है।

क्षमा का भाव अपनाकर क्षमा वही प्रदान कर सकता है जो दृढ़ विचारों तथा सुदृढ़ शुभ भावों से ओतप्रोत है। जो क्षमाशील है, वही सत्य का साधक है। क्षमा सत्य है, अहिंसा है, शुद्धता है तथा विवेक एवं सरलता है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व जीवन को आराधना काल का अवसर प्रदान करता है, जिनमें आत्मा के कल्याण के परमाणुओं का अवगाहन है, वे पर्युषण काल को तप, त्याग, संयम, क्षमा, आर्जव, मार्दव जैसे गुणों को सिद्ध करने में व्यतीत करते हैं। पर्युषण आत्मोत्थान की सीढ़ी बननी चाहिये।

■■

क्षमा से मैत्रीभाव तक

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

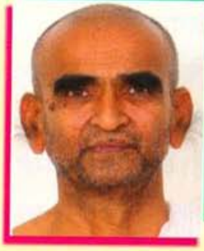

प्रेम, अवैर एवं सद्भावना से ही मैत्री भाव की वृद्धि होती है। मैत्री को धर्म का हार्द्र माना गया है। जैन संस्कृति ने प्राणीमात्र तक अपनी दया तथा करुणा की सीमाएँ विस्तृत की हैं। प्राणीमात्र से तात्पर्य है चौरासी लाख जीव योनी से उत्पन्न सभी प्रकार के जीव । जैन दर्शन का जीव विज्ञान अद्वितीय एवं अनूठा है। प्राणीमात्र तक अपनी मैत्री का प्रसार करना इसका प्रतिपादन है। प्राणी मात्र तक मैत्री तभी संभव है जबकि व्यक्ति पवित्र, निर्मल तथा स्वच्छ हृदय से क्षमा को अंगीकार किये हुए रहे। तीर्थंकर महावीर देव ने फरमाया था- 'क्षमा शील बनो, क्षमा ही परम शक्ति है, परम तत्व है। धर्म का मूल तत्व क्षमा है।' क्षमा वह प्रकाशपुंज है जो सर्वत्र व्याप्त अंधेरे को हरा कर हटा देता है। क्षमा से व्यक्ति सभी के हृदयों तथा मन-मस्तिष्क पर विजय प्राप्त करता है।

संवत्सरी का अगला दिन क्षमापना दिवस के रूप में मनाया जाता है, क्षमापना दिवस अपने गर्भ में महत्वपूर्ण संदेश संजोए है और वह संदेश है विश्वमैत्री का संदेश। क्षमापना दिवस । अथवा विश्वमैत्री का महामन्त्र है-

खामेमि सव्वे जीवे, सव्वे जीवा खमंतु में ।

मित्ती में सव्व भूएसु, वैर मज्झण केणई ।।

अर्थात् मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ और सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरी सभी जीवों के प्रति मैत्री है और मेरा किसी के साथ वैर नहीं है। किसी ज्ञानी ने ठीक ही कहा है कि व्यक्ति गलतियों का पुतला है। अर्थात् मनुष्य से गलती होना अनिवार्यतः संभव है, लेकिन यदि किसी व्यक्ति से जाने-अनजाने में गलती हो जाती है अथवा वह अन्य व्यक्ति के हृदय को ठेस पहुँचाता है तो इस क्षमापना महापर्व पर हृदय की गहराई से क्षमा मांगता है, और उसे पुनः न दोहराने की प्रबल प्रतिज्ञा करता है। यही सार है- क्षमापना दिवस का। जब हमारा किसी से वैर भाव नहीं है तो यह स्पष्ट है कि व्यक्ति मैत्री की स्थापना कर रहा है। अतः क्षमापना दिवस मैत्री दिवस भी कहलाता है। इस दिन लोग वर्ष भर की विरोध की गांठों को खोलकर

क्षमायाचना कर इस दिन अपने हृदय को बिल्कुल शान्त महसूस कर जीवन भर ऐसे ही निर्दोष एवं शांत रहने की कामना करता है। क्षमापना दिवस पर क्षमा माँगने व देने का विधान है। इसी आदान प्रदान की प्रक्रिया से व्यक्ति का अन्तःकरण शुद्ध व निर्मल हो जाता है। क्षमापना दिवस की प्रासंगिकता वर्तमान युग में अधिक है।

क्योंकि अपनी आजीविका एवं अन्य कारणों हेतु जाने-अनजाने में त्रुटि करता है जिसे दूर कर भूल सुधारकर मैत्री स्थापित करने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है। यह क्षमापना वास्तव में प्रत्येक दिवस क्षमापना दिवस हो ताकि व्यक्ति अपने अन्तःकरण की शुद्धि की प्रक्रिया में निरन्तर लगा रहे।

क्षमा, मैत्री, अबैर जैसे सद्गुणों की आज विश्व को सर्वाधिक आवश्यकता है। जैन धर्म के ये सिद्धान्त ही विश्वशांति तक विश्व को पहुंचा सकते हैं। ■■

भूल से दुखी हैं हम

मानव भौतिकता से संत्रस्त भौतिकता में ही शाति की खोज कर रहा है। जहां जो वस्तु है ही नहीं वह प्राप्त कैसे हो सकती है। बाहर के भौतिक साधनों में सुख नहीं है। सुख तो अपने ही भीतर है। आनंद का स्त्रोत, शांति का भंडार एक अपनी आत्मा ही है। सब कुछ प्राप्त करने के बाद भी अगर मनुष्य कुछ प्राप्त नहीं कर पाता तो वह है शांति । शांति का स्त्रोत भले ही सबसे निकट हो पर उसकी जानकारी के अभाव में मानव मृग-मरीचिका में भटक रहा। अगर यह ज्ञान हो जाये कि अपनी ही आत्मा में आनंद का भंडार दबा हुआ है तो जीवात्मा शांति के लिए भौतिक जगत की ओर नहीं भागेगा अपितु अपनी ओर झुकेगा।

क्षण भर की बाहर की दौड़ से रुकेगा। जीवन मात्र के अंदर आनंद के अपार स्त्रोत विद्यमान हैं पर मिथ्या-अवधारणाओं के कारण वह बाहर में आनंद की खोज कर रहा है। पत्नी, बच्चे परिवार और भौतिक संसाधनों में वह आनंद, सुख, शांति की खोज कर रहा है जबकि वहां किंचित भी सुख शांति नहीं है। सारे स्त्रोत स्वयं के भीतर हैं। इस जीवन ने सारी यात्राएँ कर ली हैं, एकमात्र अपने भीतर की ही यात्रा नहीं की है, अगर वह एक बार भीतर की यात्रा कर लेता तो बाहर की सारी यात्राएँ थम जाती।

निरर्थक भटकन से विश्रांति मिल जाती । अगर हमें सुख, शांति की चाहना है तो अपने आत्म तत्व पर दृष्टि देनी ही होगी इसके अलावा कोई रास्ता नहीं । व्यसन मुक्त और सदाचारी व्यक्ति ही आनंद और अद्भुत शांति का अनुभव कर सकता है। अतः सच्चरित्र बनने का पुरुषार्थ अत्यन्त आवश्यक है।

सम्पादकीय

क्षमापना याने जीवन को अद्वितीय आनंद की प्राप्ति

महाराष्ट्र में संत तुकाराम को दुष्टगण बहुत परेशान करते थे। संत उन्हें कोई उत्तर नहीं देते थे। संत के शिष्य उनसे बार-बार प्रतिकार करने की अनुमति माँगते थे लेकिन संत तुकाराम एक ही बात कहते थे-

'क्षमा शास्त्र ज्या नराचे हाती, दुष्ट त्या प्रति काय करी।'

'जिसके हाथ में क्षमा का शस्त्र है, दुष्ट उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।'

संत रामदास यात्रा पर थे। देहेगांव में दत्तुबुवा ने एक खेत से भुट्टे चुराये तथा खाने की व्यवस्था की। इतने में खेत का मालिक डंडा लेकर आ गया, उसने आव देखा ना ताव गालियां देते हुए डण्डे से संत को पीट दिया। दूसरे दिन सतारा पहुंचने पर संत की पीठ पर डंडे के निशान देखकर छत्रपति शिवाजी ने अपने गुरु से कारण पूछा। संत ने कृषक को बुलवाने को कहा। कृषक आया तथा ज्योंही उसे पता लगा कि जिसे डंडा मारा था वे छत्रपति शिवाजी के गुरु संत रामदास हैं, वह जान कर कांपने लगा। उसने संत से क्षमा मांगी। संत ने शिवाजी से कहा- इस कृषक ने हमारी सहनशक्ति की परीक्षा ली है। इसे माफ करो तथा कीमती वस्त्र से सम्मान कर बिदा दो।

दार्शनिक सुकरात की पत्नी अत्यंत कर्कश स्वभाववाली थी। सुकरात उसे प्रतिदिन सहन करते थे। एक दिन सुकरात कहीं जा रहे थे, पत्नी ने लड़ना शुरू कर दिया। सुकरात के मौन रहने पर पत्नी पानी से भरा हुआ एक घड़ा लाई तथा सुकरात पर उंडेल दिया। सुकरात उसकी उद्दण्डता को क्षमा करते हुए हंसे तथा बोले- 'बादल पहिले गरजते हैं, फिर बरसते हैं।' पत्नी शर्मिन्दा होकर उनके पैरों में गिर पड़ी।

महाभारत के युद्ध में घायल दुर्योधन मृत शय्या पर था। अश्वत्थामा ने पूछा कि- 'आपकी अंतिम इच्छा क्या है ?' दुर्योधन ने कहा कि- 'यदि तू ला सकता हो तो पाँचों पाण्डवों के कटे हुए सिर ले आ, मुझे परम शांति होगी।

अश्वत्थामा मर्यादा भंग कर रात्रि में पांडवों के तंबु में आया। वहाँ पांडव कहीं गये हुए थे लेकिन उनके पांचों पुत्र सो रहे थे। सूरत मिलती हुई होने के कारण अश्वत्थामा

पांडवों के स्थान पर पांडव पुत्रों के सिर काटकर ले चला गया।

प्रातः द्रोपदी ने अपने पांचों पुत्रों की हत्या पर जोरों से रुदन शुरू कर दिया। भीम थोड़ी देर में अश्वत्थामा को पकड़कर ले आए तथा द्रौपदी से पूछा कि क्या मेरी गदा से इसे चूर-चूर कर दूं।

द्रौपदी की क्षमा जागृत हो गई। उसने कहा इसकी माता पति की मृत्यु से वैधव्य सहन कर रही है। अब पुत्र की मृत्यु का दर्द मैं नहीं देना चाहती। उसने अश्वत्थामा को क्षमा कर दिया।

क्षमा का महत्व केवल जैन शास्त्रों के पृष्ठों पर ही नहीं है। समग्र मानव संस्कृति इसकी महत्ता को रेखांकित करती है। पूरे विश्व में संतों के उदय का अस्तित्व है तथा उनने क्षमा को जीवन के स्वर्णसूत्र में स्वीकार किया है। क्षमा को सर्वोत्कृष्ट दान के रूप में मान्य किया गया है।

क्षमा का पोषण उसी के हृदय में हो सकता है जिसके हृदय में बदला लेने अथवा प्रतिशोध की अग्नि भड़काने के स्थान पर सद्भावना, सहृदयता आपसी प्रेम तथा स्नेह परिपूरित होते हैं। दुश्मनी, विरोध तथा वैर का तेजाब जिस हृदय को सम्पूरित किये हुए है वे कभी भी शांति की ओर अग्रसर नहीं हो सकते। व्यक्ति का स्वभाव ईर्ष्या, द्वैष, घृणा जैसे दुर्भावों से युक्त नहीं होना चाहिये, व्यक्ति के हृदय में सरलता, सहजता तथा समरसता की हिल्लोरें थपेड़े खाती होनी आवश्यक है। जीवन के सही मूल्यों को अपनाये बिना भी क्षमा का उद्गम नहीं हो सकता।

फिर क्षमा तभी सार्थक मानी जाती है जबकि वह उभय पक्षों में समान सद्भावना का विकास करे। व्यक्ति का गुण अपने अपराधों का असद्कार्यों अथवा असद्भावों के प्रति पश्चाताप को ज्वलन्त करने का होना चाहिये। जिसके हृदय के अंतर में पश्चाताप नहीं है, उसकी क्षमा महज नाटक है।

आज का मानव अत्यंत जटिल हो गया है। वह अपने स्वार्थ में इतना अंधा बन चुका है कि सभी को धोखा देना ही अपनी नीति बनाये हुए है। कई लोग अपना कार्य निकालने की दृष्टि से क्षमा का स्वांग रचने लगे हैं। इस प्रकार की क्षमा व्यक्ति को स्थायी शांति एवं मानसिक संतुलन की ओर अग्रसर नहीं कर सकती है। ऐसी कृत्रिम क्षमा बैर की श्रृंखला को बढ़ाये रखती है। क्षमा वही सार्थक है जो सच्चे मन से की जाती है।

सच्ची क्षमापना जीवन को अद्वितीय तथा नैसर्गिक आनन्द की परिप्राप्ति करवा देती है। जैन संस्कृति के लिये तो क्षमापना हृदय (हार्ट) के केन्द्र बिन्दु पर है।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

(सम्पादक)

अध्यक्षीय पाती

क्रोध की हार

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

बीसवीं सदी की शुरुआत में एक अमेरिकी चीन गया। वह जैसे ही रेलवे स्टेशन के बाहर निकला, उसने देखा कि दो व्यक्ति आपस में झगड़ रहे हैं। उनके आसपास लोगों की भीड़ जमा हो गई थी। अमेरिकी भी रुककर तमाशा देखने लगा। बहुत देर हो गई, पर वे दोनों एक-दूसरे पर गालियों की बौछार करते रहे। अमेरिकी असमंजस में पड़ गया। आखिर वे हाथापाई पर क्यों नहीं उतरते ? जब उससे रहा न गया तो उसने एक व्यक्ति से पूछा ही लिया - 'भैया, ये दोनों इतनी देर से झगड़ रहे हैं, पर एक दूसरे पर हाथ उठाने से क्यों कतरा रहे हैं ?' चीनी बोला- 'दरअसल, ये दोनों जानते हैं कि जो पहले हाथ उठाएगा, वह लड़ाई भी हार जाएगा। ये दोनों एक-दूसरे को पहले हाथ उठाने के लिए ही उकसा रहे हैं।

कंफ्यूशियस ने हमें सिखाया है कि क्रोध का मतलब व्यक्ति की पराजय होती है। यानी हारा हुआ आदमी ही क्रोध करता है।

हमारी संस्कृति में भी क्रोध की पराजय के कई उदाहरण हैं। तीर्थंकर महावीर स्वामी पर चण्डकौशिया सर्प ने क्रोध में आकर बार-बार फुंफकार की तथा यहाँ तक कि क्रोध की चरम सीमा में दंश तक कर दिया लेकिन तीर्थंकरदेव ने उससे इतना ही कहा- 'बुज्झ, बुज्झ चंडकौशिये बुज्झ' भगवान के इस संदेश पर ही विषधर सर्प जातिस्मरण ज्ञान से अपने पूर्वभव का दर्शन करने लगा तथा क्रोध को त्याग कर शांत जीवन में प्रविष्ट हो गया। यह क्रोध की पराजय तथा क्षमा की विजय थी।

हम सभी सामाजिक जीवन से सम्बद्ध हैं। तीर्थंकर श्री महावीर देव ने शासन संचालन के लिये चतुर्विध संघ की स्थापना की थी। हम इस संघ के अंग हैं। श्रावक तथा श्राविका दोनों वर्गों से हमारी समाज रचना हुई है। हमें आत्म कल्याण के उद्देश्य से लेकर धर्म की प्रभावना तथा श्रीसंघ की एकता के लिये कई प्रवृत्तियों में सतत् संलग्न रहना पड़ता है। यह अपना कर्त्तव्य है जिसका हम पालन करते हैं।

अध्यक्षीय संदेश

क्रोध से मैत्री की ओर

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

क्रोध हमारा दुश्मन है। वह हमारे अंतर से उत्पन्न होता है तथा हमारे जीवन, सम्बन्धों, व्यवहार तथा सम्पर्क को कलुषित करता है। उसकी उत्पत्ति किसी भी माने या कारण या अर्थ में उपयोगी/सही नहीं है। अच्छे आचरण तथा संस्कारों वाला व्यक्ति भी क्रोध की अवस्था में शैतान बन जाता है। क्रोध मनः स्थिति में व्यक्ति विवेकहीन हो जाता है, आपा खो देता है तथा सही-गलत की भेद रेखा को विस्मृत कर देता है। किसी चिंतक ने क्रोध को ग्रहण योग्य नहीं माना है, किसी भी धर्म ने क्रोध को उपादेय घोषित नहीं किया है। सभी धर्मशास्त्र क्रोध से दूर रहते, क्रोध के आवेश की स्थिति में शान्त रहने एवं क्रोध को शमन करने का उपदेश देते हैं। क्रोध को मानव का स्वभाव नहीं माना है। पर्युषण पर्व का पावन प्रसंग व्यक्ति को सहनशील, सहिष्णु, संतुलित रहने का उपदेश देता है। क्रोध वैर को उत्पन्न करता है, आपसी प्रेम-सद्भाव को भंग करता है जबकि पर्युषण पर्व सर्वप्राणियों के लिये मैत्री का संदेश देकर व्यक्ति को जीवन की सत्यता की ओर अग्रसर करता है।

क्रोध पर विजयी होने का औजार क्षमा है। व्यक्ति क्षमाशील बने, क्षमा विनयपूर्वक प्राप्त करे तथा उदारतापूर्वक क्षमा प्रदान करे। जिसके पास क्षमा का गुण है, उसके पास किसी भी सद्गुण का अभाव नहीं हो सकता। हमारा परिषद परिवार कार्यकर्ताओं का ही विशाल समूह है। प्रत्येक कार्यकर्ता स्वयंसेवक है, उसका सीधा सम्बन्ध समाज से होता है। इस सम्पर्क में कई प्रिय-अप्रिय बातें हो सकती हैं। एक स्वयंसेवक को विनम्र, अनुशासित तथा क्षमाशील होना आवश्यक है। अतएव सभी परिषद साथी व बहिनें क्षमा को जीवन में अंगीकार कर अपने आचरण को निर्मलता, बड़प्पन एवं मैत्रीभाव से परिपूर्ण बनाएँ।

संवत्सरी के अवसर पर मैं भी अपने कृत अविनय के लिये क्षमा याचना करता हूँ, आप सभी की ओर से क्षमापना स्वीकार करता हूँ। खामेमि सव्वे जीवा का सूत्र हमें क्षमापना की ओर अग्रसर करता है। हमारी प्रत्येक प्राणी से मैत्री तभी हो सकती है जब हममें किसी प्रकार की दुश्मनाहट या वैरभाव नहीं हो जो है उसकी सफाई करनी है, उसे कब तक संभाल कर रखेंगे क्रोध को तो हमारे मन-वचन-कर्म से विसर्जित करना ही है। सभी के प्रति मिच्छामि दुक्कड़म।

क्रोध चार प्रकार का

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

1. अनंतानुबंधी क्रोध – वह क्रोध जो भवों तथा भवांतरों तक जीवित रहता है। इस कारण कई भवों तक बदले की भावना बनी रहती है, वह और गुणाकार होकर बढ़ती है। ऐसा क्रोध चण्डकौशिक सर्प में था। उसे तीर्थंकर महावीर देव का सान्निध्य प्राप्त हो गया तथा उसका उद्धार हो गया अन्यथा ना जाने कहाँ तक उसका पतन होता रहता।

2. अप्रत्याख्यानावरण क्रोध– यह क्रोध दीर्घ समय तक रहता है तथा फल देता रहता है। यह त्याग के मार्ग से साधक को विचलित रखता है। कषाय भाव आत्मा के पतन को बढ़ाता रहता है।

3. प्रत्याख्यानावरण क्रोध– यह क्रोध रेत पर बनाई गई आकृति के अनुरूप है जो अधिक समय तक नहीं रहती है। यह शीघ्र ही मिट जाती है।

4. संज्वलन क्रोध– यह क्रोध क्षणिक होता है। यह होता अवश्य है लेकिन पश्चाताप की ओर आत्मा को अग्रसर कर देता है। क्रोध के स्थान पर अपनी गलती मानकर क्षमापना करना सीखना चाहिये।

हृदय परिवर्तन

एक संत हमेशा लोगों का भला करने लगे रहते थे, फिर भी कुछ दुष्टात्मा उन्हें अकारण कष्ट दिया करते थे। एक दिन एक दुर्जन व्यक्ति उनके पास आकर यदा-कदा शब्द बकने लगा। संत ने उसे प्रेम पूर्वक समझाने का प्रयत्न किया, मगर उसने अपशब्द कहना बंद न किया। कुछ देर बाद संत अपने निवास-स्थान की ओर चल पड़े। तो वह आदमी भी गालियां देता हुआ। उनके पीछे-पीछे चलने लगा। जब घर आ गया तो संत बोले- भाई, अब तू मेरे घर ही रह, ताकि गालियां देने के लिए तुझे चलकर न आना पड़े। वह आदमी सचमुच संत के घर रहने के लिये तैयार हो गया। वहां रहते हुए संत का उज्ज्वल जीवन देखकर वह बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसके बाद तो वह वहाँ रहकर संत की सेवा भी करने लगा। एक दिन संत बोले- भाई, अब तू अपने घर जा । नहीं, मुझे यहीं रहने दीजिए उस व्यक्ति ने विनीत भाव से कहा।

संत कहने लगे- भले रह, पर एक शर्त पर कि जब मैं कुछ बुरा काम करूं, तुम मुझे गाली दिया करना। यह सुनकर उस आदमी की आँखों में आंसू बहने लगे।

कषायों का निरसन ही क्षमापना

(मुनिराज डॉ. श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

अपने अंतर में चारों कषायों क्रोध, मान, माया तथा लोभ का अन्मूलन कर इनका तथा विशेषतः क्रोध का पुनः जन्म नहीं होने देना, यही सच्ची क्षमापना है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जला सको तो अहं को जला दो, वरना अहं तुमको जला देगा।

क्षमापना आराधना का प्राण है, क्षमा से ही आत्मा का कल्याण है। 'क्षमा के समान कोई तप नहीं है तथा संतोष के बिना कोई सुख नहीं है, तृष्णा के समान कोई रोग नहीं है, दया के समान कोई धर्म नहीं है।' एक विद्वान की यह सूक्ति क्षमापना को सर्वोपरि स्थापित करती है।

जो बैरभाव से मुक्त होकर क्षमाशील बनते हैं, शास्त्रों ने उन्हें भगवान माना है। एक साधक इस प्रकार अपनी मनस्थिति का निर्माण कर सच्ची साधना कर सकने में सफल होता है। विश्व की विसंगतियां क्रोध के कारण हैं, उनका दूसरा अहं है। जो क्रोध तथा अहं से मुक्त है, वही आत्मकल्याण पथ का सच्चा साधक है।

क्षमा मुक्ति का तारणहार है।

प्रश्नोत्तरी

प्रश्न – पर्युषण का उल्लेख किस आगम में है ?

उत्तर – समवायांग सूत्र कल्पसूत्र आदि।

प्रश्न – पर्युषण का सार क्या है ?

उत्तर – पापों का प्रतिक्रमण, दोषों की आलोचना, भूलों की क्षमायाचना।

प्रश्न – पर्युषण पर्व में कौन से सूत्र पढ़ें जाते है ?

उत्तर – अंतकृतदशांग सूत्र एवं कल्पसूत्र।

प्रश्न – पर्युषण पर्व में क्या करना चाहिए ?

उत्तर – अधिक से अधिक समय धर्म साधना में बिताएँ। कम से कम एक सामायिक अवश्य करें। कुछ समय के लिए जिन पूजन ध्यान, स्वाध्याय माला करनी चाहिये। रात्रि भोजन से भी बचना चाहिए। किसी की निन्दा- आलोचना न करें। प्रतिक्रमण में सम्मिलित हों। संवत्सरी को उपवास करें।

क्षमा

(मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.)

1. शहर नगर या हो गाँव सबसे बड़ा क्षमाभाव।
2. क्षमा उपशम भार की जननी है। कषायों की हननी है ।
3. क्षमा का जल क्रोध की आग को शान्त करता है ।
4. क्षमा का फूड जीवन बाग में खिलाओं एवं सद्‌गुण की सुगंध पाओ ।
5. क्षमा स्नेह को जगाती है, द्वेष, दुर्भाव को दूर भगाती है।
6. क्षमा का याचक आराधक है। उससे विपरीत विराधक है।
7. क्षमा करना धर्म है। वैर वृत्ति रखना अधर्म है।
8. क्षमा का भाव जीव मैत्री का प्रबल प्रभावक है।
9. क्षमा स्वगुण प्राप्ति में सहायिका है। जीवन स्वरूप की विधायिका है।
10. क्षमा की दीप हृदय में जलाओ, ईर्ष्या अहं के अंधकार को दूर भगाओ ।
11. क्षमा के प्रवाह में स्नान कर, पापी भी पवित्र बनता है।
12. क्षमा हृदय में पड़े घाव में रूझान है एवं मुरझाये मन में मुस्कान लाती है।
13. क्षमा धर्म है, क्षमा कर्म है एवं क्षमा जीवन का मर्म है।
14. क्षमा कायर नहीं बनता है। किन्तु शौर्य पराक्रम को दिखाती है।
15. क्षमा खंडित दिल को जोड़ती है जैसे सीमेन्ट, क्रांकीट, टूटे पुल को जोड़ती है।
16. क्षमा दोष, दुर्भाव भरे हृदय के दुर्गुणों को साफ करने में डस्टर का काम करती है।
17. क्षमाशील गुण का चिन्तक ग्राहक एवं चाहक होता है।
18. क्षमा जल का पान कर हृदय का संताप हरती है।
19. क्षमा शील रोते को हसाता है, उदारता एवं परोपकार परायण बन जाता है।
20. क्षमा अंतर की ऊर्जा है, दुर्घटना ग्रस्त जीवन गाड़ी का पूर्जा है।
21. क्षमा क्रोध का दमन करने वाली नागदमनी है।

22. क्षमा वीर का आभूषण है, क्षमा विर्दूषण जीवन का प्रतीक है।
23. क्षमा विजय श्रीकी प्रदात्री एवं आनन्द की अधिष्ठात्री है।
24. क्षमा हृदय में मैत्री भावना का वीजारोपण करती है।
25. क्षमा कामयाबी कारिका है, विशुद्धि की विस्तारिका है।
26. क्षमा की निर्मल भाषा से चिन्तन, मनन एवं विचार विशुद्धि होती है।
27. क्षमा की मेघ गर्जना, उपशम वृष्टि की परिचायिका है।
28. क्षमा से बैरी को वश में किया जा सकता है।
29. क्षमावान है महान, करो क्षमा का दान।
30. क्षमाशील दिलावर दिल का होता है, क्षमा के जल से कर्म के मैल को धोता है।
31. भले हो तो भले रहना, बुरा मत होने देना तुम्हारे दुश्मनों का भी भले होकर भला करना नयन में अमृत और दिल में दया रखकर कठोर वचनों को दिल से निकालकर सबसे क्षमा कहना।
32. क्षमा वंदनीय, क्षमा जिन्दगी, क्षमा साधना, क्षमा प्रार्थना।
उनको मेरा शतशः वन्दन,
जिन में गूंजित क्षमा भावना।
33. जल भरे नेत्रों से अन्तमन की आवाज से क्षमा पर्व के नाम पे, क्षमा मांगे हम आपसे।
34. परस्पर क्षमा याचना कर अपनी आत्मा में भी मैत्री का संचार करे।
35. माफी की महफिल में
कोई मस्ती नहीं होती। क्षमा की साधना, कभी सस्ती नहीं होती
क्षमा देने, लेने में जबरदस्ती नहीं होती
शत्रु को क्षमा करने पर वैर की हस्ती नहीं होती।
36. क्षमा दान याने मिच्छामि दुक्कड्म। माग क्षमा में ही वो शक्ति हैं जिससे कुम्हलाई हुई मन रूपी बेल को पुनः खिले हुए सुगंधित फूलों से सजाया जा सकता है।

* जब भी गुस्सा आए तो चेहरे के हाव-भाव को शांत करने की कोशिश करें, अगर मुट्ठी बंद हो तो उसे खोल लें।
* उन योग क्रियाओं को प्रतिदिन करें जो मस्तिष्क की क्रियाओं को नियंत्रण में रखने में सहायक है।
* गुस्से वाले वातावरण से दूर रहने का प्रयास करें।

क्षमापना का रहस्य

(साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

'क्षमापना' इन चार अक्षरों में जैनशासन का मर्म छुपा हुआ है। मुक्ति मंजिल में पहुंचने की सीढ़ी है क्षमापना आत्मा परमात्मा बनने का शार्टकट है क्षमापना, दुःखों के पहाड़ों से दूर अनंत सुख में लीन होने का मार्ग है क्षमापना । क्षमापना के एक-एक अक्षर में सिद्ध-बुद्ध मुक्त होने का रहस्य छुपा हुआ है। क्षमापना का 'क्ष' हमारी क्षमता बढ़ाता है। क्षमता अर्थात् कार्यक्षमता। जैसे शरीर की रोग प्रतिरोधक 'क्षमता' जितनी अधिक होती है शरीर उतना ही सशक्त हस्ट-पुष्ट एवं बलवान होता है। वैसे ही जीव की सहनशक्ति की क्षमता जितनी अधिक होगी उतना अधिक मोक्षमार्ग में आगे बढ़ सकते हैं। दूसरों की भूलों को, दोषों को, आवेगों कोसमभावपूर्वक सहन करने से आत्मबल बढ़ता है, अपूर्व शांति की अनुभूति होती है।

क्षमा जीव की क्षमता को बढ़ाती है। यदि क्षमता नहीं होगी तो जीव भीतर से बहुत कमजोर होगा, वह बाह्य की थोड़ी भी प्रतिकूलता को, किसी के क्रोध को, दोषों को सहन नहीं कर पाएगा। उसके लिए क्षमा रखना अत्यन्त कठिन कार्य होगा। जैसे कमजोर व्यक्ति मौसम बदलते बीमार पड़ जाता है। हमारी क्षमता घटती जाएगी तो हमारे दोष रूपी दुश्मन बढ़ते जाएंगे। ज्ञानी भगवन्त कहते हैं कि आपके चाहे जितने दुश्मन हों उससे आपका मोक्ष अटकता नहीं, किन्तु आपके हृदय में एक जीव के प्रति भी जो दुश्मनाहट होगी तो आपका मोक्ष नहीं होगा यह निश्चित है।

क्षमापना का 'माँ' माधुर्य बढ़ाता है- क्षमा मांगने से संबंधों में माधुर्यता की वृद्धि होती है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है- 'झुकता वही है जिसमें जान है अक्कड़पन तो खास मुर्दे की पहचान है।' जब तक मन में कटुता होगी तब तक व्यक्ति क्षमा मांगने के लायक भी नहीं है। अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, बैरभाव की कलुषता को मन में रखकर जीव चैन की श्वास नहीं ले सकता है, वह अपने ही हाथों से अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारता है। यदि ये मन की कटुताएँ दूर हो जाएं तो व्यक्ति का जीवन प्रेम, आदर, विनय, उपशमभाव आदि की माधुर्यता से शोभने लग जाता है। 'क्षमा' में ताकत है मन को मधुरता से भर देने की एवं भवोभव के बैरभाव को मिटा देने की।

क्षमापना का 'प' पवित्र बनाता है- घर आंगन में कीचड़ हो तो किसे भी रुचता नहीं है। घर में गंदगी रहती है तो चित्त

अप्रसन्न रहता है। जब बाहर की गंदगी का भी इतना प्रभाव रहता है तो अंदर की गंदगी से तो चित्त अस्वस्थ ही रहेगा और अंदर की गंदगी है दोष दृष्टि । दोष दृष्टि से हमारी आत्मा मलिन बनती है। दूसरों के दोषों को देखकर हम अपने चित्त को अपवित्र कर देते हैं। अपवित्र मन क्षमा को धारण नहीं कर सकता है। इसे एक उदाहरण से समझें- घर में आग लगने पर दोनों भाई आपस में लड़ने लगे, तेरी गलती से आग लगी, नहीं आपकी गलती से आग लगी। आसपास के लोगों ने कहा झगड़ा मत करो पहले आग बुझाओ। वो बोले नहीं पहले निर्णय होने दो कि भूल किसकी थी ? आप उन दोनों भाई को क्या कहेंगे ? मूर्ख ही ना ? क्योंकि सब कुछ जलकर राख हो जाए फिर किसकी भूल थी यह तय भी हो जाय तो क्या फायदा ?

ज्ञानीजन कहते हैं जैसे मकान में आग लगी वैसे ही आत्मा रूपी भवन में भी आग लगती है, क्रोध की आग ! यह आग जब लगती है तब मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य होता है आग का शमन करना । न की तूने मुझे गाली दी इसलिये मुझे गुस्सा आया इत्यादि रूप से भूल किसकी है यह निश्चय करना...

अब प्रश्न उठता है कि क्रोधाग्नि को शमन करने का उपाय क्या है ? तो ज्ञानी भगवन्तों ने उसका उपाय बताया है 'स्वयं की भूल का ही निरीक्षण करें। इससे क्रोध शांत हो जाता है। एवं दूसरों की भूल देखने पर क्रोधाग्नि भड़कती है। जैसे- नौकर के हाथ से आपके कपड़ों पर चाय ढुल गई तो आप क्रोध में आग बबुला हो जायेंगे। यदि आपके हाथ से ही आपके कपड़ों पर चाय ढुल गई तो आप स्वयं पर क्रोध करेंगे ? स्वयं की भूल दिखने पर व्यक्ति शांत रहता है। जैसे अग्निशर्मा के मासक्षमण का दो बार पारणा नहीं हो पाया तब तक स्व भूल का दर्शन रहा तब तक मन स्वस्थ, प्रसन्न और निर्मल बना रहा। परन्तु तीसरी बार पारणा विस्मृत हो गया तो अब गुणसेन की भूल दिखाई दी। अन्य की भूल का दर्शन हुआ और क्रोधाग्नि भड़क गई। उस आग में मन की शांति प्रसन्नता, सुंदरता सब कुछ स्वाहा हो गया एवं नियाणा कर लिया की भव-भव में उसको मारने वाला बनुं । इस प्रकार पर दोष दर्शन से उठी क्रोधाग्नि में सब कुछ नष्ट हो गया।

अतः क्षमापना का 'प' हमें शिक्षा देता है कि आप पवित्र रहेंगे, दूसरों के दोषों को नहीं देखेंगे तो आप जगत के सभी जीव को क्षमा कर सकेंगे एवं क्षमा मांग सकेंगे।

क्षमापना का 'ना' 'नाम' (प्रसिद्धि) बढ़ाता है- भूल नहीं होने पर भी सामने से क्षमा मांग लेते हैं तो आंतरिक लाभ तो है ही किन्तु बाह्य प्रसिद्धि, यश-कीर्ति फैलती है।

बहुत उदारता या विशाल हृदय हो तब

ही यह महान कार्य हो सकता है।

महासती सीता का ही जीवन देख लें– रामचंद्रजी ने निरापराधी गर्भवती सीता को घोर जंगल में अकेले छुड़वा दिया। तब भी स्व कर्मों का दोष देखने वाली सीताजी ने रामचन्द्रजी को दोष नहीं दिया। इसीलिए वह पूर्णतः शांत और स्वस्थ थी। (यह तत्काल लाभ स्वदोष दर्शन का) सीताजी अत्यन्त भव्य संदेश रामचंद्रजी को भेजती हैं– स्वामीनाथ ! प्रजाजनों के कहने पर आप मेरा त्याग कर रहे हैं, कोई बात नहीं आपको मुझसे सवाई सीता मिल जाएगी, किन्तु कभी कोई जैन धर्म की निंदा करे इसका त्याग मत करना, क्योंकि उससे उच्च धर्म, श्रेष्ठधर्म आपको नहीं मिलेगा।

कितनी उत्तम बात कही न कोई फरियाद न कोई व्यंग्य न एक भी आक्रोश सभर वचन।

इसी प्रकार मृगावतीजी ने भूल नहीं होने पर भी चन्दनबालाजी से क्षमायाचना करी तो उन्हें केवल ज्ञान की भेंट प्राप्त हुई।

अतः क्षमापना से हमारे अंदर क्रमशः क्षमता बढ़ती है, मधुरता बढ़ती है, पवित्रता बढ़ती है एवं नामना बढ़ती है। हमारे अंदर भी क्षमापना आत्मसात हो इसी भावना के साथ विराम पाती हूँ।

अंतर के अंतर पर अंतर की बात

(आनंदघन)

पद्मप्रभ जिन तुज मुज आंतरूं रे, किम भांजे भगवंत,
कर्मविपाके कारण जोइने रे, को कहे मतिमंत ।
पयइ ठिइ, अणुभाग, प्रदेशथी रे, मूल उत्तर बहु भेद,
घाती, अघाती हो बंधोदय उदीरणा रे, सत्ता कर्म विच्छेद ।
कनकनेपलवत् पयंडि पुरूष तणी रे, जोड़ी अनादि स्वभाव ।
अन्य संजोगी जिहां लगे आतमा रे, संसारी कहेवाय ।
कारण जोगे हो बांधे बंधने रे, कारण मुगति मूकाय,
आश्रव संवर नाम अनुक्रमे रे, हेय उपादेय सुणाय ।
युंजनकरणे हो अंतर तुज पड्यो रे, गुण करणे करी भंग,
ग्रंथ उक्ते करी पंडितजन कह्यो रे, अंतर भंग सुअंग ।
तुझ मुझ अंतर अंतर भांजशे रे, वाजशे मंगल तूर,
जीव सरोवर अतिशय वाधशे रे, आनंदघन रसपूर ।

पर्युषण पर्व

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

मानव को मानवता का दर्शन करवाने हेतु, आत्मस्वरूप का बोध करवाने हेतु एवं प्रत्येक आत्मा परमात्मा है ऐसा जानकर सभी जीवों से प्रेम करने की और उनकी गलतियों को क्षमा/माफ करने की प्रेरणा देने वाला पर्व– **'पर्युषण पर्व'**

पुण्यसम्राट जयंतसेनसूरि गुरुदेव के द्वारा रचयित पर्युषण पर्व के ऊपर सज्झाय में फरमाया है–

समता जल घट में भरो भवि प्राणी रे, ममता मेल उतार प्रभु की वाणी रे, मंत्र में श्रेष्ठ नवकार है भवि प्राणी रे, पर्व में पर्व प्रधान प्रभु की वाणी रे पर्व पर्युषण आवीया भवि प्राणी रे,

करो आराधन सुखकार प्रभु की वाणी रे....

जिस प्रकार मंत्र में श्रेष्ठ मंत्र नमस्कार महामंत्र है। उसी प्रकार सभी पर्वों में पर्युषण पर्व श्रेष्ठ है। वर्ष में एक बार यह महान पर्व आता है। ऐसा महान पर्व हमको मनुष्य भव और जैनकुल में ही मिलता है। चारों गति में अनेक भवों की यात्रा करते–करते बहुत पुण्य एकत्रित किया है तब जाकर जैनकुल और प्रभु का शासन मिला है। दुर्लभ ऐसे प्रभु शासन को प्राप्त करके हमें जितनी हो सके उतनी धर्म आराधना प्रभु आज्ञा अनुसार करनी चाहिए।

पर्युषण पर्व में खास ध्यान रखने योग्य बातें :– ऐसे तो रोज ही ध्यान में रखना चाहिए परन्तु आप रोज नहीं कर सको तो कम से कम इन आठ दिनों को आठरत्नों के समान बहुमूल्य जानकर इन दिनों को खास ध्यान में रखना चाहिए।

(1) प्रतिदिन प्रवचन सुनने जाना चाहिए। बहुत से लोग प्रवचन के समय पूजादि करने चले जाते हैं यह बिलकुल उचित नहीं है, जिनवाणी का अपमान होता है। पूजा से अधिक महत्व जिनवाणी का है। जिनवाणी को बहुत बहुमान भावपूर्वक सुनना चाहिए और अपने आचरण में लाने का प्रयत्न करना चाहिए– **जिनवयणं अभियकुंड समं– वैराग्यशतक ग्रंथ** (अर्थात– जिनवचन अमृत कुंड समान है)

(2) हमारे निमित्त किसी भी जीव की द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा नहीं

करनी चाहिए। त्रसादि जीवों की हिंसा करना द्रव्यहिंसा कहलाती है और अपने कारण किसी भी जीव का दिल दुखाना यह भाव हिंसा कहलाती है। **'अहिंसा परमो धर्म'**

(3) प्रत्येक प्रसंग पर समता धारण करनी चाहिए। जिससे क्रोधादि का, द्वेष आदि का प्रसंग उपस्थित हो ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए। चढ़ावे के लिए, स्वामी वात्सल्य आदि के लिए लोग झगड़ते हैं यह जैनों के लिए शोभा नहीं देता है। संघ के सभी सदस्यों की बात सुनकर शांतिपूर्वक निर्णय लेना चाहिए जिससे किसी के मन में दुर्भावना पैदा हो ऐसा प्रसंग नहीं बने। सबसे श्रेष्ठ है मौन धारण कर लेना चाहिए - **'मौन सर्वार्थ साधनम्'**

(4) चौसठ प्रहारी पौषध अर्थात् 8 दिनों तक पौषध करना चाहिए। पौषध नहीं कर सको तो प्रवचन श्रवण, पूजा, सामायिक, छट्ठ-अट्ठमादि तपस्या, प्रतिक्रमण आदि धार्मिक अनुष्ठान विधिपूर्वक एवं भावपूर्वक करना चाहिए। बड़ी दुःख की बात है कि कितने ही जैन लोग ऐसे होते हैं जो पर्युषण पर्व में अति महत्वपूर्ण और आवश्यक क्रिया प्रतिक्रमण आदि नहीं करते हैं कदाचित करते भी हैं तो मात्र काया से करते हैं। काया की क्रिया भी व्यवस्थित नहीं करते हैं, प्रमाद से करते हैं, खमासमणा भी व्यवस्थित नहीं लगाते हैं, काउस्सग भी ध्यान से नहीं करते हैं और जैसे-तैसे प्रतिक्रमण की क्रिया समाप्त कर लेते हैं परन्तु बिचारे अज्ञानी जीव समझते नहीं है कि जो क्रिया पापों का प्रक्षालन करने के लिए बताई है उसमें और नए कर्म बांधते हैं। धर्म स्थान में किए गए पाप कहाँ जाकर छूटेंगे ?

श्री संबोहरातरि ग्रंथ में बताया है -

आणाई तवो आणाई, संजमो तह य दाणमाणाए।

आणारहिओ धम्मो, पलाल-पुल्लू व पडिहाई ॥

अर्थात् तीर्थंकर की आज्ञापूर्वक किया गया तप, संयम और दानादि सत्य है। जो धर्म जिनाज्ञा के रहित करने में आता है वह तृण के समूह के समान शोभता नहीं है अर्थात उसकी कीमत तृण के समान है।

(5) शक्तिपूर्वक चढ़ावा लेना चाहिए एवं दान देना चाहिए। जितनी शक्ति हो इतने ही चढ़ावे लेना चाहिए। जो समयावधि दी है उसमें पूरा कर लेना चाहिए नहीं तो देवद्रव्य का भयंकर दोष लगता है। किसी को दिखाने के लिए, अपना नाम होगा ऐसे भाव से चढ़ाना नहीं

लेना चाहिए, दान नहीं देना चाहिए।

'भक्खंतो विणदव्वं, अणंतसंसारिओ होइ' – संबोहसत्तारि

(अर्थात् देवद्रव्य का भक्षण करने वाला अनंत संसारी होता है)

(6) पर्युषण पर्व आत्म को सजाने का पर्व है शरीर को सजाने का पर्व नहीं हैं। बहुत सी बहनें लीपिस्टिक लगाकर उपाश्रय, मंदिर एवं धार्मिक अनुष्ठान में जाती हैं, उद्भट वेश धारण करती हैं, खुले बाल रखकर, मेकअप आदि करके आती हैं ऐसी बहनों से मेरा निवेदन है कि कृपया ऐसा ना करें। ऐसा करने से जिनधर्म की बहुत आशातना होती है। मंदिरजी एवं उपाश्रय में मर्यादापूर्वक, सिर ढंककर, मर्यादापूर्ण वस्त्र धारण करके जाना चाहिए।

मेकअप करना छोड़कर, चेकप करो जरूर ।
जयन्तसेन प्रबुद्ध हो, गूंजे मंगल तूर ।। 'श्री जयंतसेनसतसई'

(7) जिनका वर्षों से झगड़ा है, आपसी बोलचाल बंद है उनको परस्पर प्रेमपूर्वक समझौता करके एक-दूसरे से माफी माँग लेना चाहिए। वैरभाव को मिटाने के लिए यह पर्व आता है। किसी के प्रति वैरभाव रखने से वह द्वेषभाव भवोभव तक साथ चलता है और अनंत संसार बढ़ता है। जैसे अग्निशर्मा का गुणसेन से । धर्म का मूल क्षमा है। सभी जीवों को क्षमा करो, क्षमा माँगो और क्षमा रखो यही जीवन का सार है बाकि सब बेकार है। सब कुछ यहीं पड़ा रह जाएगा कुछ साथ में नहीं आएगा। अतः सभी जीवों से मैत्री भाव धारण करो।

'खेती सुहाण मूलं, मूल धम्मरूस उत्तमाखंती' – संबोहसत्तरि

देव-गुरु और धर्म के सान्निध्य में रहकर जिनाज्ञापूर्वक धर्माराधना करके पर्युषण पर्व को उत्साहपूर्वक मनाकर अपना जीवन सार्थक बनाना चाहिए यही शुभभावना....

हे परमात्मा।।।

हमारा जीवन गौतमस्वामी जैसा सरलतामय बनाना...

श्रेणिक जैसे प्रभुभक्तिमय बनाना....

सुलसा जैसा श्रद्धामय बनाना....

पुणिया श्रावक जैसे संतोषमय बनाना....

कुमारपाल जैसा जीवदयामय बनाना...और

प्रभुवीर जैसा क्षमामय बनाना....

क्षमा को अपनाओ दिल से

(मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी 'प्रवासी')

(हरिगीत छंद)

क्षमा शांति है, क्षमा शास्त्र है, क्षमा श्रेय है धीरज है,
क्षमा चित्त है, क्षमा वित्त है, हरती क्षमा कर्म रज है ।
क्षमा है रक्षा-बल भी है, क्षमा स्वामी रक्षक मित्र है,
क्षमा लब्धि-लक्ष्मी-शोभा-माता, श्रेयकारी चरित्र है ॥1॥

क्षमा प्रशंसा-आचार-कीर्ति, यश व सत्य पवित्र है,
तेजस्विता-ओजस्विता, आनंद का ही इत्र है ।
दान और देव-पूजा है, मांगल्य का भंडार है,
क्षमा समा कोई तप नहीं, क्षमा से धर्म स्थिर है ॥2॥

क्षमा उसी से ही मांगो जिनसे, हो चुके दिल टुकड़े,
क्षमा क्या उनसे मांगना, जिनसे हमारे दिल जुड़े ।
मिच्छामि दुक्कडं उसे कहो, जिनसे नहीं हम बोलते,
गलती हमारी माफ करो, अपने हृदय को खोलते ॥3॥

ममकार में जो फूलते, क्षमा भाव को वे भूलते,
पाते नहीं वे फूल को, पाषाण-शूल में झूलते ।
दीपक बिन नहीं होती ज्योति, सीप बिन मोती नहीं,
ममता नहीं तो माँ नहीं, समता बिना क्षमा नहीं ॥4॥

क्षमा को स्वीकार कर, चंदना बनी जग में महान,
बने केवली बाहुबली, जब तज दिया सब अभिमान ।
अंतर से यही कामना, किसी की न हो अवमानना ।
क्षमा को अपनाओ दिल से, यही है 'संयम' भावना ।

क्षमा के लिए

(मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी म.सा.)

सब्र करना और अपराध को क्षमा करना बड़े साहस का कार्य है। क्रोध करने में कोई वीरता नहीं । क्षमा करने में और क्रोध को शांति से सहने में शौर्य है। प्रभु महावीर ने भी कहा है– 'उवसमेण हणे कोहं' क्रोध को शांति से जीतो । क्रोध ही करना है तो क्रोध पर क्रोध करो। क्रोध के प्रति क्रोध न करने वाले व्यक्ति कम होते हैं। क्रोधी व्यक्ति का क्रोध शांत हो जाए, ऐसा सोचने वाले और भी कम होते हैं।

क्रोध नहीं करने से विपदा भी संपदा में बदल जाती है, दुख के स्थान पर सुख की प्राप्ति होती है। क्षमा के लिए आत्मबल– मनोबल– संबल के साथ निर्मल मन भी होना चाहिए। दुर्बल मानव क्षमा नहीं कर सकता।

'मार सके मारे नहीं, ताका नाम मरद' ।

राष्ट्रकवि दिनकर महोदय ने भी अपने 'कुरुक्षेत्र' काव्य में लिखा है–

'क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल है ।
उसको क्या ? जो दन्तहीन विषहीन विनीत सरल है ।।

क्षमा सहज है, क्रोध असहज है। क्षमा अमृत है, क्रोध विष है। क्रोधी आदमी सदा विष से भरा रहता है। विष को अमृत में बदल दे, वही भगवान होता है। महात्मा वे ही बनते हैं– जो सहते हैं, दूसरों की भूलों को क्षमा करते हैं। श्रेष्ठ या उत्तम पुरुष वही है जो क्षमा करता है, क्रोध से रक्तकण विषैले बनते हैं और विषयुक्त रक्तकण प्राणी के प्राण लेने वाले बन जाते हैं ।

क्रोध का परिणाम

लग्न के बाद पति–पत्नी घूमने के लिए दिल्ली गए। वे किसी हॉटल में ठहरे । दूसरे दिन घूमने के लिए जाने के पूर्व जब पत्नी पीली साड़ी पहनने लगी तो पति ने कहा : 'यह कलर मुझे पसंद नहीं है, तू ग्रीन साड़ी पहन ले।' पत्नी ने पीली साड़ी का ही आग्रह रखा। परस्पर दोनों जिद्द करने लगे। पत्नी को लगा, लग्न जीवन के प्रारंभ में ही मुझ पर इतना दबाव कर रहे हैं तो इनके साथ मैं अपनी जिंदगी कैसे निभा सकूँगी ? पति ने सोचा, अभी से यह स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है, यह कैसे चल पायेगा। आखिर उनके गूमने का प्रोग्राम रद्द हो गया। पति अकेले ही बगीचे में जाकर टहलने लगा और इधर आवेश में आई उस पत्नी ने फांसी लगाकर होटल में ही आत्महत्या कर ली। क्रोध का कटु परिणाम ।

जन्ममरण रूप संसार समुद्र को तारनारी

क्षमापना

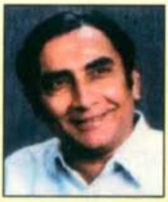

(पद्मश्री डॉ. कुमारपाल देसाई)

एक तरंग के रूप में आगत क्रोध मानव के मन को घेर लेने वाला महासागर बन जाता है। गुस्से के लघुरूप बीज में से वैर का वटवृक्ष खड़ा हो जाता है। चित्त के एक छोटे से छिद्र में से यह प्रवेश करता है और सर्वत्र व्यापक बन जाता है। ऐसा क्रोध मानव को दानव बना देता है। यों क्रोध विभाव है, क्षमा स्वभाव है, क्रोध द्वेष है, क्षमा मैत्री है, क्रोध मारक है, क्षमा तारक है। ऐसी क्षमा के अमृत से आत्मा का अभिषेक करवाने से दुराग्रह, विग्रह, विद्वेष, द्रोह आदि आघात समाप्त हो जाते हैं। जब क्रोध बहुत बड़ी मात्रा में होता है तो वह वैर का रूप ले लेता है और वैर तो भवोंभव तक मानव को क्रोध में डुबाये रखता है।

'वैर में विग्रह है, अवैर में निग्रह है। वैर में विनाश है जबकि अवैर में विकास है। वैर में बाधा है जबकि अवैर में सांधा है। वैर में विषमाता है, अवैर में समता है। वैर में वकिलात है जबकि अवैर में कबुलात है। वैर विकृति है, अवैर संस्कृति है, वैर वमल है जबकि अवैर कमल है और इस वैर का विष उतारने का अमर मंत्र क्षमापना है।'

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ-साथ क्षमा की विशेष आवश्यकता उपस्थित है। भगवान ऋषभदेव के समय में मानव ऋजु तथा जड़ होते थे। ये स्वभाव से ऋजु तथा बुद्धि से जड़ थे। एक शिष्य भिक्षा लेने गया। उसे बत्तीस रसगुल्ले मिले, उसके मन में आया इनमें से आधे तो गुरु को अर्पित करना ही है इसलिये सोलह रसगुल्ले मैं खा लेता हूँ। थोड़ा सा आगे जाने पर उसे यह लगा मैं गुरु को सोलह रसगुल्ले ही बताऊँगा याने इनमें से आधे तो वह मुझे देंगे ही, चलो लाओ ना आठ और खा लेता हूँ। इस तरह शिष्य तर्क के आधार पर आगे बढ़ता गया और बच रहे रसगुल्लों में से आधे खाता रहा। अंत में एक रसगुल्ला बचा जो उसने गुरु को जाकर बताया। गुरु ने शिष्य से पूछा के यह एक ही रसगुल्ला क्यों है ? शेष रसगुल्लों का क्या हुआ ? इस पर शिष्य ने उस एक रसगुल्ले को भी अपने मुँह में रखते हुए कहा कि मैं इस तरह सब खा गया। इस प्रकार शिष्य ऋजु सरल स्वभाव का तो था लेकिन बुद्धि से जड़ था।

द्वितीय तीर्थंकर से तेवीसवें तीर्थंकर तक के जन ऋजु - प्राज्ञ होते थे । ये स्वभाव से ऋजु लेकिन बुद्धिशाली होते थे। इनके पश्चात् चौवीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी और उनके बाद के समय के लोग वक्र-जड़ हैं। आज ऋजुता समाप्त हो गई है। सरलता शुन्य है तथा शठता चतुराई की गणना में आ गई है। चाहे मानव की बुद्धि बहुत ऊँचाई तक आरूढ़ हो रही है परन्तु उसका हृदय छोटा होता जा रहा है। सरलता

रहित क्षमा औपचारिक बन जाती है। अतएव आज के वक्र-जड़ समय में क्षमा की गहराई को अपनाने का आह्वान किया जाना अनिवार्य हो गया है। 'सव्वे जीव खमन्तु में' कहने में हीनता की ग्रंथी आड़े नहीं आनी चाहिये। इस समय तो अभिमान उलट जाना चाहिये। सामने वाला व्यक्ति सभी तरह से अपने जैसा ही है, ऐसा ख्याल प्रबल होना अपेक्षित है।

क्षमा धर्मानुष्ठान का मापदंड है। धर्म का अनुष्ठान कितने अंशों तक आत्मसात होता है, इसका मूल्यांकन क्षमा पर से प्राप्त हो सकता है, क्षमा वृत्ति के विकास पर मिलती है। क्षमा धर्मभावना का बेरोमीटर है। क्षमा नहीं हो तो सभी व्रत, जप, तप, ध्यान, अनुष्ठान सार्थक नहीं हो सकते हैं। क्षमा आत्मा का गुण है, यह क्रोध और कषाय से विकृत होता है।

जिस प्रकार पानी स्वभाव से शीतल होता है लेकिन अग्नि का संयोग प्राप्त होने पर उष्ण हो जाता है उसी प्रकार सामान्य उष्णता जल का स्वभाव नहीं है परन्तु उसका विभाव है। अग्नि का सम्पर्क दूर होते ही यह जल अपनी स्वाभाविकता प्राप्त कर लेता है। पानी में शीतलता प्रकट करने के लिये किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि शीतलता उसका स्वाभाविक गुण है। इसी प्रकार क्षमा आत्मा का स्थायी गुण है। इसकी प्राप्ति के लिये अन्य किसी बाह्य सामग्री की जरूरत नहीं है। पानी में जिस प्रकार उष्णता आती है, इसी प्रकार आत्मा का स्वाभाविक गुण क्षमा, क्रोध, कषाय के उदय से विकृत हो जाता है लेकिन यह विकृति स्वाभाविक नहीं होती। जिस प्रकार अग्नि के सम्पर्क के अभाव में उष्णता शान्त हो जाती है, उसी प्रकार क्रोध, कषाय के अभाव में विकार शान्त हो जाते हैं।

जब जीव स्वयं के निज भाव रूप में परिणमन करता है तब सुखी होता है। क्योंकि सुख उसके आत्म स्वभाव से प्राप्त होता है। स्वयं के स्वभाव में से डिग जाने पर परभाव अथवा विभाव को यह प्राप्त करता है, तब दुखी होता है।

इस प्रकार क्रोध भाव यह आत्मा का स्वभाव नहीं है लेकिन अन्य पदार्थ के संयोग से उत्पन्न हुआ विभाव है और इसी कारण यह आत्मा के लिये अहितकारक है। अतः क्रोध से बड़ी कोई हानिकारक वस्तु नहीं है और क्षमा जैसा कोई गुणकारक बड़ा प्रसंग नहीं है। क्रोध केवल इसी लोक में नहीं, परलोक में भी दुर्गति प्राप्त करवाता है। एतदर्थ क्षमा के लिये कहा है-

उत्तम खम तिल्लोयह सारी, उत्तम खम जम्मोद हितारी।
उत्तम खम रयणत्तय धारी, उत्तम खम दुग्गईदुह हारी ॥

(उत्तम क्षमा तीनों में सार रूप है, जन्म मरण रूप संसार-समुद्र को तारने वाली है, रत्नत्रय प्राप्त करवाने वाली है तथा दुर्गति का हरण करने वाली है।

(हिन्दी में अनुवाद- सुरेन्द्र लोढ़ा)

क्षमा वीरस्य भूषणम्

(डॉ. सोहनलाल संचेती)

मानव जीवन अपरिमित सम्पदाओं का सागर है। इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूपी अमृत भी है और क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी जहर भी है। क्रोध, कषाय रूपी जहर मानव को जहरीले जन्तुओं से भी अधिक मारक बना देता है। ऐसा मनुष्य स्वयं के साथ दूसरों का भी घातक बन जाता है। जिनेश्वर भगवान ने इस प्रकार के जीवन को अमृत बनाने का एक साधन बताया है– 'क्षमा' । क्षमा एक अमृत है। वह जिसके हृदय में होता है, अपने को तथा दूसरों को भी अमृत तुल्य बना देता है। वह इस लोक में व लोकोत्तर में भी मानव को सुखी बनाता है। जैन धर्म में क्षमा का गौरव पूरी गुरुता के साथ उदित हुआ है। जैन धर्म का प्रत्येक कथानक क्षमा – भावना से ओतप्रोत है। कहा भी है–

गुण-गुणे पहाणा हि, धम्मस्स जणणी खमा ।
कोह-जय- उवायम्मि, जिणवरेहि व णिग्गया ।।

गुणों के समूह में निश्चय ही प्रधान और धर्म की जननी क्षमा है। क्षमा को नीतिकारों ने धर्म की माता कहा है। वस्तुतः धर्म की उत्पत्ति क्षमा से होती है। क्योंकि सहिष्णुता होगी, तभी धर्म के भाव होंगे और पुष्ट होंगे। सभी गुण हों, किन्तु क्षमा नहीं हो तो सभी गुण निष्प्रभ हो जाते हैं। क्रोध को जीतने का उपाय क्षमा है। क्योंकि सहन करने की शक्ति ही क्षमा है। इससे गम्भीरता में वृद्धि होती है। दस प्रकार के यति धर्मों में प्रथम धर्म भी क्षमा है।

'क्षमू सहने' – धातु आती है। उससे 'क्षमा' शब्द बना है। जिसका अर्थ है– किसी ने अपने प्रति अभद्र, अशिष्ट व्यवहार किया हो, उसे समभावपूर्वक सहन करना और यदि अपने हृदय में अभद्र व्यवहारकर्त्ता के प्रति द्वेष पैदा हुआ हो तो अपने अन्तःकरण पूर्वक उसको क्षमा कर देना, माफ कर देना। उसके प्रति मन में तनिक भी द्वेष भाव नहीं रखना। उसको अपनी तरफ से अभयदान दे देना, मैत्री भाव रखना, इसी का नाम सच्ची क्षमा है। इसी को क्षमा कहते हैं। कोई विशिष्ट आत्मा ही यौवन में ब्रह्मचर्य का पालन कर सकती है। इसी प्रकार विशिष्ट सामर्थ्यवान, वात्सल्यपूर्ण व सहिष्णु आत्मा के हृदय में ही क्षमा का स्थान होता है। शूरवीर, क्रोधजयी आत्मा ही क्षमाशील होती है। क्षमाश्रमण भगवान् महावीर, राजा उदायन, अर्जुनमाली, गजसुकुमाल, संयतिराजा, सेठ सुदर्शन, चण्डकौशिक, महासती

मृगावती आदि अनेक चरित्रवान क्षमाशील आत्माओं का जीवन चरित्र जैन-साहित्य में स्वर्ण-अक्षरों में शोभायमान है।

अर्जुनमाली एवं चण्डकौशिक ने अपने द्वारा किये गये दुष्कृत्यों के बदले जनमानस द्वारा दिये गये परीषहों को समता भाव से सहन करते हुए एवं क्षमाभाव को अपनाते हुए अपनी आत्मा का कल्याण किया। क्षमामूर्ति महासती मृगावती ने अपनी गुरुणी महासती चन्दनबालाजी द्वारा दिये गये उपालंभ को स्वीकार करते हुए क्षमाभाव से चिन्तन करते हुए केवलज्ञान प्राप्त किया। उदायन राजा ने युद्ध में हारे हुए चण्डप्रद्योत राजा को कैद से मुक्त कर, उसे अपना राज्य लौटाकर क्षमा का आदान-प्रदान किया। श्रीकृष्ण के लघुभ्राता क्षमामूर्ति गज सुकुमाल के सिर पर सोमिल ब्राह्मण द्वारा गीली मिट्टी की पाल बांध कर उस पर धधकते अङ्गारे रखे गये मुनिश्री के हृदय में सोमिल के प्रति तनिक भी क्रोध, आक्रोश भाव नहीं आया।

क्षमा के विभिन्न रूप हो सकते हैं, यथा-

* स्वयं द्वारा किये गये दुष्कृत्यों के लिये, स्वयं की आत्मा की साक्षी से स्वयं की आलोचना कर 'मिच्छामि दुक्कडं देना।'

* स्वयं द्वारा दूसरों के प्रति किये गये दुष्कृत्यों के लिये, दूसरों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से क्षमा मांगना।

* दूसरों के द्वारा अपने प्रति किये गये दुष्कृत्यों के लिये, दूसरों के द्वारा क्षमा मांगने पर क्षमा करना या क्षमा न मांगने पर भी उन्हें क्षमा करना।

समर्थों में जो ज्ञान सम्पन्न होता है वही क्षमाशील बन सकता है। क्षमा के समय सच्चे मन से अपने दुष्कृत व पाप के प्रति ग्लानि व पश्चात्ताप होना चाहिये। साथ ही क्षमा के समय आत्मा में प्रकम्पना होना चाहिये। भावना में मृदुता और पश्चात्ताप की तरंगें तरंगित होनी चाहिए। मन में सरलता व विनम्रता वाला व्यक्ति ही क्षमा प्रदान कर सकता है। ऐसी भावना के अभाव में की गई क्षमायाचना केवल शाब्दिक उच्चारण से अधिक नहीं, उससे आत्मिक शुद्धि होने वाली नहीं है।

क्षोभ, क्रोध को समझकर, उसे त्यागने वाला और क्षमा को धारण करने वाला समर्थ दक्ष पुरुष शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है। क्षमा से शान्ति और प्रसन्नता प्राप्त होती है, जिससे मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है। क्षमा एक अमृत है, यह जिसके पास होता है उसकी कटुता के जहर को धोकर स्वयं अमृत बन जाता है। क्षमा से पाश्चात्त्य सभ्यता के प्रभाव व इच्छाओं की भरमार से होने वाले दुष्परिणामों से मुक्ति मिलती है। क्षमा से जीव इस लोक में

और परलोक में भी सुखी रहता है। क्षमा से स्वयं में, समाज में, राष्ट्र में शान्ति रहती है। क्षमा से शरीर नीरोग रहता है। वर्तमान में हो रही ब्लडप्रेशर, डिप्रेशन, एसिडिटी जैसे रोगों की संभावना कम रहती है। क्षमा से वैर भाव की वर्षों पुरानी ग्रन्थियाँ मिट जाती हैं। क्षमा से तनावों से मुक्ति मिलती है।

आज के युग में मानव अपरिमित इच्छाओं, आकांक्षाओं की होड़ में कषाय युक्त वातावरण में घुट रहा है। उसके अन्तर को प्रेम का, आत्मीयता का, स्नेह का थोड़ा पवन प्राप्त होना भी कठिन हो गया है। मैत्री मंहगी हो गई है। स्नेह की सरिता सूख गई है। विश्वास अन्तिम सांस ले रहा है। दुश्मनी दमक रही है और प्रेम पाताल में पहुँच रहा है। ऐसे दूषित वातावरण का उपचार है स्वयं में क्षमा के भाव। दूसरों को क्षमा करने और दूसरों से क्षमा मांगने का सामर्थ्य। क्षमा, शान्ति आदि आत्मा के गुण हैं। प्रत्येक आत्मा की यही भावना रहती है कि मैं क्षमाशील बनूँ, सुख-शान्ति पूर्वक मंगलमय जीवन यापन करूँ।

पुढवी दग अगणि मारुय, पक्केपक्के सत जोणि लक्खाओ।
वण पत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्खाओ ।।
विगलिंदिएसु दो-दो चउरो- चउरो य नारयसुरेसुं।
तिरिएसु होंति चउरो, चउदस लक्खा उ मणुएसु ।।

(प्रवचम सारोद्धार- गाथा- 968-969)

अर्थात् - पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु-प्रत्येक की सात-सात लाख योनि है। प्रत्येक वनस्पति की दस लाख और अनन्तकाय अर्थात् साधारण वनस्पतिकाय की चौदह लाख योनि है। नारकी और देवता की तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय की चार लाख योनि है। मनुष्य की चौदह लाख योनि है। इस प्रकार कुल चौरासी लाख जीव योनि हैं।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु वेरं मज्झं न केणइ ।।(आवश्यक-सूत्र)

अर्थात् - उपर्युक्त चौरासी लाख योनि के सभी जीवों से मैं क्षमा चाहता हूँ। सभी जीव मुझे क्षमा करें। मेरा सभी प्राणियों के साथ मैत्रीभाव है। किसी के साथ भी मेरा वैर-भाव नहीं है।

जं जं मणेणं बद्धं, जं जं वायाए भासिअ पावं।
जं जं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ।।

अर्थात् – मन, वचन और शरीर से जो मैंने पाप किये हैं, मेरे वे सब पाप मिथ्या हों।

आयरिए उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे य।
जे मे कई कसाया, सव्वे तिविहेणं खामेमि ।।

अर्थात् – आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साधर्मिक कुल और गण के प्रति मैंने जो क्रोधादि कषायपूर्वक व्यवहार किया है, उसके लिये मैं मन, वचन और काया से क्षमा चाहता हूँ।

सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिअ सीसे।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।

अर्थात् – मैं नतमस्तक हो हाथ जोड़कर पूज्य श्रमण संघ से सभी अपराधों के लिये क्षमा चाहता हूँ और उनके अपराध भी मैं क्षमा करता हूँ – **मरणसमाधि प्रकीर्णक गाथा – 335–366 संस्तारक प्रकीर्णक गाथा – 104–105**

सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मं निहिय निअचित्तो।
सव्वे खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ।।

अर्थात् – धर्म में स्थिर बुद्धि होकर मैं सद्भावपूर्वक सब जीवों से अपने अपराधों के लिये क्षमा मांगता हूँ और उनके सब अपराधों को मैं भी सद्भावपूर्वक क्षमा करता हूँ। (संस्तारक प्रकीर्णक – गाथा – 106)

रागेण य दोसेण य, अहवा अकयन्नुणा पडिनिवेसेणं।
जो मे किंचि वि भणिओ, तमहं तिविहेण खामेमि ।।

अर्थात् – राग–द्वेष, अकृतज्ञता अथवा आग्रह वश मैंने जो कुछ भी कहा है, उसके लिये मैं मन, वचन, काया से सभी से क्षमा चाहता हूँ। (मरणसमाधि प्रकीर्णक गाथा–214) गणधरों द्वारा प्ररूपित प्रतिक्रमण आत्मालोचन, आत्मशुद्धि व क्षमायाचना का श्रेष्ठतम साधन है। अनन्त चौबीसी हुई थी, हुई है, और होगी पर प्रतिक्रमण में क्षमा याचना का उद्घोष एक ही था, एक ही है और एक ही रहेगा। इसी प्रतिक्रमण से अनन्त–चौबीसियों ने अपना आत्मालोचन किया था, करते हैं और करेंगे।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र आत्मा के निज गुण हैं। पर मानव सांसारिक जीवन चर्या में लिप्त होने से अपने निज गुणों से परे होकर अठारह पापों का सेवन करता है और निज स्वभाव से पर स्वभाव में चला जाता है उसे निज स्वभाव में लौटाने का बहुमूल्य साधन है प्रतिक्रमण और प्रतिक्रमण में होती है स्वयं द्वारा स्वयं की आलोचना। पश्चाताप–क्षमायाचना।

'मिच्छामि दुक्कडं' से वैर-विरोध और क्रोधादि कषाय रूपी आत्मा के मैल धुलते हैं। जिससे आत्मा एक अलौकिक आनन्द अनुभव करती है। क्षमायाचना की एक विधि है- प्रबुद्ध योग्य महापुरुषों के समक्ष अपने द्वारा मन, वचन, काया से की गई हिंसा के लिये, अपनी आलोचना एवं पश्चाताप करते हुए हृदय से क्षमा याचना करनी चाहिए। पर्युषण पर्व क्षमा का पर्व है। पर्युषण पर्व के मंगल अवसर पर व्यक्ति खमतखामणा करता है। क्षमा का आदान-प्रदान सही रूप से हुआ या नहीं, इसका मानदण्ड दूसरा नहीं व्यक्ति स्वयं ही होता है। इस क्षमापर्व पर व्यक्ति घर-घर जाकर क्षमायाचना करता है। परोक्ष में करता है, पत्र द्वारा करता है। खमतखामणा के व्यवहारिक रूप को अभिव्यक्ति देते हुए आगमों में बताया है- **'खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया, खमंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया।'** हे देवानुप्रिय ! मैं आप से क्षमायाचना करता हूँ। आप मुझे क्षमा करें। क्योंकि आप क्षमा करने में समर्थ हैं। एक बार ग्रन्थिमोचन करने के बाद 'बीयं तं न समायरे' नियमानुसार अपनी ओर से दूसरी बार कभी भ्रन्थिपात का अवसर उपस्थित नहीं होने दें। यही खमतखामणा की पूर्णता है। क्षमावान वह होता है जो अतीत को विस्मृत करता है, वर्तमान की चिन्तनधारा बदलता है और भविष्य में किसी प्रकार की छलना नहीं करने के लिए संकल्पित होता है। पूर्वोक्त समस्त आचार के पालन का उद्देश्य है- आत्मिक निर्मलता प्राप्त करना। जो मानव इस आचार का पालन करता है, उसमें इतनी निर्मलता-सरलता आ जाती है कि वह संसार के प्रत्येक प्राणी पर, कीड़ी और कुंजर पर समभाव धारण करता है। सभी प्राणियों पर मैत्री भाव धारण करता है। सबको अपने मित्र की भांति अपने ही समान देखता है, किसी के साथ वैर भाव नहीं रखता। ज्ञात रूप से हो अथवा अज्ञात रूप से, किसी जीव के विरुद्ध कोई कार्य किया हो, प्रतिकूल वचन का उच्चारण किया हो अथवा किसी का बुरा चिन्तन किया हो तो वह उससे शुद्ध अन्तःकरण से क्षमापना करता है और अपनी ओर से सबको क्षमा का दिव्यदान देता है। तात्पर्य यह है कि जैसे कोई गृहस्थ अपने घर में सांप का रहना सहन नहीं कर सकता और जब तक सांप बाहर नहीं निकल जाता, तब तक उसे शान्ति नहीं मिलती, उसी प्रकार किसी के अपराध करने पर सच्चा श्रावक, जब तक क्षमायाचना करके शुद्धि लाभ नहीं करता तब तक उसे शान्ति नहीं मिलती। एक बार क्षमायाचना करने के पश्चात् वह सतत सावधान रहकर फिर उस भूल को नहीं दोहराता है।

प्रायः देखा जाता है कि अनेक बार हमें ज्ञान नहीं होता, फिर भी हमारी किसी कायिक, वाचिक या मानसिक चेष्टा से अन्य जीवों को कष्ट पहुंच जाता है। इस कष्टदाय का

प्रतीकार शुद्ध अन्तःकरण से क्षमा याचना करना है। इसी कारण श्रावक और साधु सामुदायिक रूप से समस्त जीवों से क्षमाप्रार्थना कर लेते हैं और कभी-कभी ज्ञात अपराधी की अवस्था में विशेष व्यक्तियों से क्षमा - याचना करते हैं। क्षमा याचना यदि सच्चे अन्तःकरण से की जाय तो, आत्मशुद्धि का प्रबल कारण होता है। इसी प्रकार अपने अपराधी को क्षमा प्रदान करना भी महत्त्वपूर्ण है। हृदय में जब निष्कषायता की भावना उत्पन्न होती है, आवेश का प्राबल्य नहीं होता , तब अपराधी को क्षमा देकर अपने हृदय को निःशल्य बनाया जा सकता है। क्षमा-याचना करते हैं। क्षमा याचना यदि सच्चे अन्तःकरण से की जाय तो, आत्मशुद्धि का प्रबल कारण होता है। क्षमा - याचना और क्षमा प्रदान से आत्म-संतोष की अनुभूति होती है, और वैर की परम्परा एवं चिरन्तनता का उच्छेद हो जाता है। अतः हृदय को हल्का बनाने तथा भावी कल्याण के निमित्त क्षमा का आदान-प्रदान अतीव उपयोगी है।

''खमाए-इह-पारत्त-हियं वा सासयं सुहं ।
इइ चिंतिय णिच्चं हि, खंतिं सेविज्ज पंडिए ।।''

अर्थात् – क्षमा से ऐहिक, पारलौकिक अथवा शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है। यह चिन्तन करके पण्डित (सावद्य-योगों का त्यागी) नित्य ही क्षान्ति-क्षमा का सेवन करे ।

''दोसेसु खोहो अणुसोयमेव, तेसुं खमा जा पडिसोय वित्ति ।
संतिं लहे ताइ पसन्नयं च, तम्हा विऊ खिप्पमुवेइ मोक्खं ।।

अर्थात् – दोषों पर क्षोभ (होना) (अन्य संसारी जीवों के समान) प्रवाह में बहना ही है। उन पर जो क्षमा (है वह) (अपनी इच्छा के) प्रवाह से विपरीत चलने की वृत्ति है। उसे (जीव) शान्ति और प्रसन्नता को प्राप्त करे तो विज्ञ- क्षोभ क्रोध को समझकर उसे त्यागने वाला और क्षमा को धारन करने वाला समर्थ पुरुष जल्दी ही मोक्ष प्राप्त करता है।

''अवयर हिययम्मि खमे ! जत्थ हवे ते खणं भवा तारिणि ।
कत्थ थलं अत्थि ण वा, जाणिय वित्थर सुसव्वंगं ।।

अर्थात् – क्षमा को देवी मानकर प्रार्थना की गई है- हे भवतारिणि ! क्षमे ! जहाँ भी तुम्हारा क्षण हो, वहाँ तुम हृदय में अवतरो, प्रकट होओ। कहाँ तुम्हारा स्थान है अथवा नहीं, यह जानकर (मुझमें) अपने उत्तम सर्वाङ्ग को विस्तृत करो ।

''हरिऊण सन्निमाणं, ताए काऊण पायणं अज्जे ।
हिट्ठा हे मनवासिणि ! इस्सरि ! दरिसणं देज्जा ।।

अर्थात् – हे आर्ये ! शक्ति का मान– अपहरण करके और उस (शक्ति का) पाचन करके, हे मन में निवास करने वाली ईश्वरी ! हर्षित होकर मुझे दर्शन दो ।

''पाउब्भूय सुचित्ते सव्वंगे आवसेज्ज देवि खमे !
खणमवि मा छड्डिज्जा, सीईभूयं करेज्ज ममं ।।

अर्थात् – हे देवी ! हे क्षमे (मेरे) शुभ चित्त में प्रकट होकर (मेरे) समस्त अङ्गों में निवास करो । (हे अम्बे !) क्षणभर के लिये भी (मेरा) परित्याग मत करो । (मैं संसार के ताप से परितप्त होकर ईर्ष्या – दोषों से अशान्त हूँ, (अतः) मुझे शीतीभूत = परम शान्त करो । (क्षमा रूपी चन्दन के विलेपन से अन्तरंग भावों में समस्त ताप दूर होकर शान्ति रूप शीतलता व्याप्त हो जाती है।

अमेरिका के नागिरक स्टॉन सोबेल के अनुसार किसी व्यक्ति ने आपके प्रति दुर्भावना भाई हो या हानि पहुंचाई हो या आहत किया हो तो उसके प्रति अपने दुर्विचारों को दूर करने के लिये निम्न सुझाव दिया है। आप एक कागज व कलम लीजिए और जिन व्यक्तियों ने जाने–अनजाने में आपके साथ दुर्व्यवहार किया है उनके नाम उस कागज पर लिख दीजिये और आप चिन्तन कीजिये या उच्चारण करिये कि मैं उनको क्षमा प्रदान करता हूँ और हृदय से प्रेम करता हूँ तथा उन व्यक्तियों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट कीजिए कि जिन्होंने आपको क्षमा याचना करने का ऐसा शुभाअवसर प्रदान किया।

इसी प्रकार आपके द्वारा भी किसी अन्य के प्रति जाने–अनजाने में किसी प्रकार ठेस आदि पहुंचाई गई हो, रोष आदि प्रगट किया गया हो तो उनके नाम लिखकर आप उनसे क्षमा याचना करें ।

एक अन्य विदेशी क्षमायाचना की पद्धति के अनुसार अपने अर्द्ध चैतन्य मन को उपयोग में लावें। अर्द्धचैतन्य मन को विचार शून्य शान्त व शिथिल अनुभव करें। ईश्वर स्मरण करते हुए आप एवं आपके परिवार के प्रति ईश्वरीय कृपा का चिन्तन करें ।

इस प्रकार लिखकर धीमे शब्दों में उच्चारण कीजिए।

मैं श्री/श्रीमती..... के दुष्कार्य के लिए जो मैंने बुरा माना उसे अपने अन्तर्मन से निष्काषित करता हूँ । मैं उनको उनके अनुचित कार्य के लिये क्षमा प्रदान करता हूँ। मैं इस कार्य से स्वतंत्र हूँ। वे भी इससे स्वतंत्र हैं। इस प्रकार मैं सभी को मेरे प्रति किये गये दुष्ककार्य के लिये क्षमा प्रदान करता हूँ । सभी आरोग्यवान प्रसन्नचित रहें उनके साथ मेरी शुभ भावना, शुभकामना है।

अतिथि रचना

संवत्सरी का गूंजन-अहंकार का विसर्जन संवत्सरी का सन्देश-क्षमापना

(पू.आ.श्री जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.)

क्षमा की पूर्ण प्रतिष्ठा हमारे अन्तस् के तमस् को दूर कर देती है, आत्म प्रकाश फैला देती है। आज का दिन वर्ष में एक बार आने के कारण संवत्सरी या सांवत्सरिक के नाम से प्रचलित है।

क्षमा शब्द का अर्थ है- जाने-अनजाने यदि मन, वचन काया से किसी प्रकार की कोई त्रुटि हुई हो तो उसके विषय में त्रिकरण से माफी मांगना, क्षमापना का संदेश देता हुआ यह पर्व 'अहंकार विसर्जन' को संबल देता है। क्षमा कहने से या क्षमापर्व मनाने से हमारा जीवन क्षमाशील नहीं बन सकता। क्षमा वह कर सकता है जो शक्ति रहते हुए भी अहंकार के आवरण से आवृत्त न हो। क्षमा, वह कर सकता है जो अहिंसा को आत्मसात कर चुका हो, अहिंसा को अपने जीवन एवं दर्शन का व्यवहार बना चुका हो। क्षमा वीरों का भूषण है, कायरों का नहीं, कहा भी है- '**क्षमा वीरस्य भूषणम्**'

भगवान श्री महावीर स्वामी के जीवन - चरित्र में सर्वत्र क्षमाशीलता के दृश्य उपस्थित हैं। धर्म, तप, संयम आदि आराधना के लिये प्राथमिक आवश्यकता है- अहंकार विसर्जन। तभी साधना सफल हो सकती है। अहंकार विसर्जन के ही दूसरे नाम हैं- नम्रता और विनय। केवल अध्यात्म जगत में ही नहीं अपितु व्यवहारिक जगत में भी यह अनिवार्य तत्त्व है। वास्तव में अहंकार वह विनाशक तत्व है, जिसके मानवीय ज्ञान के उत्कृष्ट तत्व निर्मूल हो जाते हैं। अहंकार अंधकार है, विनय प्रकाश। अहंकार क्रोध को जन्म देता है। क्रोध की कराल अग्नि, सर्वस्व स्वाहा कर देती है। क्रोध आवेश अज्ञानता, छिछोरेपन तथा असंतुलित मन एवं मस्तिष्क का परिचायक है।

क्रोध मानवीय जीवन में शैतान का प्रतीक है। शान्ति, क्षमा, प्रेम, मैत्री आदि दैवी प्रतीक है।

क्रोध तो इन्सान को शैतान बना देता है,
अच्छे-अच्छों को हैवान बना देता है ।
हमने देखे हैं, जमाने में बोलते पत्थर,

मनुष्य गलतियों का पुतला है । बहुत सावधानी रखने पर भी कोई भूल या त्रुटि हो ही जाती है। त्रुटि या पापकृत्य होने पर हमें अपनी अज्ञानता या मोह आदि का अनुशीलन करना चाहिये, तथा भूल का पश्चाताप, प्रायश्चित करना चाहिये ।

प्रायश्चित, हमारे दुष्कर्मों के दृढ़ बंधनों को ढीला कर देता है। इतना ही नहीं, वह आत्मा को पापों के जंजाल से मुक्त भी करा सकता है। जैन संस्कृति में प्रतिक्रमण-विधान ज्ञात-अज्ञात दुष्कृत्य का प्रायश्चित ही है। सनातन धर्म में संध्या प्रायश्चित का निर्देशन है। आज का सांवत्सरिक प्रतिक्रमण विशिष्ट रूप में आत्मनिरीक्षण करने का संदेश देता है।

भगवान श्री महावीर का कथन है कि जीवन में विवेक की कमी होने पर ही दुर्घटना घटती है, अपराध होता है, त्रुटि होती है। उन्होंने पाप के बंधन से रहित होने के लिये हमें संदेश दिया है-

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयं आसे, जयं सये ।
जयं भुजन्तो भासंतो, पापकम्मं न बन्धइ ।।

अर्थात् हमारी सारी क्रियाएँ विवेकपूर्वक होनी चाहिये। प्रमाद का जीवन में नामोनिशान भी नहीं होना चाहिये। प्रमाद अविवेक की निशानी है। प्रमाद का परित्याग करने वाला सतत् साधनाशील व्यक्ति ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। प्रमाद, कषायों का उद्गम स्थल है। कषाय हमें जीवन लक्ष्य से भटका देते है क्योंकि प्रमाद की अवस्था में विवेक - जागृति नहीं रहती। विवेक-जागृति के अभाव में अनेक भूलें होती हैं, अपराध होते हैं। उनका मूल्यांकन करने हेतु आज का क्षमापना पर्व हमें सचेत करता है।

क्षमापना संवत्सरी का महनीय संदेश हमें सचेत करता हुआ यह भी स्पष्ट करता है कि संसार के मुख्य शत्रु हैं, राग-द्वेष इनके कारण ही वैमनस्य की भीषण ज्वालायें धधकती हैं। क्रोध का कालुष्य कटुता फैलाता है, वाणी के सौंदर्य को नष्ट कर देता है। वाणी का सौंदर्य सत्य, मधुर एवं प्रिय बोलने में है। वाणी मनुष्य के चरित्र एवं संस्कारों को उजागर करती है। संयमित भाषा का सार्थक प्रयोग भी एक प्रकार का तप है।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय ।।

मन में प्राणीमात्र के प्रति प्रेम, वाणी में सत्य का संचार, क्रिया में उदात्त एवं उदार भावनाएँ यदि समाहित हो जायें तो जीवन ज्योतिर्मय हो जाता है, सुख-चैन की बंसी बजने लगती है, प्रीति का मधुरिम संगीत गूंजने लगता है, सद्गुणों की सौरभ महकने लगती है और तब जीवन सार्थक हो जाता है।

धर्मप्रेमियों ! सदा ध्यान रखना कि अहंकार की आग से समस्त सत्क्रियायें झुलस जाती हैं। नम्रता, सौहार्द, क्षमाशीलता ही सफलता का मूलमंत्र है। मूलमंत्र पर ध्यान दो। अपने जीवन के प्रत्येक व्यवहार में इसे क्रियान्वित करो। त्रुटि होने पर तुरन्त क्षमायाचना करो। किसी दूसरे की गलती को भी शीघ्र क्षमा करो। कटुता की गांठ मत बांधो।

हम क्षमापर्व संवत्सरी के पावन अवसर पर आत्मशुद्धि के लिये ज्ञात, अज्ञात त्रुटियों की समस्त जीवलोक से क्षमायाचना करते हैं तथा कामना करते हैं कि सकल जीवलोक हमें क्षमा प्रदान करेगा। हम संकल्प लेते हैं कि अपने जीवन में अहिंसा की पूर्ण प्रतिष्ठा, विवेकजागृति तथा विश्वमैत्री के लिये सतत् प्रयत्नशील रहेंगे। आज का अन्तरनाद है-

खामेमि सव्व जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ।।

* क्षमादान देने के बाद अपराधी का अपराध कभी याद भी नहीं आना चाहिए। और वह अपराधी (चाहे वह कभी आपके खून का प्यासा हो) दुःखी दिखाई दे तो उसका दुःख दूर करने की तीव्र अभिलाषा जब प्रगट हो तब मिच्छामि दुक्कडं सही गिना जाएगा।
* सर्वप्रथम शान्तचित होकर सिर्फ इतना ही विचार करें कि- क्रोध करने जैसा हैया नहि ? यदि नहीं, तो मन को अच्छी तरह समझा दें कि - किसी भी परिस्थिति में मुझे क्रोध नहीं करना है।
* क्रोधी-विरोधी-अपराधीयों पर क्रोध करने से पहले बस इतना ही समझ लिया जाए कि छोटे बड़े सभी अपराधियों से खतरनाक क्रोध स्वयं एक महा अपराध है, तो मिच्छामि दुक्कडं करने की नौबत बहुत ही कम आए जीवन में।

आध्यात्मिक ऊर्जा की आराधना का पर्व

(आचार्य श्री महाश्रमणजी म.सा.)

जैन धर्म आत्मवादी धर्म है। आत्मा उसका केन्द्रीय तत्व है। जैन आचार और विचार की प्रायः सभी अवधारणाएँ उसी की परिधि में अवस्थित हैं। जैन दर्शन में प्रत्येक आत्मा का स्वतंत्र और त्रैकालिक अस्तित्व समस्त है।

वह सदा थी, सदा है और सदा रहेगी। वह अपने मूल स्वरूप में शुद्ध, अमूर्त, ज्योतिर्मय और निरामय है। वह अपने उत्तर अथवा आरोपित स्वरूप में अशुद्ध, मूर्त, अंधकारमय और सामय (सरोग) भी है। वह सुख-दुख का अनुभव करती है। वह स्वयं उसकी विधाता है। वह नाना योनियों में परिसंचरण करती हुई कभी मनुष्य योनि में भी पहुंच जाती है। मनुष्य जन्म रूपी वृक्ष के छह फल बताए गए हैं-

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्तिः, सत्वानुकंपा शुभपात्रदानम् ।
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमुनि ।।

1. जिनेन्द्रपूजा- वीतराग तीर्थंकरों के प्रति भक्ति । 2. गुरु-उपासना-धर्मगुरुओं की उपासना- सेवा। 3. सत्त्वानुकंपा-प्राणियों के प्रति दया भाव । 4. शुभपात्रदान-सुपात्र दान । 5. गुणानुराग-गुणों के प्रति अनुराग, आकर्षण । 6. आगमश्रुति-आगमों, धर्मशास्त्रों का श्रवण। इन छह बातों का आचरण जीवन में होना चाहिए।

व्यक्ति सुखेच्छु होता है। सुख प्राप्ति के लिए वह कृतसमर्पण बना रहता है। वह सुख प्राप्ति के लिए संकल्प और प्रयास करता है, पर कई बार दुख के आवर्त में भी फंस जाता है। स्थाई और निरपेक्ष सुख की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग अध्यात्म है। उसकी आराधना सदैव की जानी चाहिए, परन्तु उसकी सघन साधना सबके लिए सदा संभव नहीं। इसलिए धर्माराधना के लिए कुछ दिनों को विशेष रूप से निर्धारित किया गया है। जैन श्वेताम्बर परम्परा में 'पर्युषण पर्व' और दिगम्बर परम्परा में 'दशलक्षण-पर्व' विशेष धर्माराधना का समय है।

इसमें भी सर्वाधिक महत्व और मूर्धन्य 'संवत्सरी महापर्व' को प्राप्त है।

'संवत्सरी की तैयारी स्वरूप पूर्ववर्ती सात दिनों में भी विशेष रूप से प्रवचन व

धर्माराधना का कार्यक्रम चलता है।

संवत्सरी मैत्री पर्व के रूप में भी प्रख्यात है। इस दिन वैमनस्य को सौमनस्य में हृदय से रूपांतरित किया जाए तो इस पर्व को मनाने की अधिक सार्थकता है। सदा सौमनस्य को पुष्ट बनाए रखने का संकल्प इस दिन किया जाता है। पर्युषण- संवत्सरी की आराधना से उस आध्यात्मिक ऊर्जा को प्राप्त किया जाए जिसके आधार पर वर्ष भर की सारी गतिविधियां 'अध्यात्म-प्रभावित' रह सकें, मन में क्षमाशीलता का भाव विकसित रूप में रह सके।

दशलक्षण एवं पर्युषण पर्व धर्म की प्रकृष्ट आराधना अथवा सघन आध्यात्मिक पोषण-प्राप्ति का महान अवसर होता है। यह समय प्रमुख रूप से धर्माराधना के लिए ही निर्धारित रहना चाहिए।

पर्युषण पर्व मैत्री का संदेश लेकर भी आता है। वर्ष भर न खुलने वाली गांठें भी इस पवित्र अवसर पर खुल जानी चाहिए। संवत्सरी के रोज होने वाले उपवास की ऊर्जा में वर्ष भर की वैमनस्य भस्म कर डालना चाहिए। कितना अच्छा हो कि पर्युषण पर्व से आध्यात्मिक संबल पाकर व्यक्ति पूरे वर्ष भर ऊर्जा प्राप्त करता रहे और अध्यात्म - प्रभावित आचरण उसके जीवन में दिखते रहें। इसके लिए चार भावनाओं से चित्त को भावित करना अपेक्षित है। वे चार भावनाएँ हैं-

मैत्री, प्रमोद, कारुण्य माध्यस्थ।

मैत्री- दूसरों के हित का चिंतन करना, सबके साथ मैत्री का भाव रखना।

प्रमोद- किसी भी रूप में ईर्ष्या न रखना, दूसरों की उन्नति को देखकर जलन न करना/ प्रसन्न होना।

कारुण्य- संक्लिष्ट अथवा दूषित जीवों के प्रति करुणा का भाव रखना, उनके मंगल की कामना करना।

माध्यस्थ- प्रतिकूल आचरण करने वालों के प्रति भी माध्यस्थता- तटस्थता का भाव रखना। उनके प्रति भी क्रोध या द्वेष न करना।

इन चार भावनाओं का व्यवहार में प्रयोग करने वाला व्यक्ति धार्मिक कहलाने का अधिकारी है, ऐसा मेरा मंतव्य है।

आत्मा की अध्यात्मिक भक्ति कर जीवन में उच्चता और गंभीरता प्राप्त करने का लक्ष्य बने। कहा भी गया है-

उच्चत्वमपरा नाद्रौ नेदं सिन्धौ गभीरता।
अलंगनीयताहेतो र्द्वयमेतद् मनस्विनि।

पर्वत में ऊंचाई होती है, पर गहराई नहीं होती, समुद्र में गहराई होती है, पर ऊँचाई नहीं होती, लेकिन मनस्वी व्यक्ति में ऊँचाई और गहराई दोनों होती हैं।

इस महापर्व से ज्ञान की गहराई और आचरण की ऊंचाई को अर्जित करने की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

विभाव से स्वभाव की साधना है पर्युषण पर्व

(आचार्य श्री महाश्रमणजी म.सा.)

वर्ष भर का आध्यात्मिक लेखा-जोखा मिलाने का अवसर है पर्युषण पर्व। भगवान महावीर आदि सभी तीर्थंकरों ने आत्म शुद्धि हेतु इस पर्व को मनाया है। अनंत यात्रा में हमें असीम पुण्योदय से मानव का जन्म मिला, इस जीवन का लक्ष्य है कर्म निर्जरा अर्थात पूर्व उदय कर्म को समभाव से क्षय कर नवीन कर्म का बन्धन न हो। मिथ्यात्व, प्रमाद के वशीभूत होकर जीव आत्मा देह के साथ घटने वाली घटना के प्रति क्रिया-प्रतिक्रिया कर कर्म का बन्धन कर लेता है और नवीन कर्मों का बन्धन कर लेता है।

ऐसे समय में एक आत्मार्थी जागरूक साधक उसी क्षण 'तस्समिच्छामि दुक्कड्म' देकर उस कर्म से छुटकारा पा लेता है फिर भी प्रमाद व कषाय के वशीभूत अनेक घटनाओं का वह प्रायश्चित नहीं कर पाता और कर्मों की श्रृंखला निरंतर बढ़ती रहती है। ऐसे समय में आत्म शुद्धि हेतु भगवान ने साधक को सर्व प्रथम आत्मबोध पाकर आत्मरमण करने की प्रेरणा प्रदान की तथा आत्मा की साक्षी में बेहोशी में हुए कर्मों की प्रायश्चित हेतु आलोचना, प्रतिक्रमण कर शुद्धि हेतु विशेष पर्युषण पर्व मनाया जिसमें प्रथम सात दिन आत्म-अवलोकन व विशेष आराधना प्रत्येक आत्मार्थी को करनी होती है तथा संवत्सर अर्थात वर्ष होता है। संवत्सरी वर्ष में एक दिन प्रमाद में हुए इस वर्ष के पूर्व जन्मों के सभी कर्मों को क्षय करने हेतु क्षमापना पर्व मनाया। क्षमापना का अर्थ है 'आत्मवत सर्व भूतेषु', सभी आत्मा मेरे समान है।

अज्ञानवश शरीर के निमित्त हुए कर्मों से किसी अन्य के विभाव में जाने का अगर मैं निमित्त बन गया हूं तो आज स्वभाव में स्थित होकर विभाव दशा की आलोचना करते हुए प्रतिक्रमण के द्वारा पुनः अपने स्वभाव में स्थित होता हूँ। इस प्रकार जन्मों-जन्मों के कर्मों को क्षय करने का अवसर है पर्युषण पर्व एवं संवत्सरी आराधना।

आत्म ध्यान शिविरों में बार-बार आलोचना प्रतिक्रमण से शुद्ध होकर वर्ष भर में हमारे निमित्त से हुए किसी व्यवहार से चतुर्विध संघ के किसी भी सदस्य की अवमानना हो तो अन्तःकरण की साक्षी से क्षमा याचना।

क्रोध एवं उसके शमन के उपाय

(साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

संसार एक अतिविशाल पथ है आत्मा इस पथ का पथिक है अनादिकाल से इस पथ पर गति कर रहा है। गतिशीलता आत्मा का या चेतना का स्वभाव है, जो सतत् गति करता है, भ्रमण करता है। गति करना स्वभाव हो सकता है, लक्ष्य नहीं । लक्ष्य है– प्रगति। मात्र चलना कोई उद्देश्य नहीं है, मंजिल प्राप्त करने के लिए चलना है। इसलिए जीवन में गति का नहीं प्रगति का महत्व है। प्रगति करना ही साधक का लक्ष्य है। जीवन का निर्वाह करना गति है। गति अर्थात परिवर्तन गमन चैंज । आप चाहो या न चाहो पर हर क्षण आपका परिवर्तन हो रहा है क्योंकि वस्तु परिणामी है। जीवन निर्वाह जीवन की गति का द्योतक है, वह हमारा लक्ष्य नहीं हो सकता। हमारा लक्ष्य तो प्रगति करना है। 'प्रगति' अर्थात प्रकृष्ट गति। चारों गति से मुक्त होने की गति वह प्रगति है।

किन्तु प्रगति एवं उन्नति की जितनी दिशाएँ हैं, जितने मार्ग हैं, अवरोध भी उतने ही हैं। संसार में सद्गुणों को जितने सुगन्धित सुमन है, दुर्गुणो की दुर्गंध देने वाले कूड़े के ढेर भी उनसे कम नहीं है। देवताओं से अधिक राक्षसों की संख्या है। पुण्य कमाने के मार्ग तो हैं, पाप के 18 बताये गये है। सुमन सौ है तो कांटे हजारों मिलेंगे इसलिये कदम-कदम पर अवरोधों से विघ्न बाधाओं से बचकर लड़कर उनको हटाते हुए जीवन की उन्नति के पथ पर चढ़ते रहना।

परमात्मा महावीर के गहन चिन्तन के अनुसार अहंकार ज्ञान का, विनय का अवरोध है, क्रोध प्रेम एवं स्नेह का अवरोध है, लोभ संतोष और सहित शांति का वहाँ कपट मित्रता एवं विश्वास का अवरोध है। कषाय– चतुष्क है जो सद्गुणों का नाश है एवं आत्मा का अधोगति का कारण है। कषाय चतुष्क में क्रोध का प्रथम स्थान है, सर्वप्रथम क्रोध अर्थात् क्या ? यह जानना आवश्यक है।

क्रोध किसे कहते हैं ?

1. क्रोध अर्थात् स्वभाव का विभाव में परिवर्तन होना।
2. क्रोध अर्थात् प्रीति का नाश।
3. क्रोध अर्थात् क्रुरता, निर्दयता ! 'क्रोध के आवेश में आकर क्रोधी असत्य बोलता है ऐसा आचारांग में कहा है।

4. क्रोध अर्थात् अच्छे विचारों का अभाव।
5. क्रोध मोहनीय के उदय से स्वपर पीड़क जीव के परिणाम विशेष को 'क्रोध' कहते हैं अथवा मोहनीय कर्म ही 'क्रोध' कषाय रूप है।
6. किसी भी प्रकार की प्रतिकूलता में आवेश आना गरम हो जाना अशांत बन जाना आदि 'क्रोध' ही है।
7. विचार किये बिना जो आवेश उत्पन्न होता है उसका नाम 'क्रोध'।
8. स्वयं का और दूसरे के दुःख, पीड़ा और विनाश का कारण वही 'क्रोध'। क्रोध ऐसा विष है जो संसार का सर्वनाश कर सकता है, अनेकानेक प्राणियों को मौत के घाट उतार सकता है। भयंकर संहारक इस क्रोध को ही अनन्त ज्ञानियों ने हलाहल विष कहा है। क्रोध का जहर आत्मा पर धर्म का रंग चढ़ने नहीं देता।

क्रोध तूफान है। जब तूफान आता है तब सर्वप्रथम घर में दीपक बुझता है। यह क्रोध भी विवेक रूपी दीपक को गुल कर देता है। जिससे मानव सत्य-असत्य, हित-अहित को समझ ही नहीं पाता। जैसे अग्नि में घी डालने पर वह अधिक भभकता है, वैसे ही क्रोध से क्रोध भभकता है। जैसे दो बीस की टक्कर से आग पैदा होती है वैसे ही क्रोध से क्रोध बढ़ता है। साढ़े नौ घण्टे के शारीरिक श्रम से जितनी शक्ति नहीं घटती उतनी शक्ति सिर्फ पन्द्रह मिनिट के क्रोध से क्षीण हा जाती है अतः क्रोध अनर्थों की जड़ है।

सर्वज्ञ भगवन्तों ने क्रोध को धुत्त की उपमा से भी उपनित किया है। क्रोध से आत्मगुण विनष्ट हो जाते है। अतः क्रोध को हटाने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए। आजकल के लोगों का सोचना है कि क्रोध करने से ही कार्य शीघ्र होता है किन्तु यह उनकी भ्रमणा है। क्रोध करने से कार्य शीघ्र तो नहीं होता किन्तु बिगड़ता अवश्य है। ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता कि क्रोध करने से काम सुधरा हो किन्तु क्रोध करने से जो हानियाँ हुई है उससे तो इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। क्रोध से जो काम बिगड़े है उसके लाखों उदाहरण मिल जाएंगे।

साधु ने क्रोध किया तो चंडकौशिक नाग बने। अग्नि शर्मा ने क्रोध में नियाणा करके अपने अनंत भव बढ़ालिये। 500 शिष्यों के गुरु स्कंदाचार्य ने अपने सभी शिष्यों को मुक्ति की भेट अर्पण की एवं स्वयं क्रोध के कारण ही नरभव में पराभव को प्राप्त किया। आज पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, मित्र-मित्र क्रोध के कारण एक-दूसरे के बैरी हो गए हैं। प्रेम का अंश भी नहीं है क्योंकि क्रोध प्रीति का नाश करता है।

'क्रोध की शुरुआत मूर्खता से होती है और अंत पश्चाताप से'।

क्रोध ही मनुष्यों का प्रबल एवं प्रथम शत्रु है। शत्रु जितना बिगाड़ नहीं करता, क्रोध उसे कई गुना अधिक हानिकारक है।

क्रोध करके व्यक्ति यदि अपना चेहरा आयने में देखले तो स्वयं से नफरत करने लग जाए इस तरह विकृत हो जाता है। आँखें लाल, भोएं चढ़ी हुई, धड़कन बड़ी हुई, पसीने से युक्त शरीर आदि। इस प्रकार तत्क्षण कटुपरिणामों को भोगते हुए भी व्यक्ति क्रोध करना नहीं छोड़ता है। क्रोध करने से खून भी जहर में परिवर्तित हो जाता है। तीव्र आवेश में कोई भी यदि शिशु को दूध पिलाए तो शिशु की मृत्यु हो जाती है। अतः क्रोध सर्वथा वर्ज्य है।

क्रोध क्यों आता है ? इसके निम्निलिखित कारण है।

1. क्रोध अज्ञान से जन्मता है। क्रोध अपना स्वभाव नहीं विभाव है। ऐसा ज्ञान नहीं होने से क्रोध आता है स्वभाव तो क्षमा में है व्यक्ति क्षमा में स्वभाव में हमेशा नहीं रह सकता है। 'बलवान को जल्दी क्रोध नही आता है।'
2. क्रोध के कटु परिणाम दिखते नहीं।
3. अपनी जागृति कम है।
4. क्रोध मान – सम्मान नहीं मिलने पर उत्पन्न होता है।
5. क्रोध विवेक की समक्षशक्ति के अभाव में जन्मता है।
6. क्रोध लोभ और स्वार्थ से पैदा होता है।
7. किसी के द्वारा भूल बताने पर क्रोध उत्पन्न होता है।
8. स्वयं को अन्य की अपेक्षा से होशियार मनाने से क्रोध जन्मता है।
9. क्रोध स्वयं के प्रति विरोध करने वाले पर भभकता है।
10. किसी की भूल देखने पर क्रोध उत्पन्न होता है।
11. किसी भी प्रकार की कमी का अनुभव होने पर या अपनी इच्छा पूर्ण नहीं होने पर प्रतिकूल वातावरण होने पर क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोध को दूर करने के उपाय– दृढ़ संकल्प करना संयोग चाहे जो हो मुझे क्रोध नहीं करना।

ज्ञानप्राप्ति– सर्वप्रथम यह ज्ञान आवश्यक है कि क्रोध कहीं से आता नहीं है, कोई दिलाता नहीं बल्कि अपने अंदर ही रहा हमारा दोष है, मलिन परिणाम है। हमारा स्वभाव तो क्षमा का ही है किन्तु हम स्वयं विभाव में जाते हैं, क्रोध करके दूसरों के भूल की सजा स्वयं को देते है। अतः अपने अंदर रहे हुवे दोषों को समाप्त करना है फिर कैसा भी निमित्त मिले क्रोध नहीं आएगा।

जैसे महापुरुष के ऊपर भयंकर उपसर्ग आए प्रतिकूल निमित्त मिले फिर भी क्रोध नहीं किया क्षमा को धारण करके रखा।

क्रोध के कटु परिणाम ध्यान में रहे तो भी क्रोध नहीं आए। क्रोध करने से संबंध बिगड़ जाते हैं, परिवार टूट जाते हैं, स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है, तनाव बना रहता है, आपसी प्रेम समाप्त हो जाता है, अन्य कार्य में भी मन नहीं लगता है इतना सब कुछ होने पर व्यक्ति छोटी-छोटी सी बातों में आवेश में आ जाता है क्योंकि उसकी 'जागृति' नहीं रहती है क्रोध के कटु परिणामों को भूल जाता है। बाह्य प्रत्येक प्रवृत्ति में जागृति रहती है । खाना बनाना, गाड़ी चलाना, ऑफिस वर्क करना आदि किन्तु आन्तरिक जागृति के अभाव में सब कुछ करते हुए भी व्यक्ति दुःखी रहता है। अतः प्रत्येक दिन क्रोध के कटुपरिणामों का विचार करना चाहिए।

मान-सम्मान नहीं मिलने पर क्रोध आता है परन्तु मान -सम्मान की इच्छा ही न रखे तो कोई मान-सम्मान नहीं भी दे तो हमें क्रोध नहीं आएगा।

ज्ञानी भगवन्तों ने कहा क्रोध अंधा होता है अर्थात् अंधे व्यक्ति को अपना हित-अहित नहीं दिखता है वह विवेक रूपी चक्षु को खो बैठता है। क्रोध में आँखे बंद हो जाती हैं जीभ खुल जाती है। क्रोधी व्यक्ति को जो मन में आता है अर्नगल बोल देता है एवं बाद में पछताता है। अतः आत्महित का चिन्तन करें तो क्रोध आए ही नहीं।

लोभी और स्वार्थी व्यक्ति हमेशा दुखी ही रहता है क्योंकि उनको जिनता भी मिलता है हमेशा कम ही लगता है और इसलिए वह चिड़चिड़े स्वभाव का होता है। अतः लोभ और स्वार्थ की वृत्ति को समझ पूर्वक काम करने पर क्रोध भी कम हो जाता है।

'मानव मात्र भूल का पात्र' यदि हमें कोई अपनी भूल बताए तो स्वीकार कर सुधारना चाहिये न की क्रोध करना चाहिये। क्रोध करने में हमारी भूल बढ़ती ही जाएगी और एक दिन ऐसा आएगा कि कोई हमसे बात करना भी पसंद नहीं करेगा।

'बृहत कल्पभाष्य' में एक दृष्टांत आता है कि पिता और पुत्र ने दीक्षा ली। पुत्र बहुत झगड़ालु स्वभाव का था इसलिये समुदाय में मेल नहीं पड़ा स्वभाव की विचित्रता के कारण समुदाय से अलग हो गया। दूसरे समुदाय में गया वहाँ भी इसी प्रकार सामन्जस्य नहीं होने के कारण अलग हो गया। इस प्रकार छह महिने में अनेक समुदाय बदल लिये। पुनः एक बार पिता ने पुत्र को कहा कि गलती तो अपनी ही है, तेरे

स्वभाव को बदल दे तो क्या मेल बैठ जाय? पुत्र को बात जँच गई। उसने संकल्प लिया कि अब किसी को परेशान नहीं करूंगा बल्कि सहारा बनुंगा। स्वभाव बदलने के कारण सबको प्रिय बन गया। इसलिए कहा है कि 'अमन्त्रमूलं वशीकरणं हि सेवनं' मंत्र जाप बिना ओर कोई जड़ी बुटी बिना दूसरों का वशीकरण करने वाली कोई चीज हो तो वह सेवा है सहायक भाव है अतः इतना तो स्वीकार करना ही है कि सामने वाले की भूल के कारण नहीं किन्तु अपने स्वभाव के कारण ही क्रोध आता है।

किसी में दोष देखने से क्रोध आता है किन्तु अपने स्वयंभी दोषों से युक्त है अतः किसी में दोष देखने का अधिकार अपना नहीं है। फिर भी दोष दिख जाए तो विचारना की 'भैंस के सिंग भैंस को भारी' 'नदी का किचड़ नदी को मुबारक' जैसा देखेंगे वैसा अपने अंदर संग्रहित होगा। दोष देखेंगे तो दोषों से भरते जाएंगे और गुण देखेंगे तो गुणों से भरते जाएंगे अतः दोष देखना ही नहीं तो क्रोध आएगा ही नहीं। किसी की भूल बताना भी हो तो अपना अधिकार हो वहाँ ही बोलना उसमें भी वो माने तो ही बोलना। मीठे शब्दों से काम हो जाए तो कम शब्द ही बोलना तथा कम शब्दों में बात बन जाए तो अधिक नहीं बोलना।

सभी की भूलों की सजा देने का अधिकार कर्मसत्ता का है मेरा नहीं ऐसा विचारे तो क्रोध आएगा ही नहीं। फिर भी यदि अधिक क्रोध आता हो तो तात्कालिक निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं।

1. क्रोध आने की परिस्थिति निर्मित हो रही है तो उसी समय उल्टे नवकार मंत्र का स्मरण शुरू कर दो.
2. तीव्र क्रोध आ रहा हो तो काँच में चेहरा देख लो आप स्वयं डर जाएंगे।
3. जहाँ आपका उठना-बैठना हो आपकी दृष्टि बार-बार पड़े वहाँ पर एक पोस्टर चिपका दो जिस पर लिखा हो मुझे क्रोध नहीं करना है.
4. दंड पूर्वक क्रोध को छोड़ने का उपाय करना। एक बार क्रोध करूंगा तो 36 खमासमण लगाऊँगा या 100 रु. भंडार में डालूंगा।
5. 'मेरा बिगड़े मेरे से, मेरा सुधरे मेरे से' ऐसा चिंतन करते रहना।
6. मुझे क्रोध आता है यह सामने वाले की नहीं मेरी ही भूल है मेरे स्वभाव की विचित्रता है।
7. जो भी होता है वह अच्छे के लिए ही होता है।
8. जो होना हो वह होकर ही रहता है मुझे क्रोध करने से क्या होगा।
9. 'मौनं सर्वार्थ साधन' मौन रखने से सभी झगड़े समाप्त हो जाते है।

मिच्छा मि दुक्कडं

(मुनिप्रवर श्री मोक्षरतिविजयजी म.सा.)

- पर्वाधिराज पर्युषण का एक अनिवार्य कर्त्तव्य है- मिच्छा मि दुक्कडं जिसका अर्थ है- मेरे दुष्कर्म को माफ करो। अर्थात् मेरे अनुचित व्यवहार के बदले मैं पश्चाताप का अनुभव करता हूँ।
- मिच्छामि दुक्कडं- इन शब्दों होठों से नहीं हृदय से निकलने चाहिए। क्षमापना किसी भी शर्त या लेन-देन के बिना होनी चाहिए। खूंखार से खूंखार अपराधी में भी मित्र रूप देखना चाहिए। 'क्रोध जीव मात्र को संसार में भटकाता है जबकि क्षमा जीव मात्र का उद्धार करती है।' ऐसी श्रद्धा मिच्छामि दुक्कडं को सच्ची आराधना बनाने के लिए अनिवार्य है।
- जो क्षमा को धारण करता है वह आराधक है, जो क्षमाहीन है वह विराधक है... जो क्षमापना करता है वह बहादुर है, जो क्षमाहीन है वह कायर है... जो क्षमायाचना करता है वह ही बड़ा है, वह ही महान है। जो क्षमायाचना नहीं करता है वह छोटा है, तुच्छ है। आराधक-विराधक। बहादुर- कायर, बड़ा- छोटा, महान-तुच्छ। इन शब्दों का उपरोक्त अर्थ यदि समझ में आ जाए तो मिच्छामि दुक्कडं सरलता से कहा जा सकता है।
- क्षमादान देने के बाद अपराधी का अपराध कभी याद भी नहीं आना चाहिए और वह अपराधी (चाहे वह कभी आपके खून का प्यासा हो) दुःखी दिखाई दे तो उसका दुःख दूर करने की तीव्र अभिलाषा जब प्रगट हो तो तब मिच्छामि दुक्कडं सही गिना जाएगा।
- सर्वप्रथम शान्तचित होकर सिर्फ इतना ही विचार करें कि- क्रोध करने जैसा है या नहीं ? यदि नहीं तो मन को अच्छी तरह समझा दें कि - किसी भी परिस्थिति में मुझे क्रोध नहीं करना है।
- क्रोधी-विरोधी- अपराधियों पर क्रोध करने से पहले बस इतना ही समझ लिया जाए कि- छोटे बड़े सभी अपराधियों से खतरनाक क्रोध स्वयं एक महा अपराध है, तो मिच्छामि दुक्कडं करने की नौबत बहुत ही कम आए जीवन में।

- क्रोध करने से चाहे संसार की सर्वश्रेष्ठ भौतिक सफलता स्वयंवरा बनके सामने आती दिखती हो, तब भी क्रोध नहीं करना चाहिए- ऐसा स्पष्ट मन बनाए बिना मिच्छामि दुक्कड असंभव है।
- यदि ऐसा मन बन गया है और व्यवहार में क्रोध जीवित है तो भी बहुत ज्यादा घबराने जैसा नहीं है। यदि ऐसा मन नहीं बना है और क्रोध आप के व्यवहार से विदा ले चुका है तो भी बहुत ज्यादा प्रसन्न होने जैसा नहीं है।
- क्षमापना क्यों करनी पड़ती है ? क्रोध करते हैं इसलिए। क्रोध क्यों होता है ? इच्छाएँ मन पर सवार हो जाती हैं इसलिए।

  इच्छाओं का मन पर सवार हो जाने का कारण है मनुष्य का यह भ्रम, कि- भौतिक साधन मुझे सुखी करेंगे यदि यह भ्रम मनोमस्तिष्क से निकल जाए तो सारा समीकरण बदल सकता है। न रहे बॉस, न बजे बाँसुरी।
- क्रोध, बैर, शत्रुता, कलह और मनमुटाव से बचना हो तथा क्षमा को अपने जीवन में आत्मसात करना हो तो एक उपाय यह भी है कि- हृदय को ऐसा दयाशील बना दो कि किसी का भी दुःख वह देख न सके। दयाशील हृदय हमेशा यह सोचेगा कि- किसी ने मेरा जरा सा और वह भी अनजाने में अपराध किया है और उससे मुझे जो इतना अधिक दुःख पहुंचा है तो मेरा क्रोध उसे कितना दुःखी करेगा ? नहीं, नहीं, मुझे किसी को भी दुःख नहीं पहुंचाना है, मुझे तो सभी के पुराने दुःखों को भी दूर करना है।

गुदगुदी

धीरू : अरे यार, यह बता कि अक्ल बड़ी या भैंस ?

नीरज : रुक, सोचने दे जरा (थोड़ी देर सोचने के बाद) मुझे बेवकूफ समझा है क्या ? पहले डेट ऑफ बर्थ तो बता दोनों के।

**

पत्नी : आप बहुत फिजूल खर्च करते हो, देखो पिछले वर्ष ये आग बुझाने वाला यंत्र आप खरीद कर लाए थे, मगर आज तक एक बार भी काम में नहीं आया।

क्षमा वीरस्य भूषणम्

(श्री अचलचन्द जैन)

जैन धर्म में पर्युषण पर्व का अत्यधिक महत्व है, जो प्रतिवर्ष भाद्रपद मास में मनाया जाता है। जैन समुदाय आठ दिन की उपासना करते हुए अन्तिम दिन सम्वत्सरी महापर्व की आराधना सम्पन्न कर सभी से क्षमापना के साथ पर्व का समापन करते हैं। वहीं जैनियों का दिगम्बर समाज 10 दिवसीय दस लक्षण पर्व की आराधना कर क्षमावाणी पर्व मनाता है।

क्षमा मानव की अद्भुत शक्ति है, जिसके आते ही मनुष्य अद्भुत ऊर्जा से भर जाता है। जैन दर्शन में क्षमा आत्मशुद्धि का प्रमुख आधार है। जैन धर्म के वंदिता सूत्र के 49 वें गाथे में भंगवान महावीर ने कहा है कि-

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतुमें।
मित्ती में सव्व भूएसु, वैरं मज्झं न केणई।

अर्थात्, मैं सभी जीवों से क्षमा याचना करता हूँ, सभी जीव मुझे क्षमा प्रदान करें, सभी प्राणियों के प्रति मेरा मैत्री - भाव है, किसी के प्रति मेरे मन में वैर भाव नहीं है। भगवान महावीर ने जो कहा उसे कर दिखाया। उन्होंने उन के कान में कीले ठोकने वाले ग्वाले, डसने वाले चण्ड कौशिक नाग आदि सभी को क्षमा कर दिया। किसी के प्रति कभी भी वैर भाव नहीं रखा।

किसी भी व्यक्ति के अपने विरुद्ध किये गये अपराध या दुर्व्यवहार को पूर्ण रूप से विस्मृत कर देना, सहनशील होना अर्थात् क्रोध न करना, उत्पन्न क्रोध को सहज विनम्र भाव से निष्फल कर देना, यही क्षमा है। क्षमा एक बहुत बड़ा तप भी है, यह एक जीवन की नहीं जन्म-जन्म की साधना है जो सहज नहीं, कठिन है।

यह सहिष्णुता, सौहार्द, समन्वय, समता, शान्ति एवं सद्भाव का पर्याय है। जीवन का बड़े से बड़ा संघर्ष क्षमा से टाला जा सकता है। क्षमा याचना करने से अधिक साहस का काम क्षमा प्रदान करना है। इसलिए क्षमा को वीरों का भूषण कहा गया है। अपराधी के प्रति प्रतिशोध की भावना न रखकर यदि हम उसे क्षमा कर देते हैं तो अपराधी पानी-पानी हो जाता है और क्षमा करने वाला व्यक्ति यश प्राप्त कर लेता है।

क्षमा के कुछ ऐतिहासिक उदाहरण

इस प्रकार हैं।

जब ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया गया तो उन्होंने उनके हत्यारों पर किसी प्रकार का क्रोध न कर उन्हें अज्ञानी समझ कर क्षमा कर दिया। हजरत मोहम्मद साहब जिस रास्ते से रोज गुजरते थे, एक औरत प्रतिदिन उन पर कचरा डाल देती थी। एक दिन जब उनके ऊपर कचरा नहीं डाला गया तो वे उस औरत के घर गए, वहाँ जाकर देखा तो वह औरत बीमार पड़ी थी। मोहम्मद साहब तत्काल उसके लिए दवा लाए और उसके इलाज की व्यवस्था करवायी।

इसी तरह स्वामी दयानन्द सरस्वती को उनके रसोईए ने काँच पीसकर भोजन में मिलाकर खिला दिए तो स्वामीजी ने मरने से पूर्व उस रसोईये को बुलाकर क्षमा किया और उसे किराये के पैसे देकर पुलिस के आने से पहले भाग जाने को कहा।

हमारी पौराणिक कथाओं में प्रसंग है कि भृगु ऋषि ने क्रोधित होकर जब भगवान विष्णु के सीने में लातमारी तो तत्काल विष्णु भगवान ने भृगु ऋषि के पैर दबाते हुए कहा– 'ऋषिराज मेरा शरीर कठोर है, कहीं आपके पैर में चोट तो नहीं लगी ?'

ये हैं क्षमा के कुछ उत्कृष्ठ उदाहरण जिन्हें आज भी उदघृत किया जाता है। दण्ड देने की शक्ति होते हुए भी दण्ड न देना क्षमा का उत्कृष्ठ उदाहरण है।

क्षमा शब्द में इतनी शक्ति है कि वह बड़े से बड़े युद्ध और विवाद को खत्म करने में समर्थ है। यही कारण है कि क्षमा मानव मात्र के लिए सबसे बड़ा आभूषण है। मुंशी प्रेमचन्द ने उनके एक उपन्यास में लिखा है कि– मानवीय गुणों में क्षमा सर्वोपरि गुण है। गीता, उपनिषद, बाईबल कल्पसूत्र, कुरान आदि लगभग सभी धर्म, ग्रन्थों में क्षमा और उदारता को जीवन और सामाजिक समरसता में सर्वोत्तम साधन के रूप में स्वीकारा है। सभी संस्कृतियों में क्षमा को श्रेष्ठ मानवीय व्यवहार माना गया है। सच्चे हृदय से मांगी गई क्षमा सार्थक एवं फलदायी होती है।

आज हिंसा आतंक, घृणा और द्वेष मानवता को निष्प्राण बना रहे हैं। इन स्थितियों में सबसे बड़ी आवश्यकता मनुष्य के हृदय में मैत्री और क्षमा के बीजारोपण की है, जिससे मानवीय व्यवहार उत्कृष्ठ बन सके। आईए, हम सभी परस्पर प्रेम और क्षमायाचना कर मन का मैल धो डालें।

आज समाज में फैले विद्वेष, वैमनस्य, घृणा, क्रोध और वैरभाव को इस क्षमा गुण से दूर करें।

क्षमा : जीवन की भव्यता

(श्री अनिल कुमार बोटादरा)

संवत्सरी के महापावन दिन सुनहरी संध्या के समय जैन समाज में मिच्छामि दुक्कड़म का गगनभेदी नारा गूंजता है। क्षमा-याचना का तो मानो ज्वार भाटा आता है। दिव्य उपभोग में रंगारंग के झूले-झूलता देवलोक में देवता भी आश्चर्य चकित हो जाते हैं क्यों न हों भला हम चौरासी लाख जीवायोनी के जीवों की क्षमायाचना करते हैं। क्षमा वीरस्य भूषण है। यह सराहनीय है। परन्तु सच्ची क्षमा की जड़ अहिंसा एवं विनयभाव है। उनके अभाव में क्षमा का कोई महत्व नहीं रहता है। विनय भाव एवं अहिंसा के स्तर पर ही क्षमा याचना का महल खड़ा रह सकता है। विनय के अभाव में जीवन में सफलता, क्षमा, प्रेमभाव, दूर रह जाते हैं। चौरासी लाख जीवायोनी के जीवों की हम क्षमा याचना कर लेते हैं। पर जिनके साथ वैर-विरोध बोलचाल हुई हो उनकी हम क्षमा याचना नहीं करते हैं। बिखरे हुए माला के मोतियों को एकत्रित करने के लिए झुकना पड़ता है। इसी तरह क्षमा को प्राप्त करने के लिये विनयगुण आवश्यक है। जो विनीत है उनके हृदय में हिंसा का परिणाम नहीं होगा अर्थात् किसी जीवों को तकलीफ देने का, कटु शब्द कहने का सोच ही नहीं सकता है। क्षमा याचना साधना का मोक्ष का पावन पथ है। जो पतितों को भी पावन बनाते हैं। कर्मों के कचरे को जलानेवाली दिव्य-आग है। जिससे कर्मों का प्रभाव नष्ट हो जाता है। क्षमापना अमृत से भी अधिक जीवन का माधुर्य है। जिससे स्वयं खुशी होती है एवं संसर्ग में आने वाले के जीवन में भी माधुर्य का अमृत भर देता है। क्षमापना दिव्य संजीवनी है जिससे शारीरिक एवं मानसिक रोगों की विदाय होती है तथा आरोग्य के आनंद से मन में हिंसा अर्थात् किसी के प्रति कटुता भाव नहीं आता है। क्षमापना अज्ञानी जीवात्माओं के लिए ज्योतित्व है। जिसके सहारे साधक जीवन में सच्ची क्षमापना को आत्मसात कर जीवन भव्य, दिव्य एवं मंगलमय बनाकर दुर्गति का द्वार बंद करता है। जब हमारे जीवन में अहिंसा एवं विनय भाव के स्तर पर क्षमायाचना होगी ऐसी वास्तविक क्षमा ही आत्मा का आलोक है। जीवन का आनंद है, व्यवहार कला है। शरीर के रोम-रोम की पवित्रता है।

सहनशीलता और क्षमा सबसे बड़ी तपस्या है

(श्री विवेक मुनि जी. म.)

जगत में अनेक प्रकार के प्राणी हैं। सबकी रुचि स्वभाव, वाणी, रंग-रूप अलग-अलग हैं। जीवन में हमें कई तरह के अनुभव प्राप्त होते हैं। कभी खुशी, कभी गम, हानि, लाभ, यश-अपयश के साथ अनावृष्टि-अतिवृष्टि है। इन सब बातों का हमारे जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और जीवन संघर्ष में अनेक उतार चढ़ाव, विपदाएं, प्रतिकूलताएं सहनी होती हैं। इन बाधाओं के बावजूद हमें निरंतर आगे बढ़ना होता है। क्योंकि इनमें से बहुत सी बातें कुदरत परमात्मा के विधान के कारण हैं, जिन्हें होना ही है और लोगों को सहना ही है। इस तरह हमारी सहिष्णुता, धैर्य, असल में जीवन शक्ति का पर्याय हैं। जब हम इन उतार-चढ़ावों को सहन करने की क्षमता पा लेते हैं, तभी किसी सुखद आनन्द की स्थिति तक पहुँच पाते हैं।

हमने पढ़ा है कि संत एकनाथ जी प्रतिदिन सुबह गोदावरी में स्नान करने के लिए जाया करते थे। जब एक दिन वे अपने घर की ओर लौट रहे थे, तो मार्ग में एक वृक्ष पर चढ़े एक व्यक्ति ने उनके उपर कुल्ला कर पानी डाल दिया। संत एकनाथ ने उसे देखा, शांत रहे और पुनः स्नान करने चले गए। जब लौटे तो फिर उसी व्यक्ति ने उन पर कुल्ला करके पानी डाल दिया। इस तरह उस दिन उस शरारती व्यक्ति ने 108 बार उन पर कुल्ला करके वही पानी डाला। पर संत एकनाथ जी हर बार सहनशील बने रहे। अन्त में उस व्यक्ति का धैर्य टूट गया, वह संत के चरणों में गिर पड़ा और क्षमायाचना करने लगा तो संत बोले, इतने दुखी न हो भाई , तुमने तो मुझ पर उपकार किया है, और तुम्हारी ही कृपा से मुझे आज 108 बार स्नान करने का आनन्द मिला है।

सच्चे संत व श्रेष्ठ पुरुष अपने इसी स्वभाव के कारण चारों ओर आनन्द बिखेरते हैं। सहनशीलता और क्षमा सबसे बड़ी तपस्या है, आत्मा के उत्कर्ष व उत्थान के लिए सहष्णिुता आवश्यक है। सहनशीलता वह शक्ति है जो हमें आनंद भरे मार्ग की ओर ले जाती है अगर हम आत्मिक उत्थान की बात न करें तो भी दिन

प्रतिदिन व्यवहार में सहनशीलता की बहुत ही अपेक्षा है या होती है।

आपने देखा होगा कि जब हमें किसी दूर तीर्थ यात्रा या किसी पर्यटन स्थल आदि पर पहुंचना होता है, तो यात्रा में कई बाधाएं, कष्ट, थकान होती हैं, परन्तु जब हम अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच जाते हैं, तो हमें एक ऐसे आनन्द की अनुभूति होती है, जिसकी हमने चाह की थी। हमारी सारी थकान दूर हो जाती है। ऐसा हम लोग अपनी सहनशीलता के कारण कर पाते हैं। सहनशक्ति द्वारा ही हमारी सही पहचान होती है। आत्मा एवं सभी जीवों का सम्मान करने वाला ही परमात्मा का प्यार पा सकता है।

हमारे जीवन में कई बार वचन द्वारा हिंसा या किसी और कारण से विपरीत स्थिति पैदा होती रहती है। हम इन सब से लोहा लेते रहते हैं। जब हम असहिष्णु होते हैं और व्यंग्य के तेज कटु वाणों से विंद्य कर आपे से बाहर हो जाते हैं। क्रोध का आवेश होते ही हम अपना विवेक खो बैठते हैं। आपने देखा होगा कि शहरों में रोज दर - रोज घटनाएं, अपराध आदि बढ़ते जा रहे हैं। तनाव और भागदौड़ से भरे माहौल में क्रोध स्थाई रूप लेता जा रहा है। और इसका मुख्य कारण है सहिष्णुता की कमी जरा-जरा सी बात पर मारपीट और हत्याएँ चिंता का विषय है। हममें से बहुत सारे लोग बदला लेने, जैसे को तैसा दिखाने का व्यवहार करने को उचित समझते हैं और हम यह तर्क देते हैं कि सहना, मूर्खता एवं कायरता है। निर्बल ही सहते हैं। यह कमजोरी का फल है। परन्तु हमारे महापुरुष, ऋषि मुनि कहते हैं कि यह तर्क ठीक नहीं है। प्रतिकार की विधि अलग तरह की होती है। अभी कुछ दिनों पूर्व हम सभी ने पर्युषण पर्व की आराधना की थी। यह पर्व हमें क्षमा, सहिष्णुता एवं स्नेह सद्भाव से जुड़ने की प्रेरणा देता है। विश्वज्योति भगवान महावीर स्वामी का कथन है- क्रोध को क्षमा शांति से जीतें, अज्ञान को ज्ञान के प्रकाश से परास्त करें। हिंसा को अहिंसा के द्वारा जीतें, और घृणा को प्रेम से जीतें। यही स्थाई सुख शांति का मार्ग है।

क्षमापना क्यों ?

क्षमापना क्यों करनी पड़ती है ? क्रोध करते हैं इसलिए । क्रोध क्यों होता है ? इच्छाएँ मन पर सवार हो जाती है इसलिए।

इच्छाओं का मन पर सवार हो जाने का कारण है मनुष्य का यह भ्रम, कि- भौतिक साधन मुझे सुखी करेंगे । यदि यह भ्रम मनोमस्तिष्क से निकल जाए तो सारा समीकरण बदल सकता है । न रहे बाँस, न बजे बाँसुरी ।

क्रोध

(श्रमणोपासक डॉ. सत्यनारायण शर्मा)

उत्तराध्ययन सूत्र के 23 वें अध्ययन श्लोक नं. 53 में कहा है- 'कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयं शील तवो जलं ।' कषाय-क्रोध, मान, माया और लोभ को अग्नि कहा है। उसको बुझाने के लिए श्रुत, शील और तप यह जल है।

क्रोध करना यह भाव भी मस्तिष्क से आ रहा है। दूसरे शब्दों में क्रोध का उद्दीपन भी होता है और क्रोध का नियमन भी होता है। हाइपोथैलेमस का एक भाग क्रोध को प्रकट करता है तो साथ-साथ दूसरा भाग उसका नियमन करता है। इतना मत करो, अभी मत करो।

शरीर शास्त्र के अनुसार एड्रीनल ग्रंथि सक्रिय होती है, एड्रिनेलीन का स्राव अतिरिक्त होता है। मस्तिष्क मानवीय प्रवृत्तियों का संचालन करने वाला है। उसका एक भाग है- लिम्बिक सिस्टम और अवचेतन, क्रोध का स्थान भी यही है। यहाँ से एड्रीनल ग्रंथि को क्रोध प्रदारक स्राव छोड़ने की प्रेरणा मिली है-

क्रोध का वेग-

1. तीव्रतर पत्थर की रेखा के समान,
2. तीव्र मिट्टी की रेखा के समान,
3. मंद बालू की रेखा के समान,
4. मंदतर जल की रेखा के समान।

क्रोध करके मैं दूसरों को नुकसान करूं या न कर पाऊँ लेकिन मेरा स्वयं का कितना बड़ा नुकसान होता है, यह मुझे तब पता लगता है जब मैं स्वयं के द्वारा किये गये क्रोध के दुष्परिणामों को अक्रोध की अवस्था में क्रोध शांत होने पर देखता हूँ।

क्रोध एक प्रकार का ज्वालामुखी है, जो स्वयं भी जलता है और आसपास के पूरे क्षेत्र को जलाकर राख कर देता है। कहा है- सच्चं शीलं विणय हणेज्ज । अर्थात् क्रोध व्यक्ति के सत्य, शील और विनय का नाश कर देता है।

क्रोध से नुकसान- क्रोध से 6 प्रकार का नुकसान होता है- शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, पारिवारिक, आर्थिक और आध्यात्मिक।

शरीर के स्तर पर- क्रोध से पेपटिक अल्सर, ग्रेस्टाइडिस, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, श्वसन गति अनियमित हो जाती है। पाचन तंत्र मंद और अस्त-व्यस्त हो जाता है। रक्त में कोलेस्ट्रोल का स्तर बढ़ जाता है। अस्थमा, शरीर कृश हो जाता

है।

मानसिक स्तर पर– मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाता है, सिर दर्द, माइग्रेन दर्द, हृदय की बीमारी बढ़ जाती है। मानसिक शक्तियाँ– स्मृति कल्पना और चिंतन आदि का ह्रास हो जाता है।

भावनात्मक स्तर पर– भावनात्मक स्वास्थ्य कमजोर हो जाता है। भावनाएँ अशुद्ध एवं निषेधात्मक विचार उत्पन्न होते हैं। धारणा क्षमता कमजोर हो जाती है। क्रोध के क्षणों में एक प्रकार का जहर और अग्नि दोनों पैदा हो जाते हैं। जो हमारे खून को जलाते हैं, हमारी स्मरण शक्ति और ज्ञान तंतु को नष्ट कर देती है।

पारिवारिक स्तर पर– क्रोध के आवेश में मनुष्य परिवार के सदस्यों के साथ, बच्चों के साथ, पत्नी के साथ गाली-गलौच, मारपीट आदि ऐसे व्यवहार कर लेता है कि जिसके कारण कई बार अंग-भंग और हत्याएँ हो जाती हैं। क्रोधी व्यक्ति के विवेक द्वारा बंद हो जाते हैं। जैसे– सम्राट अशोक ने कलिंग में लाखों लोगों को युद्ध में मारा।

आर्थिक स्तर पर– घर में तोड़-फोड़, वस्तुओं को इधर-उधर फेंक देना, रुपये को फाड़ना, अग्नि में डालना आदि ऐसे अनेक कार्य इस क्रोध के आवेश में मनुष्य कर देता है। विद्वानों का मत है कि क्रोध मूर्खता से प्रारंभ होता है पश्चाताप पर समाप्त होता है।

आध्यात्मिक स्तर पर– चैतसिक विकास रुक जाता है, अतिन्द्रिय क्षमता का जागरण नहीं होता, आत्मा मलिन हो जाती है, अशुभ कर्मों का आकर्षण होता है। नैतिकता का ह्रास एवं चरित्र विकृत हो जाता है।

उपाय– क्रोध नियंत्रण के व्यवहारिक प्रयोग में भगवान महावीर ने एक उपाय बताया 'एगन्त कमेज्जा' एकांत में चले जाओ, ठण्डा पानी पीओ, पूर्ण मौन हो जाओ, जीभ को उलट कर तालू से लगा लो। श्वास समीक्षण, आहार का विवेक करो, प्रतिपक्ष भावना...मैं शांत हूँ, उपशांत हूँ, प्रशांत हूँ का जप शुरू कर दो। परिस्थितियों से बचो, स्थान छोड़ दो।

व्यक्ति का सम्यक् चिंतन क्रोध को शांत कर सकता है।

क्षमा करो स्वीकार

क्षमा क्षमन है,
क्षमा नमन है...
क्षमा शील का आभूषण है ।
रागद्वेष से झुलसे मन पर..
क्षमा क्षमृत जल
का सिंचन है ।

गुस्सा अच्छा नहीं

(श्री अंकुश जैन)

प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस ने एक बार कहा था कि क्रोध मूर्खता से आरंभ होता है और पश्चाताप में इसका अंत होता है। सदियों पहले कही गई यह बात आज भी शत-प्रतिशत सच है। क्रोध करना एक सहज मानवीय वृत्ति है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा जिसे क्रोध न आता हो। सभी जीवों में केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो क्रोध की हानियां जानता है और साथ ही उनके दायरे को निश्चित ही कम भी कर सकता है।

अन्य संवेगों की तरह क्रोध भी व्यक्ति की एक विचलित और विक्षुब्ध अवस्था है। यह न केवल भावनात्मक स्तर पर, बल्कि मनुष्य को उसके बौद्धिक और व्यवहारगत स्तर पर भी विचलित करता है। मनुष्य गुस्से की गिरफ्त में अपनी बुद्धि खो बैठता है, उसका स्वाभाविक आचरण असहज हो जाता है और फिर क्रोध कोई सुखद अनुभूति भी नहीं है। इतना ही नहीं, क्रोध में व्यक्ति की शारीरिक स्थिति सामान्य नहीं रह पाती। मांसपेशियां या तो तन जाती हैं, या फिर एकदम शिथिल पड़ जाती हैं। उसकी रासायनिक ग्रंथियां ज्यादा या कम काम करने लगती हैं। होंठ सूख जाते हैं। आँखों में आंसू भर आ सकते हैं। चेहरा लाल पड़ जाता है। शरीर कांपने लगता है। व्यक्ति पूर्णतः अशांत हो जाता है। ऐसे में आदमी आखिर क्या करे ? क्रोध मनुष्य को जितना कुरूप और पाशविक बनाता है, शायद ही कोई अन्य चीज उसे इतना विकृत करती है। लेकिन क्रोध की अभिव्यक्ति को दबाना तो क्रोध को खुले तौर पर व्यक्त करने से भी अधिक खतरनाक हो सकता है।

बेशक क्रोध का दमन क्रोध को नष्ट नहीं करता। गुस्सा अपनी अभिव्यक्ति के लिए कोई दूसरा और शायद ज्यादा खतरनाक रास्ता ढूंढ लेता है और इस प्रकार लगातार क्रोध का दमन शारीरिक और मानसिक रूप से व्यक्ति को अस्वस्थ कर सकता है। ध्यान देने की बात यह है कि क्रोध सदैव परिस्थितिजन्य होता है। अतः क्रोध के साथ हमारा सही बर्ताव क्या हो, यह समझने के लिए जरूरी है कि हम उस परिस्थिति के मूल में जाएँ, जो क्रोध उत्पन्न करती है, और उन कारकों को ही दूर करें जो इसके लिए जिम्मेदार हैं। अतः न तो क्रोध का दमन सही है और न ही भड़ास निकालना। क्रोध के

कारकों का विश्लेषण ही उसे शांत कर सकता है।

हमें चाहिए कि हम अपने क्रोध को थोड़ी देर के लिए स्थगित कर दें। सिनेका ने कहा था कि क्रोध का सर्वोच्च इलाज विलंब है। शायद इसलिए क्रोध आने पर इससे पहले कि आप गुस्से में कोई नाजायज हरकत कर बैठें, 10 तक गिनती गिनने के लिए कहा जाता है। अधिक गुस्से में बेशक 100 तक गिनिए। लेकिन क्रोध रहते कोई काम न करें। शांत होने के बाद परिस्थिति का आकलन करें।

कुछ लोग क्रोध के लिए क्रोध करते हैं। वे तामसिक हैं। कुछ अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए क्रोध करते हैं। उनकी वृत्ति राजसिक है। लेकिन एक क्रोध सात्विक क्रोध हो सकता है, जो न्यायप्रियता के आग्रह से उपजता है। यह सही बात पर दृढ़ रहने के लिए हमें बल देता है। सत्य के लिए हमारे उत्साह को बढ़ाता है। अतः गुस्सा आने पर हम चुप रहें, यह जरूरी नहीं है। यदि क्रोध का मुद्दा कोई ऐसा है, जिसका सामाजिक नैतिक आयाम भी है तो बेशक लड़ पड़िये । लेकिन संयम यहां भी अनिवार्य है। बुद्धिमानी इसी में है कि आप का क्रोध सीमित दायरे में रहे। ऐसा क्रोध घृणा में भी कभी नहीं बदलता। अपने क्रोध को एक सृजनात्मक दिशा दीजिए, इसका उपयोग समाज को सही मोड़ देने के लिए कीजिए।

साहित्य समीक्षा

पंच-प्रतिक्रमण भाग-1

(हिन्दी विवेचन)

पंच प्रतिक्रमण भाग-1 (सामायिक सूत्र) हिन्दी विवेचन । विवेचनकार - सम्पादक- आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म., प्रकाशक - दिव्य संदेश प्रकाशन सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509 जे.अेस. रोड़, चीरा बाजार, सोतापुर गली के सामने, मरीन लाईन्स (ई) मुम्बई- 400002, फोन- 022-40020120, मो. 9892069330, मूल्य 100 रुपये । पृष्ठ - 192, छपाई-सफाई- ठीक । कव्हर - बहुरंगी मुद्रित ।

प्रस्तुत पुस्तक में नवकार से 'सामाइय-वयजुत्तो' पर्यंत सूत्रों का विवेचन किया गया है। इस हेतु सूत्र मूल रूप में देने के साथ ही उनके संक्षिप्त परिचय एवं शब्दार्थ दिये गये हैं। सूत्रों में निहित भावों के सामान्य तथा विशिष्ट अर्थ भी दिए गए हैं। विभिन्न शब्दों के प्रकार भी संग्रहित किये जाने से पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गयी है। सामायिक में प्रयुक्त होने से तकनीकी शब्दों का भी विस्तार से विवेचन किया गया है। प्रश्नोत्तर भी दिए गये हैं। इस प्रकार पुस्तक में कॉफी सार्थकता विकसित हुई है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

क्षमा दान- उत्कृष्ट दान

(श्री अरविन्द सी मोदी, जालौर)

क्षमा दान– महान दान :– क्षमा में जीवन का वह सुख छिपा है, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। केवल अनुभव ही किया जा सकता है। वैर, विरोध, द्वेष, कटुता और शत्रुता के पुराने घाव क्षमा की मरहम से ही भरे जा सकते हैं। जैन धर्म में क्षमा को मित्रता का आधार माना है, इसलिए पर्वाधिराज महापर्व पर्युषण को क्षमा या मैत्री के पर्व के रूप में मनाया जाता है। पुराने वैर-विरोध को भूलकर सुख शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकते हैं –

'क्षमा वीरस्य भूषणम्'

संवत्सरी के पावन पर्व के दिन हम सभी मिलकर सच्चे मन से क्षमा दान करते हैं। अपना वैर विरोध भुलाकर मित्रता का भाव बढ़ाता है। वही वास्तव में धर्म की सच्ची आराधना करता है।

हमारी जिनसे वैर भाव, दुश्मनी है आपस में एक-दूसरे से मन-मुटाव रखते हैं उनसे सच्चे मन से संवत्सरी क्षमापना पर्व में दोनों हाथ जोड़कर क्षमा याचना कर सकते हैं। मैत्री भावना रख सकते हैं। क्षमादान सबसे बड़ा महादान माना गया है। करुणा, कोमलता, प्रेम, सहानुभूति, सम्मान जितना आप दूसरों को देंगे। उससे हजार गुना प्राप्त करेंगे।

प्रायश्चित करना न भूलें

जिंदगी है तो भूलें होती रहेंगी, गलतियाँ भी होंगी, लेकिन इन गलतियों और भूलों को मन में बसा लेना इनका समाधान नहीं है। इनका समाधान प्रायश्चित है। ऐसा करने से मन पश्चाताप की ग्रंथियों से मुक्त होता है और विकसित होता है। गलती या भूल होने के कई कारण हैं। हमारे जीवन में कहीं राग है तो कहीं द्वेष, कहीं सक्रियता है तो कहीं आलस्य, कहीं आवेश है तो कहीं विक्षोभ। इन तरह-तरह के मानसिक आवेगों का तूफान तभी थमता है, जब हमारा चित्त स्थिर होता है और विवेक जागता है. तभी हम सही मायने में अपनी भूलों को पहचान पाते हैं और पश्चाताप के भाव को समझ पाते हैं। प्रसिद्ध विचारक रूसों ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि वही आत्मकथा श्रेष्ठ है, जिसमें व्यक्ति ने अपने जीवन में की गई भूलों को स्पष्टतः स्वीकार किया हो। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में अपनी भूलों का विवेचन किया था।

क्षमा रूप चिन्तामणी

(श्री कल्याणमल जैन, देवास)

भारत वर्ष कृषि प्रधान देश है, वैसे ही भारत वर्ष में अनेक धर्मों का समावेश होने से विश्व में इसका अलग स्थान है। यहाँ पर जैन धर्म के अलावा बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, मुस्लिम धर्म, सनातन धर्म, सिक्ख धर्म आदि धर्मों को मानने वाले हैं। प्रायः सभी हिन्दू धर्मों में वर्षा के चार माह चातुर्मास के माने जाते हैं। इन दिनों में शुभ मुहूर्त के कार्य, शादी ब्याह इत्यादि बहुत कम होते हैं, इन दिनों में सभी अपनी-अपनी मान्यताओं के अनुसार धर्म में संलग्न रहते हैं। जैन धर्म के सभी सम्प्रदायों में इन चार माह में धार्मिक आराधना हेतु विशेष प्रयत्न कर अपने-अपने क्षेत्र में, चातुर्मास हेतु विनंती की जाकर साधु-साध्वियों के सान्निध्य में धर्म आराधना का लाभ लिया जाता है। इन चार माह में हम त्याग, तपस्या के साथ ही अनेक महापुरुषों की जन्म, जयंती, दीक्षा दिवस अथवा स्मरण दिवस मनाकर उनके पद चिन्हों पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाने पर जोर देते हैं। इन्हीं दिनों में आठ दिवसीय 'पर्युषण पर्व' मनाया जाता है। अंतिम दिवस ' क्षमा पर्व', 'संवत्सरी महापर्व'के रूप में मनाया जाता है। क्षमा पर्व अर्थात वर्षभर में किसी कारण से जानते हुए अथवा अनजाने में हमारे द्वारा किसी भी जीव को पहुंचाई गई क्षति अथवा कष्ट के लिये चौरासी लाख योनियों में रहे समस्त जीवों से क्षमा मांगते हैं एवं उन्हें क्षमा देते हैं। इनकी उत्पत्ति का कारण भी क्रोध एवं अहंकार ही है। क्षमा मांगने एवं क्षमा देना यह दोनों ही कार्य वीरों का आभूषण माना गया है। यह कार्य शायद ही किसी भी धर्म में, विश्व में पाया जाता हो। आएं आज अपने मन से मिच्छामि दुक्कड़म् करके, समस्त जगत एवं प्राणी मात्र से अपना रिश्ता कोरे कागज के समान बना दें। क्षमा हम सिर्फ बड़ों से ही नहीं अपने से छोटे से भी मांगे, क्योंकि उनके प्रति हम कुछ ज्यादा ही आदेश, उपदेश, डॉट, डपट करते हैं। यह पर्व वास्तव में हमारी आत्मा को शुद्ध एवं हल्का बनाने का है। क्षमा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।

महर्षि वाल्मीकि ने क्षमा को सर्वोच्चता प्रदान करते हुए कहा- क्षमा ही दान है, क्षमा ही सत्य है, क्षमा ही सच है, क्षमा ही कीर्ति है। क्षमा ही धर्म है, सारा जगत ही क्षमा से अधिष्ठित है कहा गया है कि-

क्षमा रूप चिन्तामणी, रहती जिनके पास ।
तीन लोक की संपदा, बनती है फिर दास ।।

क्षमा आत्मा का स्वाभाविक गुण

क्षमा का अर्थ सहन करना है। सहन वही कर सकता है जो शक्तिमान है। क्षमा का विरोधी भाव क्रोध में लक्षित होता है। अतः क्षमाशील होने के लिए प्रथम क्रोधवृत्ति को शांत करना चाहिए। क्रोधाविष्ट क्षमा धारण नहीं करता, क्योंकि क्रोध हिंसक होता है और क्षमा अहिंसक । **क्रुद्धः पापं न कुर्यात् किं क्रुद्धो हन्याद् गुरुनपि** क्रुद्ध व्यक्ति बड़े से बड़ा पाप कर सकता है, वह अपने गुरुजनों को मार भी सकता है। क्योंकि क्रोध प्रतिकार स्वभावी है। वह अपनी उग्र प्रतिक्रिया प्रदर्शित करना चाहता है। क्रोध के समय विवेक (हिताहित ज्ञान) प्रायः लुप्त हो जाता है। वह धैर्यरहित भी होता है और विवेकशून्य भी । इसलिए तुरंत हिंसा पर तत्पर हो जाता है तथा परिणाम नहीं सोचता। नीतिकारों ने इसीलिए कहा है कि क्रोधाग्नि को क्षमा जल पीकर बुझाना चाहिए। यदि क्रोध को पांच मिनिट रोक लिया जाए, तो वह उतना वेगशील नहीं रहता। क्रोध में स्थिरता का अभाव है।

क्षमा आत्मा का स्वाभाविक गुणः– क्षमा शीतल जल का स्त्रोत है। क्रोध जहां स्वयं को तथा दूसरे को दग्ध करता है वहीं **'औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय।'** अपने आप में शीतल जल, छूने वाले को भी शीतलता देता है। इसलिए इसे सातावेदनीय कर्म के आस्त्रवों में गिना गया है। यह मनोविज्ञान सम्मत बात है कि क्रोध के बाद पश्चाताप होता है। थकान, ग्लानि जैसे भावों का अनुभव होता है, परन्तु क्षमा के बाद चित्त में शांति, सुख और संतोष मिलते हैं। यह स्वाभाविक भी है– अमृत पीने से मुंह मीठा होता है और विष पीने से कड़ुवा। जिस वस्तु को हम धारण करेंगे उसके गुण–स्वभाव हमें प्राप्त होंगे। चूल्हे की ओर से आनेवाली हवा गर्म और पानी की ओर से आनेवाली हवा शीतल होगी। ऊन का वस्त्र गर्मी देगा तथा सूती वस्त्र ठंडा रहेगा। इस प्रकार क्षमा धारण करने वाले का मन, मस्तिष्क तथा आत्मा शीतल रहेगी। अशांति से मुक्त रहेगा। कहते हैं क्षमा करने वाले को अच्छी नींद आती है।

कुछ लोग क्षमा का अर्थ दुर्बलता लगाते हुए कहते हैं– दुर्बलस्स बलं क्षमा

अर्थात् कमजोर व्यक्ति का बल क्षमा ही है। क्योंकि क्षमा करने के अतिरिक्त वह कुछ कर भी तो नहीं सकता। परन्तु ऐसा मानना क्षमा और दुर्बलता को समानार्थी कहना है। अहिंसा तथा क्षमा दुर्बलता नहीं है। सत्यपि सामर्थ्यें अपकारसहनं क्षमा, क्षमा का तो लक्षण ही यह है कि सामर्थ्य होते हुए भी अपकार को सहन कर लेना । इसीलिए तो क्षमा वीरस्य भूषणम् कहा गया है। क्षमा का मुकुट वीर को ही शोभा देता है। कायर के मुख में क्षमा शब्द नहीं सोहते। बहुमूल्य रत्न को कमजोर की हथेली पर कौन रहने देता है? क्षमा रूप महामणि को महाप्राण ही धारण कर सकते हैं।

क्षमा रूपं तपस्विनाम्, तपस्वियों का रूप क्षमा है। वे उपसर्गों को सहन करने में क्षमाशील हैं। तपस्वियों के आदर्श भगवान महावीर ने सबको क्षमा किया है और सबसे क्षमायाचना की है। क्षमा में अविरोध भावना है जो सबके मैत्री भाव उत्पन्न करती है। ज्ञान स्याभरणं क्षमा । ज्ञान का आभरण क्षमा है। अज्ञानी लोगों के सासांरिक दुर्व्यवहार को ज्ञानवान क्षमा दृष्टि से देखते हैं।

स्त्री, बालक, वृद्ध रोगी क्षमापात्र है, पनन्तु साधु की दृष्टि में तो सारा विश्व ही क्षमा योग्य है। किसी की क्षमा को दुर्बलता नहीं मानना चाहिए। पृथ्वी की सहनशीलता से इसे क्षमा भी कहते हैं। परन्तु जब इसमें भूकंप आते हैं, तो महानगरों के मुँह औंधे हो जाते हैं। क्षमाशील को अधिक पीड़ित नहीं करना चाहिए। तुलसीदासजी लिखते हैं- अतिशय रगड़ करे जो कोई, अनल प्रकट चंदन ते होई। अधिक रगड़ने से चंदन में भी आग निकलने लगती है।

महान तत्वज्ञान- क्षमा शब्द तो जड़ पदार्थ है। क्षमा तत्व तो आत्मा में होता है। क्षमा अनजाने में की गई गलती के लिए की जाती है, पर व्यवहार में क्षमा जाने-अनजाने में की गई गलती के लिए भी मांगी जाती है। संसार में चहु ओर नाना विचार धाराएं हैं, जो एक-दूसरे के विपरीत चलती हैं। मानव एक होते हुए, उसकी संस्कृति एक होते हुए भी धर्म के नाम पर इस प्रकार की लड़ाई आपस में लड़ना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

इस लड़ाई को एक क्षमा भाव से ही समाप्त किया जा सकता है। क्षमा आत्मा का स्वाभाविक गुण है। कषायों का पूर्णतया अभाव और क्रोध को जन्म ही न लेने दिया जाना क्षमा है। क्षमा एक महान तत्वज्ञान है। दूसरे जीवों पर क्षमा करना सामान्य व्यावहारिक रूप है ।

क्षमा बड़न को चाहिए

(श्री अतुल जैन)

संत कवि रहिमदास जी का बहुत ही प्रचलित दोहा है-

क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।

का रहम हरी का घट्यो, जो भृगु मारी लात।

अर्थात्- उद्दंडता करने वाले हमेशा छोटे कहे जाते हैं और क्षमा करने वाले ही बड़े होते हैं।

इंसान से कभी न कभी गलती हो ही जाती है। मगर गलती को सुधार लेना ही समझदारी होती है। जिस तरह तरकश से निकला हुआ तीर वापस नहीं आता, वैसे ही मुंह से निकले बोल वापस नहीं हो सकते। शरीर का घाव तो समय पाकर भर जाता है पर मन के घाव का भरना सहज नहीं होता। फिर क्या किया जाए ? मनीषियों ने इसका बडा ही सहज और सुंदर उपाय सुझाया है- क्षमा मांग लेना या क्षमा कर देना। ये दोनों ही वृत्तियाँ हमारा मन हल्का करने वाली उदार वृत्तियाँ है। वैर भाव को मिटाकर शांति प्रदान करने वाली।

'क्षमा बड़न को चाहिए' यह केवल एक सोच, विचार ही नहीं, अपितु यह एक अभ्यास जनित प्रक्रिया है। जीवन के हर मोड़ पर, हर संबंध में क्षमा का महत्व है।

कभी-कभी क्या होता है कि हमसे कोई मित्र नाराज हो जाता है। कुछ समय तक तो हम परवाह ही नहीं करते। फिर अन्य मित्र बीच में पड़ कर समझौता करवाने का प्रयास करते हैं और क्षमा मांग लेने की प्रेरणा देते हैं। बाध्य करते हैं। तब हम अपनी शर्तों पर ही क्षमा मांगने को तैयार होते हैं। यह क्षमा का औपचारिक रूप है जिसमें हम गलती किए जाते हैं और दिखावे के लिए क्षमा मांग लेते हैं। सुधरने का नाम नहीं लेते। कई बार हम क्षमा मांग कर भी अकड़े रहे हैं। माफ करके भी माफ नहीं करते। कभी-कभी तो हम क्षमा भी अकड़ कर मांगते हैं। कह देते हैं कि गलती की तो क्या हुआ, क्षमा भी तो मांग ली। जैसे

अहसान कर दिया हो। ऐसी औपचारिक क्षमा से क्या लाभ जब मन में क्षमाभाव आता ही न हो। हम यह क्यों नहीं समझ पाते कि क्षमा मांग कर या देकर हम किसी पर अहसान नहीं कर रहे। वरन् अपने ही मन की शांति का उपाय करते हैं। मन की मलिनता को धोने का माध्यम है क्षमा।

भगवान महावीर ने क्षमा मांगने से अधिक क्षमा करने को महान बताया है। वे कहते हैं, 'मैं सब जीवों को क्षमा करता हूँ। सब जीव मुझे क्षमा करें। सब जीवों से मेरा मैत्री भाव है। किसी से वैर-भाव नहीं है।

क्षमा शक्तिशालियों का आभूषण कहलाती है-

क्षमा बलं अशक्तानां, शक्तानां भूषणं क्षमा।

क्षमा वशीकृते लोके, क्षमया किम न साधयति ।।

अर्थात्- क्षमा कमजोरों की ताकत और शक्तिशालियों का आभूषण है। सारा संसार क्षमा से वश में किया जा सकता है। इससे सभी कार्य सिद्ध हो सकते हैं। किसी के प्रति कटुता रखकर हम अपना ही मन मैला करते हैं और मन की शांति से हाथ धो बैठते हैं। दिल से क्षमा करके स्वयं को सुखी बनाते हैं। अब बताइये, क्षमा से अधिक लाभ हमें ही तो हुआ न ? इसीलिए कहते हैं, क्षमा बड़न को चाहिए।

प्रश्न– आठ दिन और दस दिन के पीछे क्या उद्देश्य है ?

उत्तर– आगम ग्रंथों में कहीं भी आठ या दस दिन का उल्लेख नहीं है। आगमों में केवल पर्यूषण की आराधना की बात कही है। साधक पर्युषण के अवसर पर आत्म चिन्तन, आत्म अवलोकन करे एवं कषाय से बचकर मैत्री भाव को मजबूत करे। हमारे महान आचार्यों ने आठ दिन या दस दिन की जो निर्धारणा की है, उसके पीछे यही उद्देश्य है कि व्यक्ति धर्म साधना से जुड़कर आत्म विकास करे। आठ कर्मों से मुक्त होने के लिए पुरुषार्थ आवश्यक है। धर्म के दस लक्षण हैं। क्षमा, सरलता, विनम्रता, मैत्री आदि गुण जीवन में नहीं आएंगे तब तक आत्म विकास कैसे संभव है ? श्वेताम्बर - दिगम्बर सभी का लक्ष्य एक ही है। सभी की भगवान महावीर में आस्था है।

क्षमा आत्मा का धर्म

(श्री के.के. जैन)

संसार के प्रत्येक मनुष्य में प्राणी मात्र के प्रति क्षमाभाव का होना बहुत आवश्यक है। क्योंकि जिनके पास क्षमा नहीं होती है, वह मनुष्य संसार में अपने इष्ट कार्य की सिद्धि नहीं कर पाते। यह क्षमा आत्मा का धर्म है। इसलिए जो मानव अपना कल्याण चाहता है उसे हमेशा इस भावना की रक्षा करनी चाहिए। क्षमावान मनुष्य का इस लोक में और परलोक में कोई शत्रु नहीं होता है। क्षमा ही सब धर्मों का सार है। उत्तम क्षमा गुणों के समूह के साथ रहती है अर्थात् श्रेष्ठ मुनिजन, उत्कृष्ट श्रावक और विद्वान व सामान्यजन सभी को क्षमाधारण करने से उनमें अनेक गुण प्रगट हो जाते हैं। क्षमा धर्म, वीर पुरुष का भूषण। इसलिए कहा भी है कि 'क्षमा वीरस्य भूषणम्।' जिनके पास क्षमा रूपी शस्त्र है, उनका शत्रु भी क्या कर सकता है ? बैरी को भी जीतने में उसे देर नहीं लगती है। क्षमावान् मनुष्य हमेशा सुखी रहता है। क्षमाशील पुरुष का संसार में कोई भी प्राणी शत्रु नहीं होता है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि क्षमा लेना और देना दोनों महत्वपूर्ण हैं। क्षमावान पुरुष गंभीर रहता है, क्रोधी मनुष्य हमेशा दुबला - पतला रहता है। क्रोधी मनुष्य का कोई भी विश्वास नहीं करता है। क्रोधी अपना और दूसरे का भी घात कर डालता है। क्रोधी मनुष्य की आँखें हमेशा लाल रहती हैं और क्रोध के समय उसका सारा शरीर कांप उठता है। उसे हित-अहित, अर्थ-अनर्थ का कुछ भी विवेक नहीं रहता है। क्रोध में अंधा होकर के वह सब धर्मकर्म भूल जाता है। क्रोध की अभिव्यक्ति कटुवाणी से ही नहीं मारपीट से भी होती है। कटुवाणी से जिस समय वह जहर उगलता है, उस समय उसकी जुबान तलवार से भी तेज होती है। उसके वचन दूसरों को पत्थर की तरह लगते हैं। उसके शब्द मनुष्य के हृदय में छेद कर देते हैं। दुःखी मनुष्य के हृदय के भीतर से निकलने वाली आह क्रोधी को भी जला देती है। उसे भी फलस्वरूप यह बहुत दुःखी करती है। इसीलिए क्रोधी भी आवेश में आकर के इस सत्य को स्वीकार कर कहता है कि, 'मेरे सीने में तो आग लगी हुई है।' इस प्रकार क्रोधी के मन में प्रतिशोध की भावना भी जन्मती रहती है।

क्रोध मुक्त बनने अर्थात क्षमावान

बनने के लिए हमें अपने उत्कृष्ट मानवीय गुण और शुभ भावनाएं- दया, प्रेम, मैत्री, सत्य, न्याय और विवेक से काम लेना चाहिए। क्योंकि यह तो सभी जानते हैं कि गाली से गाली बढ़ती है। क्षमावान रॉयल व्यक्ति कभी गालियों (कटु वचन) का प्रयोग नहीं करता। वह गाली सुनते भी चुप रहता है। 'संत कबीर' ने ठीक ही कहा है-

आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक ।
कह 'कबीर' नहीं उलटिये, वही एक की एक ।

इस प्रकार से हम सभी संसारी प्राणियों, खास कर विवेकवान मनुष्यों को क्षमा की प्रवृत्ति का विकास करना चाहिए। क्रोध से क्रोध और बैर से बैर बढ़ता है। इस विभाव परिणति की समाप्ति क्षमाभाव से ही होती है। क्रोध बना रहेगा तो स्नेह, आत्मीयता, सौहार्द का समावेश कैसे संभव है ? इस प्रकार से प्रतिशोध के दुर्विचारों के त्यागी और क्षमाभाव को अपनाने वाले ही महान हैं। इस प्रकार से पर्वराज पर्युषण के पावन प्रसंग में क्षमावाणी दिवस संवत्सरी के दिन प्राणीमात्र से क्षमायाचना करने और क्षमा देने में हमें आत्मनिरीक्षण करने का अवसर मिलता है। इस दिन हम दूषित, विकारभावों से अपनी आत्मा को मांजकर, अपनी जीवनचर्या को पवित्र बनाते हैं। हम विनय और क्षमा धारण कर मानवीय सद्गुणों की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होते हैं। इस प्रकार से क्षमा लेना और देना ये दोनों प्रक्रियाएं हमारे जीवन, हमारे स्वास्थ्य, हमारे उदात्त मानवीय गुणों के विकास और उत्कृष्ट चिंतन के उत्थान के लिए नितांत आवश्यक है। इससे हमारे शरीर में श्वेत रक्त कणिकाओं की लगातार वृद्धि से ही हम स्वस्थ रहते हैं। मैत्रीभाव और क्षमा की पृष्ठभूमि में हमें ब्लड प्रैशर, हाईपरटेंशन और दूसरी मानसिक व्याधियां आदि नहीं सताती हैं। बल्कि क्षमा के आदान-प्रदान में हम भगवान महावीर के अहिंसा के संदेश, जो 'सर्वजन हिताय' को सब तक पहुंचाते हैं।

इस प्रकार क्षमा को धारण और क्षमा को समग्र संसार के प्राणीमात्र के प्रति 'करुणा धर्म' के रूप में प्रसारित करना जैन दर्शन का हार्द है। मानव ही नहीं समस्त वनस्पतियां, पेड़-पौधे, कीट-पतंगे और एकेन्द्रिय जीव तक इस करुणा व मैत्री के प्रतीक- क्षमा धर्म में 'पर्यावरण संरक्षण' की दिशा में समाहित हो जाते हैं। इस क्षमा की भावना से ही समस्त मानवों के मन में शांति स्थापित होती है। इस प्रकार सच्चा मानव धर्म तो वही है जो- 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' की कसौटी पर खरा उतरे। अर्थात् जो अपनी आत्मा के अनुकूल न हो, वह अधर्म है जो आत्मा के

अनुकूल हो, वह धर्म है। मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ इन चार भावनाओं को जागृत रखकर, जो सुप्रवृत्ति विकसित होती है, वही आत्मा का गुण और मानवीय गुणों में श्रेष्ठ क्षमा है। यह क्षमा ही धर्म के दशलक्षण स्वरूप में प्रथम है।

इसी के आधार पर मार्दव (मृदुलता), आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, अकिंचन और ब्रह्मचर्य के रूप में क्रमिक उदात्तता व मानवीय चरित्र में श्रेष्ठता एवं चरित्र में सर्वोच्चता के नवीन प्रतिमान व्यक्ति के जीवन में स्थापित होते हैं। मनुष्य के जीवन में उसकी आत्मा को जो कसे उसे 'कषाय' कहते हैं। जैन धर्म में कषाय चार- क्रोध, मान, माया और लोभ बताई गयी हैं।हम इनसे निवृत्त होकर ही सुखी जीवन बिता सकते हैं। क्रोध कषाय से छुटकारा पाने और सच्ची क्षमा धारण करने में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है। इस दिशा में किया गया पुरुषार्थ ही लौकिक और पारलौकिक सुखों की प्राप्ति में सहायक बनता है। जैन धर्म का मुख्य उपदेश तो यही है कि- नर से नारायण बनने की क्षमता व्यक्ति में है। इसके लिए उसे स्वयं ही पुरुषार्थ का अवलंबन लेकर सतत् चलते रहना होगा, तभी वह आत्म-विकास की अंतिम अवस्था -मोक्ष तक प्राप्त कर सकता है। लेकिन इस सबके लिए जरूरी है कि सदाचार, सद्गुण, सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, क्षमा, शील और मैत्री से युक्त हमारा जीवन हो। क्षमा धर्म को अंगीकार करने वाले सच्चे पथिक की भावना तो यही रहती है कि-

मैत्री - भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
दीन-दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्त्रोत बहे ।।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुज को आवै ।
साम्यभाव रक्खूं मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावै ।

हम कह सकते हैं कि क्षमा के आदान-प्रदान में मानव धर्म और विश्वशांति के सिद्धांत छुपे हुए हैं। इसी के द्वारा अहिंसा, शांति, समता, एकता और भाईचारा तथा सभी जीवों को आत्मवत् समझकर वैसा व्यवहार करने की प्रेरणा मिलती है जो हम सभी को स्वयं के प्रति प्रिय हो। इस प्रकार से हम यह कह सकते हैं कि 'क्षमा के बिना यह जीवन एक तपता हुआ रेगिस्तान है।' निष्कर्षरूप में जैसा तीर्थंकर प्रकृति का बंध होने पर यह जीव तो भावना भाता है, वही विश्व वात्सल्य की भावना, विश्वमैत्री की कामना और उत्कृष्ट क्षमा की याचना करता हूँ।

अंतर से क्षमा मांगना सबके बस की बात नहीं

(श्री विजयसिंह लोढ़ा 'विजय', निम्बाहेड़ा)

कागज की कश्ती में डुबकी लगा नहीं सकते ।
सूरज पर जाकर, घर अपना बना नहीं सकते ।।
कितना कारगर है, कथन यह प्रभु महावीर का ।
कि क्षमा के बिन, खुशी के फूल खिला नहीं सकते ।।

क्षमा अनमोल तोहफा है, भूल सुधारने का ।
काश ! कोई पा ले इसे, मृत्यु होने से पहले ।।
क्षमा वीरों का भूषण है, कथन महावीर का ।
क्षमा के बिना, अहिंसा पथ पा नहीं सकते ।।

रत्नों के बिना गलहार बेकार होता है ।
मानवता के बिना तो जीवन भार होता है ।।
संघर्षों के बिना जूझने वाले मानव ।
क्षमादान के बिना, जीवन भार होता है ।।

बिना क्षमा के धर्म पताका फहरा नहीं सकते ।
बिना क्षमा के नेह का नाता निभा नहीं सकते ।।
क्षमा है वरदान समूचे जन समाज का ।
बिना क्षमा के किसी को अपना बना नहीं सकते ।।

क्षमा के बिन आध्यात्म ज्योति जला नहीं सकते ।
क्षमा के बिन हम, प्रेमामृत किसी को पिला नहीं सकते ।।

क्षमा के बिन हम कभी मोक्ष को पा नहीं सकते।
क्षमा के बिन 'विजय' मानवता को दिला नहीं सकते।।

जब सामने वाला आग बने, तुम बन जाना पानी।
क्षमा सुख का सागर है, यह महावीर की वाणी।।
निकल आते हैं, आंसू, कभी रोने से पहले।
टूट जाते हैं ख्वाब, कभी सोने से पहले।।

धर्म का डंका बजाना, सबके बस की बात नहीं।
गुरु चरणों में स्थान पाना, सबके बस की बात नहीं।।
संतोषी बन क्रोध हरण करना सबके बस की बात नहीं।
अंतर से क्षमा मांगना, सबके बस की बात नहीं।।

साहित्य समीक्षा

मानवता का सत्कारः शाकाहार

मानवता का सत्कारःशाकाहार। लेखक - डॉ. दिलीप धींग। प्रकाशन- रिसर्च फाउण्डेशन फार जैनोलॉजी, सुगन हाऊस, 18 रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहूकार पेठ, चैन्नई 600079 दूरभाष (044) 25298082, 25296557 मूल्य 250/- रु., पृष्ठ संख्या - 280, संस्करण - जुलाई 2018 मुद्रक-नवरत्न हीराचंद पींचा, चैन्नई। छपाई-सफाई-ठीक। कव्हर पृष्ठ- बहुरंगी।

प्रस्तुत ग्रंथ में शाकाहार की विशेषताओं को विषय के आयामों में परिणित कर लेखक ने अपनी गहन अध्ययनशीलता का परिचय दिया है। शाकाहार व्यक्ति के लिए निर्दोष आहार शैली तो है साथ ही संस्कार एवं अंहिसक जीवन शैली भी है। इसके विपरीत मांसाहार का उद्गम हिंसा तथा हत्या से है जो बुराईयों का घर है। विश्व के कई महान व्यक्तियों ने शाकाहार को अपनाया है तथा उसकी प्रशंसा की है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक निश्चित रूप से शाकाहार का प्रबल समर्थन करते हैं। पुस्तक कॉफी उपयोगी एवं शाकाहारी समूह के लिए पर्याप्त प्रेरणा देती है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

परम क्षमा

(डॉ. मधु एस. जैन)

काम, कामना, कामिनी, कंचन और कुसंग,
जग के जीवन जाल में, छूट गये सत्संग ।
ऐसे में हमारे से, हुई होगी भूल हजार ,
तब भी हमारे पर कीजिए, आज एक उपकार ।
कृपावंत हो दीजिए 'परम क्षमा' का दान ।।

दुनियादारी जीव हैं, हैं अवगुण की खान,
णमोकार भगवान का कभी किया नहीं ध्यान ।
भूल चूक अपराध का, प्राणों पर है बोझ,
समयकाल के जाल में, उलझ रहे हैं रोज ।
'दिव्य क्षमा' दे दें हमें, भूलें हमारे भूल,
पर्वराज पर आपका दान मिले अनुकूल ।।

माया, ममता, मोह, औ मद, मत्सर के ठाठ,
इसी ठाठ में बीतती घड़ियां पूरी आठ ।
पुण्य कभी होते नहीं, हो जाते है पाप,
कुछ डंके की चोट और गुपचुप कुछ चुपचाप ।
चरण शरण में कर रहा आज प्रार्थना दीन,
दे दीजे 'उत्तम -क्षमा' श्रावक श्रेष्ठ कुलीन ।।

आध्यात्मिक महापर्व पर्युषण पर हमें अहसास है – हमारे कर्मो का, पश्चाताप है – हमारी गलतियों एवं अविनय का, अपेक्षा है आपसे क्षमा एवं हार्दिक उदारता की इन्हीं भावों के साथ जैन संस्कृति के पर्वाधिराज महापर्व को सार्थक करने के लिए आइये विस्मृत करें। मनोमालिन्य रूपी समस्त पारस्परिक कटु-स्मृतियां, द्वेष, ग्रंथियां और प्रयत्नशील बनें। इनकी पुनरावृत्ति न हो व हृदय को हृदय से जोड़े रखें। हम इस क्षमा पर्व पर शुद्धावन्तः करण से अन्तरंग क्षमा प्रार्थना करते हैं।

वर्ग पहेली - 59

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

1	2		■	3		4
5		■	6		■	
	■	7		■	8	
9	10	■	11	12		■
13		14	■		■	15
■	16		■	17	18	■
19	■	20		■	21	

दाएँ से बाँए –

1. परमात्मा की अष्टप्रकारी पूजा में छठी पूजा कौन सी है ? (3)
3. काटो छीलो, घिसो तो भी शीतलता ही प्रदान करता है हे परमात्मा मुझे ऐसी ही शीतलता प्रदान करना यह किस पूजा के भाव हैं ? (3½)
5. हे प्रभु आप द्रव्य मल और भाव मल से रहित हैं, मुझे भी आपके जैसा निर्मल बनाना। यह भाव कौनसी पूजा के हैं ?
6. प्रतिमा को देखकर जाती स्मरण ज्ञान किस कुमार को हुआ ? (2½)
7. ध्यान कितने प्रकार का होता है ? (2)
8. भोजन के बाद खाने का एक प्रकार का तम्बोला ? (2)
9. 82 प्रकार के क्या होते हैं ? (2)
11. परमात्मा की आज्ञा को स्वीकार करने का प्रतीक क्या है ? (3)
13. तरंग का पर्यायवाची ? (3)
15. पंचपरमेष्ठि का एकाक्षरी मंत्र (1)
16. धूल, पांशु का पर्यायवाची ?(2)
17. एक शब्द जिससे झुकने की प्रेरणा मिले ?(2)
20. कर्मों की निर्जरा किससे होती है ? (2)
21. चरित्र मोहनीय का एक भेद ? (2)

ऊपर से नीचे –

1. कुमारपाल महाराजा की गादी पर कौन बैठा ? (5)
2. प्रक्षालन करना, धोना ? (2)
3. ज्योतिष्क देव का एक भेद ? (2½)
4. विनय का एक प्रकार ? (3)
5. संध्याकालीन मंदिर में होने वाला अनुष्ठान ? (3)
8. स्त्री की 64 कला में से एक कला ? (2)
10. काल का एक भेद ? (3)
12. जंबुद्वीप को किस समुद्र ने घेर रखा है ?(3)
14. समवसरण का प्रथम गढ़ किसका है ?(2)
18. राष्ट्रीय पक्षी का नाम ? (2)
19. बालक की प्रथम गुरु कौन है ? (1)

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અનંત સુખનો નાશ ન કરો

"મા એયં અવમન્નતા, અપ્પેણં લુંપહા વહું।"

(સન્માર્ગનો તિરસ્કાર કરીને અલ્પસુખ (વિષયસુખ)ને માટે અનંતસુખ (મોક્ષસુખ)નો વિનાશ ન કરો.)

જો કોઈ હીરાને બદલે કાંકરો પસંદ કરે તો તેને કેવો કહેશો ? તમે તેને મૂર્ખ કહેશો. સુમાર્ગને બદલે કુમાર્ગ પસંદ કરનાર પણ એવા જ મૂર્ખ નથી શું ?

કુમાર્ગમાં ઇન્દ્રિયોને વિષયોનું આકર્ષણ હોય છે, સુમાર્ગમાં એની આશા ક્યાં ? વિષયોનું સુખ તરત મળે છે, પણ તે ક્ષણિક હોય છે. એથી ઊલટું મોક્ષ સુખ કાયમી કઠોર સાધના કર્યા પછી મળે છે, પણ તે સ્થાયી હોય છે - અનંત હોય છે.

મોક્ષધામમાં પહોંચતાં પહેલાં બુદ્ધિશાળી વ્યક્તિ એ અનંત સુખને કલ્પનામાં ભોગવતો થકો ક્રમે ક્રમે તેના તરફ આગળ વધતો રહે છે. એ જ લોકો કુમાર્ગે આગળ વધવાની તૈયારી કરનારાઓને સલાહ આપે છે કે, "અલ્પ સુખને માટે અનંત સુખનો નાશ ન કરો."

– સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર ૧/૩/૪/૭

મુનિરાજશ્રીએ પરિકલ્પના કરી નવકાર મહામંત્રના રૂપમાં વાવ્યું બીજ આચાર્યશ્રીના જીવનકાળમાં બન્યુ વટવૃક્ષ

ભારતભરના ત્રિસ્તુતિક સંઘમાં નવ દિવસીય નવકાર આરાધના સંપન્ન

ભારતના વિભિન્ન નગરોના ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ચાલી રહેલ નવદિવસીય નવકાર મહામંત્ર આરાધનાનો પ્રારંભ સન ૧૯૬૧ના વર્ષે રાજસ્થાનના નિમ્બાહેડા (જિલ્લા-ચિત્તોડગઢ) નગરમાં ચાતુર્માસ હેતુ બિરાજમાન ત્રિસ્તુતિક જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સુશિષ્ય રત્નો મુનિરાજ શ્રી સૌભાગ્ય વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૭ની નિશ્રામાં મુનિરાજ શ્રી જયંતવિજયજી મ.સા., (પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.)ની પરિકલ્પના અને પ્રેરણાથી થયો હતો.

મુનિરાજશ્રીના માર્ગદર્શનમાં આરાધનાની સમય સીમા નવદિવસીય નક્કી કરાઈ હતી, જેમાં નવદિવસ નવકાર મહામંત્રની આરાધના અને દસમા દિવસે આરાધનામાં સ્થાપિત નવકાર મહામંત્રના ફોટાની શોભાયાત્રાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. સન ૧૯૬૧ના વર્ષમાં પ્રથમ આરાધના ભાદરવા વદ ૩ થી ભાદરવા વદ ૧૨ સુધી કરાઈ હતી. જેનો લાભ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ નિમ્બાહેડાએ લીધો હતો. પ્રથમ આરાધના શ્રી સંઘના સ્થાનિય શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ માટે સિમિત રખાઈ હતી. જેમાં ૪૮ શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ આરાધના કરી નવ લાખ નવકારના જાપ કર્યા હતા. ત્યારબાદ મુનિરાજશ્રીની પ્રેરણાથી સન ૧૯૬૬ના વર્ષમાં મધ્યપ્રદેશના રાણાપુર નગરમાં તેમના ચાતુર્માસ દરમ્યાન આરાધનામાં સ્થાનિય શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ સાથે વિભિન્ન નગરોમાંથી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓનો આરાધના માટે આગમનનો પ્રારંભ થવા લાગ્યો હતો.

રાણાપુર નગરથી મુનિરાજશ્રીએ આરાધનાની તિથિમાં પરિવર્તન કરવા સાથે દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મહારાજાની જન્મ અને સ્વર્ગારોહણ તિથિ સપ્તમીની સ્મૃતિમાં આરાધના શ્રાવણ સુદ-૭થી શ્રાવણ સુદ-૧૫ સુધીનો પ્રારંભ કરાવ્યો જે અત્યાર સુધી નિર્વિઘ્ને ચાલી રહી છે. રાણાપુર નગરમાં સંપન્ન થયેલ નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનો લાભ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ રાણાપુરની આજ્ઞાથી રાણાપુર નિવાસી સુજાનમલજી મિયાચંદજી કટારીયા પરિવારે લીધો હતો. સન ૧૯૬૬ના વર્ષની આરાધનામાં સ્થાનિય અને વિભિન્ન નગરોથી આવેલ આરાધકોની સંખ્યા ૭૨ થઈ હતી અને તે સમયે પંદર લાખ નવકાર મહામંત્રના જાપ થયા હતા.

વિશ્વ પૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મહારાજાના પ્રશિષ્ય અને આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન મુનિરાજ શ્રી જયંતવિજયજી ''મધુકર''ની (પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.) પરિકલ્પના અને પ્રેરણાથી પ્રારંભ થયેલ આરાધનાના સન્ ૧૯૬૧ના વર્ષમાં ૪૮ આરાધકની સંખ્યાથી વાવેલ બીજ તેમના જીવનના સન્ ૨૦૧૬ના અંતિમ ચાતુર્માસ મધ્યપ્રદેશના રતલામ નગરમાં થયેલ આરાધનામાં ૧૧૦૦થી અધિક આરાધકની સંખ્યામાં વટવૃક્ષ બની ગયું. આ આરાધના વર્તમાનમાં પણ ભારતભરના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ચાલી રહી છે.

સંવત ૨૦૭૫ના શ્રાવણ સુદ ૭થી શ્રાવણ સુદ ૧૫ દરમ્યાન ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજયનિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની નિશ્રામાં પિપલોદા નગરે નવદિવસીય એકાસણા સાથે શ્રી નવકાર મહામંત્રની આરાધના સંપન્ન થઈ હતી. મોટી સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હતા. ધાનેરા- થરાદ, ડીસા, અમદાવાદ, સુરત, મુંબઈ, રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, તામિલનાડુ, આંધ્રપ્રદેશ, મહારાષ્ટ્ર, કર્ણાટક વિગેરે ભારતભરના ત્રિસ્તુતિક સંઘોમાં એકાસણા સાથે નવ દિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના સંપન્ન થઈ હતી. જેમાં હજ્જારો આરાધકોએ કરોડોની સંખ્યામાં નવકાર મહામંત્રના જાપ કરી પુણ્ય સમ્રાટનું સ્મરણ કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

પિપલોદા નગરે...

ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની નિશ્રામાં શત્રુંજય મહાતીર્થની સંગીતમય ભાવ યાત્રા સંપન્ન

પિપલોદા નગરે પાવનકારી ચાતુર્માસ દરમ્યાન શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ધામ પર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની નિશ્રામાં શત્રુંજ્ય મહાતીર્થની સંગીતમય ભાવ યાત્રા સંપન્ન થઈ હતી.

આ ભાવ યાત્રા દરમ્યાન પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિએ કહ્યું હતું કે, શત્રુંજ્ય તીર્થ શાશ્વત છે. કેમ કે તીર્થ પર પ્રથમ તીર્થંકર આદિનાથ ભગવાન સ્વયં પધાર્યા હતા અને તેમને સ્વયં ગિરિરાજની યાત્રા કરી હતી. પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. અને સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોએ પણ છઃરિ પાલક સંઘ, નવ્વાણુ યાત્રા, ઉપધાનતપ અને વિભિન્ન ધાર્મિક આયોજન આ તીર્થ પર સંપન્ન કરાવ્યા હતા. શત્રુંજ્ય પર નવ ટૂંક છે જેમાં સહુથી મોટી ટુંક આદિનાથ ભગવાનની છે.

ડૉ. સેવાભાવી મુનિરાજ શ્રી સિદ્ધરત્નવિજયજી મ.સા.એ ચૈત્યવંદન અને સ્તવન, સ્તુતિની સાથે તળેટીથી શ્રી શાંતિનાથ ભગવાન, શ્રી આદિનાથ ભગવાન, શ્રી પુંડરિક સ્વામી, રાયણ પગલાથી ભાવયાત્રાનો પ્રારંભ કરાવ્યો હતો.

રાજધાની એકસપ્રેસ મુનિરાજશ્રી વિધ્વદરત્ન વિજયજી મ.સા.એ શત્રુંજ્ય તીર્થનો સાર ગર્ભિત ઇતિહાસ સંભળાવી જનમાનસના મન મોહી લીધા હતા. તેમને વધુમાં ફરમાવ્યું હતું કે, શત્રુંજયમાં સિદ્ધ ગિરિરાજના ૧૭ મુખ્ય ઉદ્ધાર થયા જેમાં શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામીના સમયમાં ભગવાન રામ અને લક્ષ્મણ જો કે તે સમયે શ્રાવક હતા. તેમને આ તીર્થનો ૧૧મો ઉદ્ધાર કરાવ્યો હતો. અને આજ તીર્થ પર પાંચ પાંડવ, ભરત મુનિ, દશરથ પુત્ર રામ, ભરત અનેક આત્મોઓ મોક્ષમાં પધાર્યા હતા. આ ભાવયાત્રા પ્રસંગમાં મુનિરાજશ્રી પ્રસમેસેનવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી તારકરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી નિર્ભયરત્નવિજયજી મ.સા. અને સાધ્વીજી શ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ ધામ સચિવશ્રી પ્રફુલજી જૈને જણાવ્યું કે, પ્રભુજીની આરતી અને મંગલ દીવાનો લાભ જાવરા નિવાસી ઈન્દરમલ દસેડા પરિવારે લીધો હતો.

દાદા ગુરૂદેવ અને પુણ્ય સમ્રાટની આરતીનો લાભ પિપલોદા નિવાસી શ્રી

અજિતકુમાર શિખર, વિનય બોહરા પરિવારે લીધો હતો. પ્રભાવનાનો લાભ રતલામ નિવાસી શ્રી રિતેશકુમાર ઝકમલાલ બોહરા પરિવારે લીધો હતો. ગહુલીનો લાભ શ્રી સમરથમલ, શ્રી મહેશકુમાર, શ્રી સુમિત નાંદેચા પરિવારે લીધો હતો. સમસ્ત લાભાર્થીપરિવારોનું શ્રી વિજયકુમાર ચંદ્રગોતા પરિવાર દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું.

સંચાલન ચાતુર્માસ પ્રભારી શ્રી રાકેશજી જૈને કર્યું હતું. ગચ્છાધિપતિશ્રી સપરિવારની નિશ્રામાં જાવરા નિવાસી લાભાર્થીસ્વર્ગસ્થ શ્રીમતી સોહનબાઈ રતનલાલ દસેડા પરિવાર દ્વારા નાચતા-કૂદતા-ગાતા ઉમંગી ઉત્સાહ સાથે ભાવ યાત્રા કરાવાઈ હતી અને સાથે-સાથે ભગવાનની અષ્ટપ્રકારી પૂજા પણ ભણાવાઈ હતી. પરિષદ પરિવાર દ્વારા તળેટી અને ગહુલીની મનમોહક રચના કરાઈ હતી. ભાવ યાત્રાનું વિવેચન અમદાવાદ નિવાસી શ્રી અક્ષત શેઠે કર્યું હતું.

પાટણ નગરમાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘની જાહોજલાલી..!!

ગુજરાત ઉપર સંખ્યાબંધ આક્રમણોને લીધે ૧૩૦૪માં મુસ્લિમ સલ્તનત સ્થપાઈ તે પહેલાં ગુજરાતમાં સોલંકી (૯૪૨-૧૨૪૬) અને સોલંકી - વાઘેલા (૧૨૪૬-૧૩૦૪)નું શાસન પ્રવર્તતું હતું. સોલંકી અને વાઘેલા યુગમાં સાહિત્ય, ધર્મ અને આર્થિક જાહોજલાલીઅદ્દભૂત રીતે વિકસ્યા હતા. પાટનગર અણહિલવાડ પાટણ વ્યાપારી અને વિદ્યાકીય પ્રવૃત્તિથી ધમધમતું હતું. આ સમય જૈન અને હિંદુ નવજાગરણનો (રેનેસાં) હતો. ખરેખર તો ગુજરાતની રાજકીય ભૌગોલિક, આર્થિક, સાંસ્કૃતિક, સાહિત્યિક અને વિદ્યાકીય એકરૂપતા સોલંકી યુગમાં વિકસી હતી તેનું સંક્ષિપ્ત વિવરણ નીચે મુજબ છે.

ધાર્મિક સહિષ્ણુતા, શાંતિ, સહકાર, રાજકીય સ્થિરતા રાજ્યની આર્થિક નીતિ, કુશળ અમલદારશાહી અને સામાજિક મૂલ્યો એકબીજાના પૂરક પરિબળો છે. આ પરિબળો આર્થિક વિકાસના પાયા તરીકે કામ કરે છે.

મૂળરાજ, ચામુંડરાજ, ભીમદેવ, કર્ણદેવ, સિદ્ધરાજ જયસિંહ, કુમારપાળ અને અજયપાળ જેવા સોલંકી રાજાઓ સહિષ્ણુ હતા. તેઓ શૈવમાર્ગી હોવા છતાં જૈન ધર્મને રાજ્યાશ્રય આપ્યો હતો. આવા ઉદાર વાતાવરણને લીધે હેમચંદ્રાચાર્ય, જયસિંહસૂરિ, યશચંદ્ર, મેરૂતુંગાચાર્ય, સોમેશ્વર અને પદ્મનાભ જેવા તેજસ્વી જૈન અને હિંદુ સાધુ ભગવંતો, વિદ્વાનો અને સાહિત્યકારોને ઉત્તેજન મળ્યું હતું. તેમણે વિપુલ પ્રમાણમાં સંસ્કૃત અને પ્રાકૃતમાં વ્યાકરણ, પ્રબંધ સાહિત્ય, કાવ્યો, નાટકો, નિબંધો અને તત્વજ્ઞાનના ગ્રંથો રચ્યા છે. વિદ્યા અને સાહિત્યનો આ સુવર્ણયુગ હતો. ઉક્ત લખાણ તા. ૧૧-૮-૨૦૧૯ના ગુ.સ.ની રવિપૂર્તિમાં વાંચવામાં આવ્યું ત્યારે

વર્તમાન સમયમાં દેખાઈ રહ્યું છે કે, પાટણનગરમાં આજે પણ ધર્મ, સહિષ્ણુતા, વિદ્યાકીય વારસો સચવાઈ રહ્યો છે. ધાર્મિક અધ્યયન માટે પાટણનગર આજે પણ પ્રસિદ્ધ છે. ધાર્મિક અધ્યયન કરવા માગતા જિજ્ઞાસુ આત્માઓને જ્ઞાનગર્ભિત પંડિતાચાર્યો ઉત્કૃષ્ટ ધર્મ જ્ઞાન પીરસી જિજ્ઞાસુ આત્માઓને જ્ઞાન ઘડતરથી ઉજ્જવળ બનાવી રહ્યા છે. આ ઐતિહાસિક પાટણનગરમાં ગત વર્ષના ચાતુર્માસથી ધાર્મિક અધ્યયનહેતુએ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા ભાંડવપુર તીર્થોધારક, તેજાબી વક્તા આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીઅને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના તેજસ્વી સુશિષ્યરત્નો મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા., યુવા પ્રવચનકાર મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા., આદિઠાણા સ્થિરતા કરી રહ્યા છે. પાટણનગરના સાગર ઉપાશ્રય, નગીનભાઈ પૌષધશાળા, ખેતરવસહી, ભારતી સોસાયટી, આશિષ સોસાયટીના ધર્મ શ્રદ્ધાળુ ભક્તો સહિત વિવિધ ઉપાશ્રયના આરાધક વર્ગ અને પાટણનગરના વાવ પંથક સંઘ, તેરાપંથ સંઘ, સ્થાનકવાસી સંઘ સાથે સાથે જૈનેતર લોકો સાથે જે સ્નેહની સાંકળ રચી ગુરૂગચ્છનું નામ ઉજ્જવળ કર્યું છે તે ગૌરવવંતી બાબત છે. વર્તમાન સમયમાં પાટણ નગર ખાતે ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના માત્ર પાંચ જ ઘર છે. છતાં વર્ષ દરમ્યાન ધર્મ અધ્યયન સાથે યોજાયેલ ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમમાં બે હજારથી વધુ સાધર્મિક બંધુઓની ઉપસ્થિતિમાં નવકારશી તથા સંઘ સ્વામી વાત્સલ્ય યોજાયા તે પરથી જણાઈ રહ્યું છે કે, શ્રી પરમાત્માની અસિમ કૃપા, દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તેમજ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, વર્તમાન ગચ્છાધિપતિ તથા આચાર્યશ્રીના શુભ આશિર્વાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ ઉપર વરસી રહ્યા છે. પાટણનગરમાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘની જાહોજલાલી વધારી ગુરૂગચ્છનું નામ રોશન કરનાર નિખાલસ સ્વભાવ ધરાવતા પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા. તથા યુવા પ્રવચનકાર પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.ની ધર્મ પ્રભાવક નેત્રદિપક કાર્યદક્ષતાની જેટલી અનુમોદના કરીએ તેટલી ઓછી છે.

ઉલ્લેખનીય છે કે પાટણ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘની સેવાભક્તિને સમસ્ત સમાજ અભિનંદી રહ્યો છે જ્યારે સંઘ દ્વારા પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વની આરાધના કરવા એટલે કે પૌષધ, પ્રવચન શ્રવણ, પ્રભુ પૂજા, પ્રતિક્રમણ, એકાસણુ, આજ્ઞાપાલન વિગેરે આરાધના કરી કર્મની નિર્જરા માટે સકળ જૈન સંઘને પાટણ નગરે પર્યુષણ પર્વની આરાધના કરવા અનુરોધ કરાયો છે. સંપર્ક : ૮૫૧૧૫૬૨૫૦૭, ૯૬૬૨૬ ૫૭૨૫૭

પુણ્ય સમ્રાટશ્રી સમુદાયના શ્રમણી ભગવંતોના ચાતુર્માસની યાદી

(૧) **સાબરમતી – અમદાવાદ**

માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા–૪

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ ગુરૂમંદિર, અચેર ડેપો પાસે, પો. સાબરમતી, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૫

(૨) **પાલડી – અમદાવાદ**

વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મસા. આદિઠાણા – ૮

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન, પ્રિતમનગર બીજા ઢાળ પાસે, પો. પાલડી, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૭. સ્વાધ્યાય હેતુ સાધ્વીજી શ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા અષાઢી ફ્લેટ પાલડી, અમદાવાદ.

(૩) **અલવર – રાજસ્થાન**

સાધ્વીજીશ્રી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

સરનામું : રાજ રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન ગુરૂ મંદિર, શ્રી જૈન સંતવાટિકા કટી ઘાટી, પો. અલવર (રાજસ્થાન) - ૩૦૧૦૦૧

(૪) **નવા વાડજ – અમદાવાદ**

માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા – ૪

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, થીરપુર નગર સોસાયટી, નવા વાડજ, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૧૩

(૫) **શંખેશ્વર તીર્થ**

માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા–૪

સરનામું : રાજેન્દ્રસૂરિ નવકાર મંદિર, બોલેરા રોડ, હાઈવે પો. શંખેશ્વર-૩૮૪૨૪૫, જિલ્લો પાટણ

(૬) **ધાનેરા (ગુજરાત)**

વિદુષી સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

સરનામું : શ્રી સવાણી જૈન ઉપાશ્રય, મોરખીયા ભોજન શાળા સામે, સદર બજાર, પો. ધાનેરા - ૩૮૫૩૧૦, જિ. બનાસકાંઠા (ઉત્તર ગુજરાત)

(૭) **બેંગલુર (કર્ણાટક)**

સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

સરનામું : શ્રી ગુરૂ રાજેન્દ્ર ભવન, કિલ્લારી રોડ, બી.વી.કે. લાયંગર રોડ, પો. બેંગલુર

(૮) **પાલિતાણા – (સૌરાષ્ટ્ર)**

સાધ્વીજીશ્રી ચંદ્રયશાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

સરનામું : યતિન્દ્ર ભવન ધર્મશાળા, તળેટી રોડ, પો. પાલિતાણા-૩૬૪૨૭૦, જિ. ભાવનગર.

(૯) **સુરત – ગુજરાત**

સાધ્વીજીશ્રી શશીપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાન મંદિર, હનુમાન ચાર રસ્તા, સુરત-૩૯૫૦૦૧

(૧૦) **હુબલી (કર્ણાટક)**

સાધ્વીજીશ્રી આત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી શાંતિનાથ જૈન મંદિર, કંચનગાર ગલી, પો. હુબલી (કર્ણાટક)

(૧૧) **અંજડ (મ.પ્ર.)**

સાધ્વીજીશ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી જૈન શ્વેતાંબર મંદિર, ધાનમંડી ચોક, પો. અંજડ-૪૫૧૫૫૬, જિ. ખરગોન, (મ.પ્ર.)

(૧૨) **અમદાવાદ – ગુજરાત**

સાધ્વીજી શ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર, રતનપોળ, હાથીખાના, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

(૧૩) **ખાનપુર, અમદાવાદ (ગુજરાત)**

સાધ્વીજી શ્રી રત્નયશાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સાધ્વીજી શ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. તથા સાધ્વીજી શ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સાધ્વીજીશ્રી ચૈત્યપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા - ૬

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્ર સૂરિ જ્ઞાનમંદિર, તુલસી વિહાર સોસાયટી, ખાનપુર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

(૧૪) **મીઠાખળી – અમદાવાદ**

સાધ્વીજીશ્રી રંજનમાલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સાધ્વીજીશ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન, મેડીસર્જ હોસ્પિટલ પાસે, મીઠાખળી, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૯

(૧૫) થરાદ – ગુજરાત

સાધ્વીજીશ્રી દિવ્યદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર, સદર બજાર, મંડી પાસે, પો. થરાદ - ૩૮૫૫૬૫, જિ. બનાસકાંઠા (ઉ.ગુ.)

(૧૬) ધાર (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્ર ભવન, મોટા રાવલા, પો. ધાર-૪૫૪૦૦૧ (મ.પ્ર.)

(૧૭) મોટેરા – અમદાવાદ

સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા – ૫

સરનામું : શ્રી રાજ રાજેન્દ્રનગર, અશોકવિહાર, એન્જિનિયરીંગ કોલેજ સામે, ગાંધીનગર હાઈવે પો. મોટેરા-૩૮૨૪૨૪, જિ. ગાંધીનગર.

(૧૮) જાવરા (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રભવન, પીપલી બજાર, પો. જાવરા-૪૫૭૨૨૬,
જિ. રતલામ (મ.પ્ર.)

(૧૯) ખેતવાડી – મુંબઇ

સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, ૧૦મી ખેતવાડી, મુંબઈ-૪૦૦૦૦૪ (મહારાષ્ટ્ર)

(૨૦) આલોટ (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી વિદ્વદ્ગુણાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા – ૨

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, રાનીપુરા, પો. આલોટ-૪૫૭૧૧૪, જિ. રતલામ (મ.પ્ર.)

(૨૧) મોહનખેડાતીર્થ (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી દર્શિતકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા – ૨

સરનામું : જયંતસેન મ્યુઝીયમ, પો. મોહનખેડાતીર્થ (રાજગઢ) ૪૫૪૧૧૬, જિ. ધાર, (મ.પ્ર.)

(૨૨) જાલોર – (રાજસ્થાન)

સાધ્વીજી શ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન ધર્મશાળા, કાંકરીયાવાસ, પો. જાલોર - ૩૪૩૦૦૧ (રાજ.)

(૨૩) આહોર (રાજસ્થાન)

સાધ્વીજી શ્રી શાસનલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : રાજેન્દ્રસૂરિ ક્રિયાભવન, જુના બસ સ્ટેશન, પો. આહોર - ૩૦૯૦૨૯, જિ. જાલોર (રાજ.)

(૨૪) પાટણ – ગુજરાત

સાધ્વીજીશ્રી તત્વલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા–૪

સાધ્વીજીશ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા–૪

સાધ્વીજીશ્રી રૂચિદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા–૨

સરનામું : રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, પંચાસરા પાર્શ્વનાથ દેરાસર પાછળ, પો. પાટણ-૩૮૪૨૦૫, ગુજરાત

(૨૫) બડનગર (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી અનેકાંતલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર, ગાંધીચોક, પો. બડનગર-૪૫૬૭૭૧, જિ. ઉજ્જૈન, (મ.પ્ર.)

(૨૬) પાલિતાણા – સૌરાષ્ટ્ર

સાધ્વીજીશ્રી વિજ્ઞાનલતાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : યતિન્દ્ર ભવન ધર્મશાળા, તળેટી રોડ, પો. પાલિતાણા-૩૬૪૨૭૦, જિ. ભાવનગર.

(૨૭) જોધપુર (રાજસ્થાન)

સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, ખરાદીયોનો વાસ, પો. જોધપુર-૩૪૨૦૦૧ (રાજસ્થાન)

(૨૮) સુરત (પાલ)

સાધ્વીજીશ્રી અધ્યાત્મકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, સહસ્ત્રફણા રેસીડેન્સી, સોમચિંતામણી સામે, પો. પાલ, સુરત.

(૨૯) ભીનમાલ (રાજસ્થાન)

સાધ્વીજીશ્રી નયનપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : મહાવીર સ્વામી જૈન મંદિર, જૂની પોસ્ટ ઓફિસ પાસે, પો. ભીનમાલ-૩૪૩૦૨૯, જિ. જાલોર, રાજસ્થાન

(૩૦) પિપલોદા (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી આદિનાથ જૈન શ્વેતાંબર મંદિર, ઝંડા ચોક, પો. પિપલોદા-૪૫૭૩૩૧, જિ. રતલામ. (મ.પ્ર.)

(૩૧) અમરાઈવાડી – અમદાવાદ

સાધ્વીજી શ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી અમરાઈવાડી જૈન શ્વે. મૂ.પૂ. સંઘ, બળીયાવાસ, બહુચર માતાજી મંદિર પાસે, પો. અમરાઈવાડી-૩૮૦૦૨૬, અમદાવાદ.

(૩૨) ઉંઝા – ગુજરાત

સાધ્વીજીશ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન ગુરૂ મંદિર, મહાવીર સ્વામી દેરાસર પાસે, શાંતિનગર સોસાયટી, પો. ઉંઝા-૩૮૪૧૭૦, જિ. મહેસાણા. ઉત્તર ગુજરાત.

(૩૩) દાધાલ (રાજસ્થાન)

સાધ્વીજીશ્રી પ્રિતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શીતલનાથ જૈન શ્વે. પેઢી, પો. દાધાલ, જિ. જાલોર, રાજસ્થાન

(૩૪) ડીસા (ઉ.ગુ.)

સાધ્વીજીશ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૧૧

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાન મંદિર, નેમિનાથનગર, પો. ડીસા - ૩૮૫૫૩૫, જિ. બનાસકાંઠા, (ઉ.ગુ.)

(૩૫) સિયાણા (રાજસ્થાન)

સાધ્વીજીશ્રી સુમનકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી સુવિધિનાથ જૈન શ્વે. પેઢી. મેઈન બજાર,
પો. સિયાણા-૩૪૩૦૨૪, જિ. જાલોર (રાજસ્થાન)

(૩૬) નાગદા (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજીશ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી પાર્શ્વપ્રધાન પાઠશાળા ભવન, રાની લક્ષ્મીબાઈ માર્ગ,
પો. નાગદા જંકશન-૪૫૬૩૩૫, જિ. ઉજ્જૈન (મ.પ્ર.)

(૩૭) વેડ દરવાજા – સુરત

સાધ્વીજીશ્રી વિરાગનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, તાપીનગર સોસાયટી, વેડ દરવાજા, સુરત - ૩૯૫૦૦૪(ગુજરાત)

(૩૮) અડાજણ – સુરત

સાધ્વીજીશ્રી યોગનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, પ્રગતિનગર સોસાયટી, કૃષ્ણનગર સોસાયટી સામે, ચોકસીની વાડી પાસે, અડાજણ પાટીયા, સુરત-૩૯૫૦૦૯

(૩૯) ભાયંદર – મુંબઇ

સાધ્વીજીશ્રી રિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાનમંદિર, ૬૦ ફૂટ રોડ, ૫૨ જિનાલય પાસે, પો. ભાયંદર - ૪૦૧૧૦૧, જિ. થાણા, મહારાષ્ટ્ર

(૪૦) તાડદેવ (મુંબઇ)

સાધ્વીજીશ્રી દેવનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : અરવિંદકુંજ, તાડદેવ રોડ, પો. મુંબઇ-૪૦૦૦૦૬, મહારાષ્ટ્ર

(૪૧) ઉમરા – સુરત

સાધ્વીજીશ્રી પાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા

સરનામું : રાજગૃહી એપાર્ટમેન્ટ, પહેલા માળે, બી.એચ. સરગમ શોપીંગ સેન્ટર, પારલે પોઇન્ટ પો. સુરત-૩૯૫૦૦૭

(૪૨) પાલડી – અમદાવાદ

સાધ્વીજીશ્રી સિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૧૦

સરનામું : વૈશાલી ફ્લેટ, પહેલા માળે, પ્રિતમનગર અખાડા પાસે, પાલડી અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૭.

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ - અમદાવાદ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટની સ્મૃતિમાં વૃક્ષારોપણ કાર્યક્રમ યોજાયો

તાજેતરમાં અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ, અમદાવાદ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટની સ્મૃતિમાં વૃક્ષારોપણના કાર્યક્રમનું આયોજન કરાયું હતું. ભાજપ ધારાસભ્ય શ્રી રાકેશભાઇ શાહ અને રાષ્ટ્રીય સ્વયંસેવક સંઘના શ્રી અમરતભાઇ શાહ (ગાર્ડનદાતા), શ્રી અમરતભાઇ મોરખીયા, શ્રી પેલેસ મોરખીયા, શ્રી મહાસુખભાઇ ભણસાળી, શ્રી કીરીટભાઇ ધરુ, શ્રી રીંકિનભાઇ અદાણી, શ્રી શૈલેષભાઇ સંઘવી, શ્રી ગીરીશભાઇ ધરુ, શ્રી રસિકભાઇ દોશી, શ્રી દિનેશભાઇ વોહેરા, શ્રી હાર્દિકભાઇ સંઘવી (આદિ ફાઉન્ડેશન), શ્રી પ્રતિકભાઇ પરીખ (આરમોર ફાઇન્ડેશન), શ્રી ભરતભાઇ વોહેરા વિગેરે પરિષદ સાથી અને સંઘ-સંગઠનથી જોડાયેલ લોકો સાથે મળીને ૨૫૦થી અધિક વૃક્ષોનું રોપણ કર્યું હતું.

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં....

સ્વાધ્યાય સ્નેહી પુણ્ય સમ્રાટની સ્વાધ્યાય નગરી રાજનગરે જ્ઞાન-જ્યોત અભિયાન

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક મંડળ અમદાવાદ દ્વારા સંચાલિત જ્ઞાન-જ્યોત અભિયાનનું ભવ્ય આયોજન કરાયું છે. પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સદ્ઉપદેશથી મુનિરાજ શ્રી જિનાગમ રત્નવિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના દરેક શ્રાવક-શ્રાવિકા અને બાળકોને નીચે મુજબના સૂત્રો કંઠસ્થ કરવા માટેનું આયોજન કરાયેલ છે.

વંદિતુ સૂત્ર - ૨૦૦/-, સકલાર્હત સૂત્ર - ૪૦૦/-, અજિતશાંતિ ૭૦૦/-, અતિચાર સૂત્ર કંઠસ્થ કરનારને રૂ. ૧૧૦૦નો પુરસ્કાર આપવામાં આવનાર છે. ઉપરના ચારેય સૂત્રને કંઠસ્થ કરનાર માટે લક્કી ડ્રોનું આયોજન કરાયું છે. લક્કી ડ્રોમાં પ્રથમ ઈનામ ૭ ગ્રામ સોનુ, દ્વિતીય ઈનામ ૫ ગ્રામ સોનુ, તૃતિય ઈનામ ૩ ગ્રામ સોનુ, ચતુર્થ ઈનામ ૨ ગ્રામ સોનુ, પંચમ ઈનામ ૨ ગ્રામ, સષ્ટમ થી દસમા ઈનામ સુધી ૧ ગ્રામ સોનુ, ૫ થી ૧૦ વર્ષના બાળકો માટે સ્પેશ્યલ લક્કી ડ્રોનું આયોજન પણ કરાયું છે. બાળકોના લક્કી ડ્રોમાં પ્રથમ ઈનામ રૂ. ૧૧૦૦૦, દ્વિતીય ઈનામ રૂ. ૫૧૦૦, તૃતિય ઈનામ રૂ. ૪૧૦૦.

આ વિશેની વિગત માટે શ્રી ચંપકલાલ હીરાલાલ વોરા, શ્રી સુવાસ સિન્થેક્સ રતનપોળ, મો. ૯૮૨૫૦ ૬૬૨૪૫નો સંપર્ક કરવા જણાવવામાં આવ્યું છે. આ સમસ્ત આયોજનો લાભ થરાદ નિવાસી વોરા મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવારે લીધો છે.

સદ્‌ગુરુ સમર્પણમ્

મારા ગુરુ મહાન છે...

(ગતાંકથી ચાલું...)

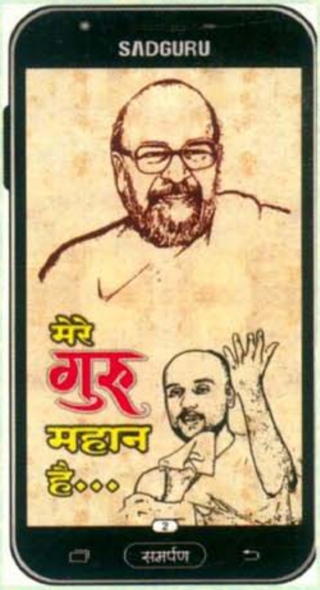

૮૩. ગુરુને સમજવા સરળ કાર્ય નથી.

૮૪. ગુરૂ એક દર્પણ છે જે અમને અમારા આત્મ સ્વરૂપના દર્શન કરાવે છે.

૮૫. ગુરૂ શબ્દમાં મોટી તાકાત છે જેને જોવા માટે ગુરૂમય બનવું પડે છે.

૮૬. ગુરૂ બનવા માટે સારા શિષ્ય બનવું જરૂરી છે.

૮૭. ગુરૂ પર જેને વિશ્વાસ છે તેનો થાય છે વિકાસ.

૮૮. ગુરૂથી માયા કરવાવાળા ગુરૂ છાયાથી દૂર થઇ જાય છે.

૮૯. ગુરૂઅનુશાસન વગર જીવવું વ્યર્થ છે.

૯૦. ગુરૂના અનંત ઉપકારોનું ઋણ કોઇ નથી ચૂકવી શકતું.

૯૧. ગુરૂનું વચન પ્રભુનું વચન. ગુરૂની સેવા પ્રભુની સેવા.

૯૨. ગુરૂઆધ્યાત્મિક જગતના દરેક ક્ષેત્રમાં વિજેતા બને છે.

૯૩. ગુરૂની સન્મુખ પારદર્શક રહે છે એના માટે જ ગુરૂપથદર્શક બને છે.

૯૪. ગુરૂની આજ્ઞારૂપી ઔષધીના સેવનથી કર્મ રોગ નષ્ટ પામે છે.

૯૫. ગુરૂ સમક્તિપ્રદાતા છે, સમક્તિ વિના સર્વ આરાધના નિષ્ફળ થાય છે.

૯૬. ગુરૂની આવશ્યકતા ત્યાં સુધી છે જ્યાં સુધી મોક્ષ પ્રાપ્ત ન થાય.

૯૭. ગુરૂના સંયોગથી જ દોષોથી મુક્તિ મળી શકે છે.

અમદાવાદ મોટેરાના આંગણે ચોસઠ પોરી પૌષધનો માહોલ

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્યશ્રી જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીસાધ્વીજીશ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા અમદાવાદના રાજેન્દ્રનગર, અશોકનગર મોટેરા ખાતે ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યા છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં ધર્મ આરાધનાનો અત્યંત ધર્મમય માહોલ જામ્યો છે. ત્યારે પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં બહેનો માટે ચોસઠ પોરી પૌષધનું આયોજન કરાયું હતું. શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં પૌષધ આયોજનમાં મોટી સંખ્યામાં બહેન જોડાય તે માટે યુવક પરિષદ અમદાવાદના પેલેસભાઈ મોરખીયા, અલ્પેશભાઈ અદાણી અને બિરેનભાઈ મોરખીયાએ જવાબદારી ઉપાડી લીધી હતી અને અત્યંત સફળતા સાંપડી હતી.

અમદાવાદ, રતનપોળ સ્થિત રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિરમાં વિભિન્ન તપશ્ચર્યા સંપન્ન

અમદાવાદ રતનપોળ સ્થિત રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાનમંદિર ખાતે સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યા છે. પ્રતિ રોજ સવારે પ્રવચન વિગેરે વિભિન્ન આયોજનમાં તપશ્ચર્યા પણ થઈ રહી છે.

સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની પાવન પ્રેરણાથી પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ની પુણ્ય સપ્તમીના દિવસે આયંબિલ તપની આરાધના થઈ હતી. સારી એવી સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હતા. ચાતુર્માસ દરમ્યાન દરેક સપ્તમીના દિવસે આયંબિલ કરાવવામાં આવનાર છે. ગુરૂદેવશ્રીના આચાર્યપદના ૩૬ ગુણ નિમિત્તે ૩૬ ભક્તોએ ઉપવાસની તપશ્ચર્યા કરી હતી. ગુરૂદેવના ૮૧ વર્ષના આયુષ્યની સ્મૃતિમાં ભક્તોએ ૮૧ સામયિક અને ધાર્મિક સૂત્રની ૮૧ નવી ગાથાનો પ્રારંભ કર્યો હતો. ૪૫ આગમના એકાસણા થયા હતા, શ્રી નેમિનાથ ભગવાનના જન્મ કલ્યાણક નિમિત્તે સામુહિક સામાયિક કરાવાયા હતા. સમસ્ત કાર્યક્રમો દરમ્યાન રૂ. ૪૦થી ઉપર સંઘ પૂજન થયું હતું.

પરિષદ સંદેશને બકરી ઈદના દિવસે પ્રચંડ સફળતા

સંવત ૨૦૭૫ના શ્રાવણ સુદ ૧૨ ને સોમવાર તા. ૧૨-૮-૨૦૧૯ના રોજ બકરી ઈદ હોઈ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટની સ્મૃતિમાં ઈદના દિવસે અબોલ પશુઓના આત્મશ્રેયાર્થે સામુહિક આયંબિલ, સામુહિક નવકાર જાપ, ખાવામાં સફેદ વસ્તુનો ત્યાગ, વિગેરેનો પ્રતિવર્ષની જેમ આ ઈદના દિવસે પણ સકળ સંઘ અને ભારતભરની પરિષદ શાખાઓને અનુરોધ કરાયો હતો. પરિષદ પરિવારના આ સંદેશને ભારતભરના ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોએ વધાવી લીધો હતો અને ઠેર ઠેર મોટા પ્રમાણમાં આયંબિલની તપશ્ચર્યા થઈ હતી તેમજ નવકાર મહામંત્રના કરોડો સામુહિક જાપ થયા હતા. અમદાવાદની આયંબિલ શાળાઓમાં આરાધકોની લાઈનો લાગી હતી અને જાપ માટે બધા જ ઉપાશ્રયો ખીચોખીચ ભરાઈ ગયા હતા, બકરી ઈદના દિવસે પરિષદ સંદેશને પ્રચંડ સફળતા સાંપડી હતી.

પાલડી અમદાવાદ ખાતે... શક્રસ્તવ મહા અભિષેક કાર્યક્રમ સંપન્ન

પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શુભ આશિર્વાદથી શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ની આજ્ઞાથી અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા, અમદાવાદ, અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન તરુણ પરિષદ દ્વારા વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા., સાધ્વીજીશ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિ સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં સંવત ૨૦૭૫ના શ્રાવણ વદ - ૮ ને શનિવાર તા. ૨૪-૮-૨૦૧૯ના રોજ રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન પાલડી ખાતે સવારે ૯ કલાકથી શક્રસ્તવ મહા અભિષેકનો ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

(અમદાવાદ) રાજનગરે અનોખા પ્રાયશ્ચિતનો પ્રારંભ

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં શ્રી નેમિનાથ ભગવાનના જન્મકલ્યાણક નિમિત્તે તેમજ મુનિરાજ શ્રી નિર્વાણરત્ન વિજયજી મ.સા. અને મુનિરાજશ્રી નિધાનરત્ન વિજયજી મ.સા.ના જન્મ દિવસ નિમિત્તે અઠ્ઠમ તપ સાથે સાંવત્સરિક પ્રાયશ્ચિત કરવાની અનોખી શરૂઆત કરાઇ હતી. આ અનુષ્ઠાનનો લાભ અદાણી શારદાબેન કીર્તિલાલ ગગલદાસ નાગરદાસ પરિવારે લીધો હતો.

વિતરાગ સર્વજ્ઞ પ્રભુએ આત્માને લાગેલા વાર્ષિક કર્મોનું પ્રાયશ્ચિત કરવા અર્થે માર્ગ બતાવ્યો છે તપ ધર્મનો... સાંવત્સરિક પ્રતિક્રમણ કરવા પૂર્વે આ તપ આરાધનાપૂર્વક કરવાથી સમસ્ત વર્ષના પાપનું પ્રાયશ્ચિત પૂર્ણ કરી શકાય છે.

- મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા.

ખુશી સંઘવીનું બહુમાન

પુણ્ય સમ્રાટ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષથી ભારતભરમાં સી.એસ.ની પરીક્ષામાં પ્રથમ સ્થાન પ્રાપ્ત કરી સંઘ અને પરિષદનું નામ રોશન કરવાવાળી ખુશી સંઘવીનું અમદાવાદ ખાતે સંઘ તથા પરિષદ અમદાવાદ દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું.

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક સંઘના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તથા શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઇ વોરા, સાંસદશ્રી કિરીટભાઇ સોલંકી, ધારાસભ્ય શ્રી રાકેશભાઇ શાહ, કાઉન્સીલર શ્રી સુજલજી મહેતા, ગુજરાત પરિષદ અધ્યક્ષશ્રી અરવિંદભાઇ દેસાઇ, અમદાવાદ પરિષદ અધ્યક્ષ શ્રી ભરતભાઇ વોહેરા (લાડુ), શ્રી ચંપકભાઇ વોરા, શ્રી પેલેસભાઇ મોરખીયા, શ્રી બિરેનભાઇ લાખણીના આતિથ્યમાં ખુશી સંઘવીનું બહુમાન કરાયું હતું.

નાગદા નગરમાં ઐતિહાસિક સામૂહિક આયંબિલ

નાગદા નગરમાં સાધ્વીજી શ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા આ વર્ષનું ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યાં છે.

સાધ્વીજી ભગવંતોની પ્રેરણાથી નવ દિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના સંપન્ન થઈ. જેમાં નવેય દિવસના એકાસણાનો લાભ નવ પરિવારોએ લીધો હતો.

તા. ૧૨-૮-૨૦૧૯ના રોજ બકરી ઈદના દિવસે જીવદયા હેતુ સામૂહિક આયંબિલ ૪૦૦ આયંબિલના લક્ષ્ય સાથે સાધ્વીજી મ.સા.એ પ્રેરણા કરી હતી. શ્રી સંઘ, મધુકર ચાતુર્માસ સમિતિ અને અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર નવયુવક પરિષદ પરિવાર નાગદાના વિશેષ સહયોગથી શ્રી પાર્શ્વ પ્રધાન પાઠશાળા ભવન, રાની લક્ષ્મીબાઈ માર્ગ ખાતે સવારે ૯-૩૦ કલાકે સાધ્વીજી શ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. અને સાધ્વીજી શ્રી મંગલપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ના સામૂહિક પ્રવચનના મંગલમય અવસર સાથે અબોલ પશુઓના આત્મશ્રેયાર્થે પ્રવચન બાદ ૧૧-૩૦ કલાકે આદિનાથ ફેમિલી ગ્રુપ દ્વારા ઐતિહાસિક સામૂહિક આયંબિલનું આયોજન કરાયું હતું. નવકાર મહામંત્ર આરાધના સમાપન રક્ષાબંધનના બીજા દિવસે આરાધકોને પારણા કરાવાયા હતા. લાભાર્થી ગ્રુપ દ્વારા આયંબિલમાં લક્કી ડ્રોનું આયોજન કરાયું હતું. મધુકર ચાતુર્માસ સમિતિના અધ્યક્ષ શ્રી દિલીપજી ઓરા અને સચિવ શ્રી બ્રજેશજી બોહરાએ સહુનો આભાર માની અનુમોદના કરી હતી.

નાગદા રત્ન સંઘ પરિષદ મીડિયા પ્રભારી શ્રી બ્રજેશજી બોહરાને ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર અભિનંદન પાઠવે છે.

હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ

થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં છેલ્લાં ૪૦ વર્ષથી અવિરત સેવા આપતા અણીશુદ્ધ ચારિત્ર્યવાન, પીઢ અનુભવી શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ થરાદના પ્રમુખ શ્રી ચંપકલાલ હાલચંદભાઈ દેસાઈનું તાજેતરમાં થરાદ ખાતે દુ:ખદ અવસાન થયેલ છે. એમના સદ્ગત આત્માને પ્રભુ ચિર શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ...

સ્વ. ચંપકલાલ હાલચંદભાઇ દેસાઇને

શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર તથા સંઘવી હિંમતલાલ હાલચંદભાઈ પરિવાર અંતઃકરણપૂર્વક હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ અર્પે છે.

ચેતનાબેન - ઉષાબેન - કીરણબેન આ ત્રણેય સુપુત્રીઓને જિનશાસનમાં અર્પણ કરનાર સંસારી માતુશ્રી અદાણી શારદાબેન ધનજીભાઈનું તાજેતરમાં સુરત ખાતે દુ:ખદ અવસાન થયેલ છે. જેમની ત્રણેય સુપુત્રીઓ પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના સમુદાયમાં ક્રમાનુસાર પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ચૈત્યપ્રિયાશ્રીજી મ.સા., પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ઉપસમપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. અને પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વિવેકપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. શુદ્ધક્રિયા સાથે વિરતીધર્મનું ચુસ્તપણે પાલન કરી રહ્યા છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની સંસારી સ્વર્ગસ્થ માતુશ્રીની ભુરી ભુરી અનુમોદના સાથે તે સદ્ગત આત્માને પ્રભુ ચિર શાંતિ અર્પે એ જ અભ્યર્થના સહ...

સ્વ. શારદાબેન ધનજીભાઇ અદાણીને

શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર અંતઃકરણપૂર્વક હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ અર્પે છે. - સુરેશ સંઘવી

(ગાયત્રી પંચાગ) થરાદ નિવાસી પ્રખર જ્યોતિષાચાર્ય શ્રી રઘુનાથજી ચુનીલાલ દવેનું તા. ૧૮-૮-૨૦૧૯ના રોજ અમદાવાદ ખાતે દુ:ખદ અવસાન થયેલ છે. જે સદ્ગત આત્માને પ્રભુ ચિર શાંતિ અર્પે એ જ અભ્યર્થના સહ...

સ્વ. રઘુનાથજી શાસ્ત્રીને

શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર અંતઃકરણપૂર્વક હાર્દિક શ્રદ્ધાંજલિ અર્પે છે.

સ્વર્ગ યહી નરક યહી ઇસકે સિવા જાના કહાં

આપણે જીવનભર સ્વર્ગ-નરકની વાતોથી ભ્રમિત થઈ ફર્યા કરીએ છીએ. આ લોક અને પરલોકમાં, ધરતી ઉપર અને આકાશમાં સ્વર્ગ- નરકની શોધમાં શાસ્ત્રો, કથાઓ, સત્સંગમાં શોધી અને ભટક્યા કરીએ છીએ.

ભગવાનને પ્રાપ્ત કરવા, સ્વર્ગ કે મોક્ષ પ્રાપ્ત કરવાનો રસ્તો માત્ર ધાર્મિક કર્મકાંડ જ નથી, કેવળ પરલોકમાં મૃત્યુ પછી સ્વર્ગલોક પ્રાપ્ત કરવાનો આધાર જ માત્ર નથી, પરંતુ આ જે જીવન મળ્યું છે તેમાં સુખ- શાંતિથી, સદાચારથી, ધર્મમાં ઓત્તપ્રોત થવાનો રસ્તો છે. મૃત્યુ પામ્યા પછી સ્વર્ગ મળશે કે નહિં એ આપણે જાણતા નથી. પરંતુ આધ્યાત્મિક સાધનાના માર્ગ ઉપર ચાલતા રહીને જે જીવન મળ્યું છે તેમાં સ્વર્ગની સ્થાપના કરી શકીએ છીએ.

આયુર્વેદની ચરક સંહિતામાં સ્પષ્ટ લખ્યું છે કે

આલોકમાં કે મરણ પછીનાં પરલોકમાં જે પરમ સુખ અનુભવાય છે તે દરેક પ્રાણીઓની પરમ મનની શાંતિ ને જ આધીન છે. અર્થાત સ્વસ્થ એના શાંતિમન એ જ પરમ શ્રેષ્ઠ સુખ-શાંતિ અને મુક્તિ છે. એજ સ્વર્ગ છે. એજ નરક છે. અશાંત ભટકતું મન જ મોટામાં મોટું દુઃખ બંધન છે.

ભગવત્ ગીતાનું વાંક્ય છે કે' પ્રસન્ન ચેતસોહયાશુ બુધ્ધિં પર્યવતિષ્ઠતે' (અધ્યાય૨)

જો કોઈ 'મન' કો પરખલે તાકો કાલ ન ખાય.

જગતમાં જે કંઈ મેળવવાની ઝંખના છે. લોલુપતા છે. એ દેહ ઈર્ષા છે. લોભ છે કામ-ક્રોધ તે સર્વે અસ્વસ્થમન થી થાય છે.

પછી એ ઝંખના સત્તાથી હોય, કે પૈસા માગતી હોય કે મોક્ષની પરંતુ ઝંખના તે ઝંખના જ છે અને લોભ વૃત્તિથી ભરેલા પોટલા પૈસાના હોય કે પુણ્યનાં પરંતુ તે વૃત્તિઓ એક મનની આકાંક્ષીય વૃત્તિજ છે, બંધન છે. અને તે દરેકમાં અસ્વસ્થ મનજ કારણભૂત છે.

કોણ સુખી છે ? અને કોણ દુઃખી છે? મનનાં વિચારો જ આપણને સુખી-દુઃખી કર્યા કરે છે. મહત્વાકાંક્ષાઓ જ વ્યકિતને, ઈર્ષામાં સળગાવી શાંતિ હણે છે. શાંત-સંતુષ્ટ સાત્વિક વિચાર વાળા મનુષ્યો માટે અહિં જ શાંતિને મુક્તિ કે મોક્ષ છે.

સ્વર્ગ મનુષ્યની દૃષ્ટિ અને વિચાર કરવાની રીતમાં જ રહેલું છે. એ કોઈ વિશેષ જગ્યાનું નામ નથી. સ્વર્ગની એ કલ્પના કરવી પણ વ્યર્થ છે કે જે આપણને મર્યા બાદ મળે છે. સુખ-શાંતિ, સંતોષ-પ્રેમ- સર્વપ્રાણીઓ પ્રત્યે દયાભાવ, શ્રદ્ધા વિગેરે વાળું જીવન જ સ્વર્ગ છે કલેશ ઝઘડા, દુશ્મની, વેર, ઝેર, ખરાબ કાર્યો કરવાવાળું જીવન, વ્યસન યુક્ત ઉદ્વેગ, અસંતોષવાળું જીવન જ નરક છે.

પ્રાણિમાત્રની વેદના અને પ્રાણીઓનાં દુઃખો દુર કરવાની વૃત્તિ એ જ સાચા સ્વર્ગનું પ્રમાણ છે. એ જ કામનાઓ કરભલા તો હોગા ભલાનું સૂત્ર સાર્થક કરીને જીવનને ઉજાળે છે.

નત્વહં કામયેત રાજ્યં ન સ્વર્ગ ન પુનર્ભવ :મ

કામયેત દુઃખ તપ્તાનાં પ્રાણિનાં આર્તનાશનમ્'

પ્રાણિમાત્રોના દુઃખો દૂર કરવાની વૃત્તિ જ જીવનને સ્વર્ગ બનાવી દે છે. પરોપકાર એ જ ધર્મ છે એક બીજાને પિડા આપવી એ જ અધર્મ છે.

સાભાર - ધર્મલોક (ઉમાકાંત જે જોષી)

(प्रांसङ्गिकम्)

क्षमा करना बहुत सरल है !!!

(पुण्यसम्राट् गुरुदेव श्री के शिष्य मुनि श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)

'क्षमा' शब्द लिखने, बोलने, पढ़ने, सुनने में 1/2 सेकण्ड ही लगते हैं, लेकिन क्षमा को जीवन में अनुशरण करने का कार्य सरल है या कठिन ? इसका आधार तो हमारी मनोदशा पर ही निर्भर है। जहाँ तक मन निर्मल नहीं हो, वहाँ तक क्षमा की महिमा हमें प्रभावित नहीं कर सकती। मन भी तब तक ही मलिन है जब तक वह कषायों से घिरा हुआ है। इसके लिये एक मात्र उपाय है- जिनवचनों का श्रवण...

कषायों के कारण ही हमारी आत्मा अनादिकाल से संसार में भ्रमण कर रही है। क्रोध-मान-माया-लोभ इन चारों ने मिलकर हमारी आत्मा का शुद्ध स्वरूप आच्छादित कर दिया, उसे संसार चक्र में इस तरह उलझा दिया कि वो निकल ही न पाये। लेकिन फिर भी इन कषायों के साम्राज्य को परास्त करने का सामर्थ्य आत्मा में है। ऐसा दिव्यबोध 'जिनवचन श्रवण' द्वारा होने पर आत्मा ने अपना बल-सामर्थ्य प्रगट किया। जैसे जंगल में शेर के दहाड़ने पर सभी हाथी भाग जाते हैं। वैसे कर्मरूपी हाथी भी आत्मा का अजोड़ गुण सामर्थ्य देखकर भाग जाते हैं । कषायों की भयानकता का स्वरूप समझाते हुए प्रशमरति (गाथा-25) दशवैकालिक सूत्र (गाथा-8/38) संबोध सित्तरी (गाथा-69) में लिखा है क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रता का नाश करती है, लोभ सर्वविनाश करता है। ऐसे कषायों का आचरण दुःख का कारण होने से आत्मा को अनंतकाल तक नरकादि भवों में ले जाने वाले मार्ग का नायक है, दिशादर्शक है। क्रोध से शत्रुता खड़ी होती है, मान समाधान नहीं करने देता, परिणाम शत्रुता वैर में बदल जाती है, जो विराम न होने पर भवोभव तक चलती रहती है। समरादित्य कथा, इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। ऐसे भयंकर कषायों को जीतने का मार्ग भी शास्त्रकारों ने बताया है। योगसार (गाथा- 11) दशवैकालिक सूत्र (गाथा - 8/39) प्रशमरति ग्रन्थ (गाथा- 165) में लिखा है।

क्षमा द्वारा क्रोध का, नम्रता द्वारा मान का, सरलता द्वारा माया का एवं संतोष द्वारा लोभ का नाश करना चाहिये। जिस तरह रोगनाश के लिए औषधि का सेवन अतिआवश्यक है, उसी तरह कषायनाश के लिये भी शास्त्रवचनों का अनुशरण अत्यावश्यक है। बिमारी सामान्य हो तो औषधि की मात्रा कम होती है, अधिक होने पर अधिन दिन लेना पड़ती है, वैसे कषायरूपी रोग भी लम्बे समय से हमारी आत्मा को लगा है, अतः उसे दूर करने के लिये औषधि सेवन भी अधिक समय तक करना पड़ेगा। शास्त्रों में लिखा है कि कर्जा, जख्म, अग्नि एवं कषाय अल्प हो तो भी उनका विश्वास करने जैसा नहीं है, क्योंकि ये चारों अल्प भी बहुत अधिक है। ये कभी भी विराट रूप धारण कर सकते हैं।

'पर्वाधिराज पर्युषण' का यही संदेश है कि मन की शुद्धि किये बिना की जाने वाली आराधना निष्फल है। प्रतिक्रमण के लिये स्थान शुद्धि, उपकरण शुद्धि, सूत्र शुद्धि आवश्यक है, वैसे मन की शुद्धि भी अति-आवश्यक है। हम शरीर शुद्धि के लिये प्रतिदिन स्नान आदि क्रिया करते हैं, लेकिन चित्तशुद्धि की उपेक्षा ही हमारे संसार वृद्धि का मुख्य कारण है। उसका विस्मरण कर देते हैं।

अध्यात्मसार में उपाध्याय श्री यशोविजयजी ने लिखा है

चित्तमेव हि संसारो, रागक्लेशादिवासितम्।
तदेव तैर्विनिर्मुक्तं, भवान्त इति कथ्यते ।।

रागादि क्लेशों से ग्रस्त चित्त (मन) ही संसार है, उससे मुक्त - रहित चित्त मोक्ष है। अर्थात् कषायों से मुक्ति ही मोक्ष मार्ग है। इन जिनवचनों को पूर्ण श्रृद्धा के साथ आत्मसात् करने पर मोक्ष प्राप्ति सरल है, तो क्षमावान बनना कैसे कठिन हो सकता है ? क्षमा मांगने से पूर्व मन में संग्रहित सभी बातों को डिलिट (मिटाना) करना जरूरी है। क्षमा देने से पूर्व मन को खाली करना जरूरी है। इन कषायों ने सबसे पहला नुकसान हमारी आत्मा का ही किया है, ऐसे कषायों की छाया भी हमें नहीं लेना चाहिये।

पर्युषण पर्व कहता है - **मन को करो फ्रेश (तरोताजा) , दूर करो क्लेश... जाना है स्वदेश (मोक्ष) यही है प्रभु का संदेश...** ■■

क्षमा-समझो और समझाओ

(पुण्यसम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व-पाटण)

क्षमा - गलती को मत रखो जमा
क्षमा - अहंकार का विसर्जन
क्षमा - सद्भावों का सर्जन
क्षमा - मलिनता का वर्जन
क्षमा - निर्मलता का गुंजन
क्षमा - जिनशासन की विशालता
क्षमा - मैत्रीभावों की धड़कन
क्षमा - क्रोध का शमन
क्षमा - हृदय की विराटता
क्षमा - अपराधों का स्वीकार
क्षमा - नम्रता का अनुशरण
क्षमा - मन का शुद्धिकरण
क्षमा - गुणों का प्रगटीकरण
क्षमा - भूलों का विस्मरण
क्षमा - आत्मशुद्धि का संकल्प
क्षमा - जिनाज्ञा का पालन
क्षमा - सिद्धदशा की अनुभूति
क्षमा - समता का आस्वादन
क्षमा - संवाद का आनंद
क्षमा - समाधान का द्वार
क्षमा - धर्मजगत् में प्रवेश
क्षमा - परमार्थ दृष्टि की प्राप्ति
क्षमा - कर्म का पराजय
क्षमा - समभाव का सेतु
क्षमा - आत्मा का विजय

■ ■

कुमकुम सने पगलिये

पिपलौदा में ऐतिहासिक चातुर्मास

श्री गच्छाधिपतिजी के नेतृत्व में हर क्षण धर्माराधना का नया आयाम बना

पिपलौदा। यहाँ गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा., मुनिमंडल तथा साध्वी समुदाय का पावनीय चातुर्मास श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर अभूतपूर्व उत्साह के साथ निरंतर है। गच्छाधिपतिश्री के साथ मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म., मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म., मुनिराजश्री प्रशमसेनविजयजी म., मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म. तथा मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म. मुनिमंडल बिराजमान हैं। साध्वी श्री भाग्यकलाश्रीजी म. आदि ठाणा साध्वी समुदाय भी है। प्रतिदिन भव्य सजे मण्डप में गच्छाधिपतिश्री के प्रवचन विभिन्न विषयों पर हो रहे हैं। मुनिराज श्री विद्वद्रत्न विजयजी महाराज विक्रम चरित्र पर अपने प्रवचन प्रदान कर रहे हैं। सर्वप्रथम मुनिराज तारकरत्न विजयजी महाराज अपनी भावना की प्रार्थना सामूहिक रूप से करवाते हैं तथा मुनिराजजी श्री प्रशमसेन विजयजी महाराज, श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा. आदि उपस्थित रहते हैं।

गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि गति देने का काम विज्ञान करता है तो सम्यक दिशा देने का काम धर्म करता है। विज्ञान में प्रयोग पर जोर तो धर्म में योग पर जोर है। विज्ञान तारक बने यह निश्चित नहीं है परन्तु धर्म मारक कदापि नहीं बनता यह निश्चित है। विज्ञान की राह पर मानव शैतान बन सकता है परन्तु धर्म की राह पर आत्मा परमात्मा बनकर रहती है। मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि रिमझिम बारिश जैसी प्रभु की वाणी होती है जिस प्रकार रिमझिम बारिश से जनमानस के चेहरे प्रसन्न हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार गुरु की वाणी को सुनते-सुनते आत्मा पर लगे हुए कर्मों के पाप धुल जाते हैं। जैसी मति वैसी गति होती है। अंत समय में अच्छे विचार आने पर सद्गति प्राप्त होती है अन्यथा संसार के बारे में सोचने पर तो दुर्गति होती है। मुनिराजश्री विद्वद्रत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि जीवन में संघर्ष तो आते हैं, सुख-दुख तो आते हैं लेकिन इनके आने का कारण कोई नहीं जानना चाहता। सभी को लगता है कि यह तो हमारे नसीब में लिखा है। हम प्रभु का, गुरु का स्मरण करना भूल जाते हैं लेकिन सांसारिक जीवन में जो कार्य है उनको कभी नहीं भूलते। जिन्होंने प्रभु व गुरु का स्मरण कर लिया उनकी वाणी का स्मरण कर लिया उनको जीवन में सफलता निश्चित प्राप्त होगी। साथ ही बताया कि

माँ-बाप की आँखों में आंसू दो बार आते हैं पहला बेटा रख नहीं सकता व दूसरा बेटी ससुराल जाती है बाकी लोग तो रोना व्यवहार से रोते हैं। समाज में व्याप्त ऐसी अनेक कुरूतियों को मिटाने हेतु समाजजनों को जाग्रत होने की आवश्यकता है।

एक अन्य प्रवचन में गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि सभी का लक्ष्य अलग-अलग होता है, राह और तौर तरीके भी भिन्न-भिन्न होते हैं। अपनी लक्ष्य पूर्ति के लिए वे सदैव सावधानी रखते हैं। हर एक व्यक्ति अपना प्रयास, प्रयत्न करता रहता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि में प्रयत्न अपना बहुत बड़ा महत्व रखता है। बड़े-बड़े संशोधकों ने खोज के पीछे अपने आप को लगाया। प्रयास जारी रखा, तभी उन्हें सफलता मिली। इसलिए जीवन में सफलता चाहते हो तो देव गुरु और धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा के साथ उनकी बातों का अनुसरण करना पड़ेगा। मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि नवकार जैसा महामंत्र, शत्रुंजय जैसा तीर्थ, वीतराग जैसे देव होने से शुभ प्रवृर्ति में रहना चाहिए। पाप और पुण्य के कर्मों से सुख-दुख आते रहते हैं सुख व दुख के समय धीरज रखना चाहिए। ये समय भी चला जायेगा इसका भी चिंतन करना चाहिए हर मानव के धर्म के अपने-अपने मंत्र हैं उसकी ध्यान साधना करना चाहिए। साधना एक स्थान, एक आसन, एक माला से श्रद्धा समर्पण के साथ करना चाहिए। जिस प्रकार एक म्यिान में दो तलवार नहीं रहती ठीक उसी प्रकार से ध्यान साधना के समय एक साथ दो कार्य नहीं करना चाहिए। साधना से सिद्धि प्राप्त होती है और सिद्धि प्राप्त होने पर सभी शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। मुनिराज विद्वद्रत्न विजयजी म.सा. ने बताया कि जीवन में मन, वचन, काया की शुद्धि होना आवश्यक है। मन कोरे कागज जैसा होता है जब जैसा निमित्त मिलता है वैसा मन सोचने लग जाता है। उससे शुभ-अशुभ कर्मों का बंधन हो जाता है। मन को अपने नियंत्रण में रखना चाहिए जिससे वचन और काया में भी विकार आ जाते हैं। जिस प्रकार आत्मा दिखती नहीं उसी प्रकार मन भी नहीं दिखता। मन ही कर्मों में उलझाने का कार्य करता है। साथ ही बताया कि पिपलौदा पावन बनेगा और पावन रहेगा।

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि मौन में अलौकिक शक्ति होती हैं मौन में व्यक्ति बाह्य परिभावों से विरक्त होकर स्वभाव के अथाह सागर में डुबकी लगाता है।

जिससे आत्मशुद्धि के साथ ही शुभ भावनाओं रूप रत्नों की प्राप्ति सुलभ होती है। मौन जीवन की संपदा व जीवन का बल है। मौन को उल्टा करने से यही मौन नमो बन जाता है।

प्रवचन कार्यक्रम का संचालन श्री राकेश जैन (इंदौर) तथा श्री शिखर बोहरा कर रहे हैं। श्री हर्ष कटारिया भी सहयोग कर रहे हैं। ■ ■

श्री नवकार आराधना में 508 आराधक

पिपलौदा। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर चल रहे चातुर्मास उत्सव के अंतर्गत गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के मंगल सान्निध्य में श्री नमस्कार महामंत्र का नव दिवसीय जाप प्रारंभ हुआ। इस जाप की परम्परा को राष्ट्रसंत युग प्रभावक जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रारंभ किया गया था। तबसे निरंतर प्रत्येक चातुर्मास के अन्तर्गत जाप का विराट् आयोजन होता है। इस बार श्री नवकार आराधना में 508 आराधक सम्मिलित हुए।

नगर में दिनांक 7 अगस्त से प्रारंभ हुई श्री नमस्कार महामंत्र की आराधना हेतु श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर सैकड़ों आराधक पहुँचे। आराधकों की सेवा हेतु चातुर्मास समिति द्वारा सभी कार्यकर्ताओं को अलग-अलग जिम्मेदारियां दी गई व आराधकों के लिए आवास व्यवस्था, आने जाने हेतु वाहन व्यवस्था भी की गई। सभी आराधकों ने अपना पंजीयन करवाकर अपने परिचय पत्र प्राप्त किये। 9 दिवसीय इस आराधना की पूर्णाहुति 15 अगस्त को हुई। सभी का पारणा 16 अगस्त को रहा। प्रातः 5.30 बजे से सभी आराधकों ने पुण्य सम्राट प्रवचन मंडप में पहुँचकर धार्मिक क्रिया प्रारंभ की। सात तीर्थों की यात्रा करवाई- प्रथम दिवस नमो अरिहंताणं पद के सात तीर्थ श्री नवकार तीर्थ, श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, श्री अष्टापद तीर्थ, श्री रिंगणोंद तीर्थ, श्री हत्थुडी तीर्थ, श्री तालनपुर तीर्थ, श्री नंदीवर्द्धनपुर तीर्थ की गच्छाधिपति श्री द्वारा महाराजा की स्थापना कर संगीतमय नवकार भाव यात्रा प्रारंभ करवाई साथ ही लाभार्थी परिवार द्वारा अष्टप्रकारी पूजा भी की गई।

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि नवकार मंत्र में नौ पद व आठ संपदा हैं। सात अक्षर के तीन, आठ अक्षर के तीन नौ अक्षर के दो, पाँच अक्षर का एक पद है इस प्रकार नवकार महामंत्र में कुल अड़सठ अक्षर होते हैं। नवकार में परम श्रेष्ठ स्थान रूप आत्मभाव भरा हुआ है। श्रद्धावान पुण्यवान के सतत् साथ रहने के प्रभाव की प्रतीति होती है और साधना रत साधक को इसके प्रत्येक पद का उत्कृष्ट चिंतन करते-करते स्वभाव के दर्शन होते हैं। इसमें अरिहंत और सिद्ध दोनों देव तत्व हैं। आचार्य उपाध्याय व साधु तीन गुरु पद हैं। अतः जिसे पंच परमेष्टि पद भी कहा जाता है साथ ही दर्शन ज्ञान चारित्र व तप ये चार पद मिलने से श्री नवपद मण्डल (सिद्ध चक्र) बनता है।

वर्तमान में सभी मानव मोबाइल का नम्बर याद रखते हैं ठीक उसी प्रकार नवकार का भी कोड नं. 757798889 याद रखने की आवश्यकता है। चातुर्मास के अंतर्गत प्रतिदिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों का गच्छाधिपतिजी के दर्शन वंदन हेतु आगमन हो रहा है।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर पूर्व ऊर्जामंत्री व नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय

उपाध्यक्ष पारस जैन ने गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व मुनि मंडल का आशीर्वाद लिया साथ ही दादा पार्श्वनाथ व दादा गुरुदेव के दर्शन लाभ लिए। श्रीसंघ व लाभार्थी परिवार द्वारा श्री जैन का शाल-श्रीफल भेंट कर बहुमान किया।

प्रतिदिन चल रही तप आराधना - अष्टसिद्धि महातप की आराधना में मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा. के साथ ही श्रावक भंडारी पारा के 14 व मानसी बोहरा के उपवास की तपस्या चली है।

जैन सेमिनार आयोजित - जैनों को अल्पसंख्यक दर्जे से होने वाले लाभ की जानकारी हेतु सेमिनार का आयोजन किया गया। आयोजन में आल इंडिया जैन माइनोरिटी फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी, राष्ट्रीय महामंत्री संदीप भंडारी, राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ भंडारी, प्रदेश महामंत्री अजय खेमसरा, अनिल धारीवाल, श्री संघ अध्यक्ष बाबुलाल धींग व चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर मंचासीन थे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गांधी ने आयोजित सेमिनार में जैनों का अल्पसंख्यक दर्जे से मिलने वाले लाभ के बारे में बताया साथ ही सभी अतिथियों ने गच्छाधिपति श्री का आशीर्वाद लिया। अतिथियों का बहुमान लाभार्थी सुरेश बोहरा परिवार द्वारा किया गया।

यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की परीक्षा- यतीन्द्र ज्ञानपीठ परीक्षा प्रभारी मनीष बोहरा ने बताया कि पुण्य सम्राट द्वारा स्थापित एवं अभा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा प्रकाशित पाठ्यक्रम के सभी भागों की परीक्षा दिनांक 28 जुलाई रविवार को युनिक कान्वेंट स्कूल पिपलौदा पर दोपहर आयोजित हुई।

नवकार ध्यान साधना सम्पन्न- गच्छाधिपति श्री व साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में श्रीमती वंदना राकेश आंचलिया नीमच द्वारा नवकार ध्यान साधना का विशेष आयोजन किया गया जिसमें जन मानस को ध्यान के बारे में बताया कि ध्यान में मौन शांत वातावरण एवं स्थिर रहना आवश्यक है। इसके साथ नवकार मन्त्र के पदों पर जनमानस का ध्यान केन्द्रित कर पुण्य सम्राट की छवि का अहसास शब्दों के माध्यम से करवाया साथ ही पिपलौदा श्री संघ द्वारा श्रीमती वंदना आंचलिया को विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में ध्यान उपासिका की उपाधि से नवाजा गया।

पत्रिका का किया विमोचन- दिनांक 24 अगस्त को भगवान श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर गच्छाधिपति श्री की निश्रा में आयोजित 'मातृ पितृ वंदना' पत्रिका का विमोचन किया गया जिसका लाभ शिवपुरी गोस्वामी परिवार पिपलौदा द्वारा लिया गया।

पिपलौदा- पावनीय चातुर्मास महोत्सव के दौरान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में भगवान नेमिनाथ जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया गया। महाअभिषेक के लाभार्थी अजित कुमार मोतीलाल जैन परिवार द्वारा भिन्न -भिन्न प्रकार की दुर्लभ औषधियों से भगवान का महाअभिषेक किया साथ

ही नगरवासियों ने भी पूजा की एवं भगवान के संगीतमय महाअभिषेक का लाभ लिया। विधिकारक मनीष जैन व अक्षत सेठ अहमदाबाद ने विधिविधान से अभिषेक सम्पन्न करवाया। गच्छाधिपति श्री ने भगवान के जन्मदिवस के अवसर पर कहा कि जन्मदिन उसी का सफल है जो स्वपर हित काम करे। मानव भव में आने पर सर्वोत्तम कार्य कर सुदेव, सुगुरु, सुधर्म की आज्ञा का पालन करना चाहिए व आज्ञा पालन करते हुए अपने जीवन को सुचारू रूप से सुंदर व व्यवस्थित बनाना चाहिए।

मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने अभिषेक के श्लोक बोलकर अभिषेक की महत्ता के बारे में बताया। मुनिराज विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने बताया कि प्रभु का जब मां के गर्भ में ध्यवन होता है तब से ही वो तीन ज्ञान- मति, श्रुत, अवधि ज्ञान लेकर आते हैं।

■ ■

विवेक दृष्टि जीव सर्वत्र गुणों को देखता है

सरधना। मेरठ जिले में सरधना शहर के बिनौली रोड़ स्थित महादेव मंदिर में आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी की 28 वीं मासिक पुण्यतिथि एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर श्री गुरुराज फाउंडेशन के तत्वावधान में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 200 से अधिक मरीजों ने अपना इलाज करवाया। इसी अवसर पर भव्य सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी ने कहा कि आज एक ऐसे दिव्य महापुरुष का जन्मदिन है, जिन्होंने कारागृह की शलाकाओं में भी जन्म लेकर समग्र मानव जाति को स्नेह-प्रेम-मैत्री-शांति और समृद्धि का उपहार दिया। श्रीकृष्णजी ने धरती पर फैले अत्याचार को मिटाने के लिए मानव रूप में अवतार लिया था। जब-जब भी धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब परमात्मा साकार रूप में जन्म लेते हैं। प्रभु को जिस रूप में भक्त भजता है, उसी रूप में भगवान उसे दर्शन देते हैं। जिसकी विवेक दृष्टि, गुणदृष्टि जागृत हो जाती है वह सर्वत्र गुणों को ही देखता है। नरेन्द्र गोलेचा (उज्जैन) एवं निम्बाहेड़ा के सागरमलजैन ने आयुर्वेदिक दवाइयां देने का सेवा कार्य किया। सत्संग के पश्चात् महादेव मंदिर कमेटी एवं चौक बाजार के जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ ने आभार व्यक्त किया।

■ ■

आचार्यश्री का अवतरण दिवस अहिंसा दिवस के रूप में मना

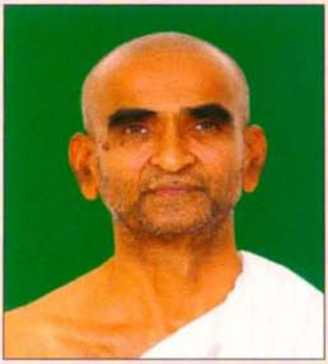

धानेरा । आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का 60 वाँ अवतरण दिवस दिनांक 3 अगस्त 2019 को अहिंसा दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

प्रातः गुणानुवाद सभा आचार्यदेवेशश्री आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की निश्रा एवं नगरपालिका अध्यक्ष श्री युसुफ पठान व नगरपालिका ई.ओ. श्री जोशीजी के मुख्य आतिथ्य में प्रारंभ हुआ।

आचार्यदेवेशश्री ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि मेरी जीवन यात्रा को इस मुकाम पर पहुँचाने का परम उपकार एवं श्रेय वचनसिद्ध, योगिराज संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म.सा. एवं राष्ट्रसंत पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का है। जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्ग प्रदर्शित कर जिनशासन के कार्यों के निष्पादन के लिए अपना आत्मीय आशीर्वाद प्रदान किया। मैं उन दोनों पुण्यात्माओं का सदैव ऋणी रहूंगा। धानेरा नगरी पुण्यवन्त आचार्यदेव श्रीमद् विजय धनचन्द्रसूरिजी की पाटगादी है। जैन समाज एवं हिन्दू समाज द्वारा श्रावण मास एवं पर्युषण पर्व के दिनों में चल रहे अवैध बूचड़खाने बंद करवाने हेतु अपना मन्तव्य रखा। जिस पर उपस्थित नगरपालिका अध्यक्ष एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने अवैध बूचड़खाने बंद कराने की कार्यवाही में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने की बात कही।

मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा. ने जानकारी देते हुए बताया कि 60 वें अवतरण दिवस के उपलक्ष्य में जीवदया की टीप की गई। जिसमें उपस्थित नगरपालिका अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों के साथ ही उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भी राशि लिखवाकर अभयदान किया। श्रीसंघ की ओर से नगरपालिका अध्यक्ष एवं ईओ सा. का बहुमान किया गया।

दोपहर श्रीसंघ स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया। दोपहर में सामूहिक सामायिक

एवं श्री शान्तिनाथ पंच कल्याणक पूजा संगीत की स्वरलहरियों के साथ संगीतकार द्वारा पढ़ाई गई। सायं श्री शान्तिनाथ जिनालय में कुमारपाल महाराजा की आरती का भव्य आयोजन किया गया जिसका लाभ श्रीमती जयाबेन प्रकाशभाई सवानी ने लिया। दोपहर गुरुदेव की आरती का लाभ श्री रमेशकुमारजी छगनलालजी सेठ, धानसा निवासी ने लिया। इस अवसर पर नगर निवासियों के अतिरिक्त चैन्नई, बैंगलोर, बड़नगर, जावरा, थराद, बाग, डीसा, अहमदाबाद, जालोर, सायला, भीनमाल, सुराणा, मेंगलवा, उदयपुर आदि नगरों के अतिरिक्त निकटवर्ती नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधि एवं कई गुरुभक्त उपस्थित थे। ■ ■

मासक्षमण तपोत्सव

धानेरा । आचार्यदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वी श्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी वृन्द के सान्निध्य में श्री महामृत्युंजय तप आराधिका सुश्री पायल कुमारी (सुपुत्री श्री अशोक कुमारजी धनराजजी श्रीमान) ने 31 उपवास की तपस्या सानंद सम्पन्न की।

दीर्घ तपस्विनी की तपस्या के अनुमोदनार्थ धानेरा नगरी में भव्य वरघोड़ा बैण्ड-बाजे घोड़े, बग्घी के साथ निकाला गया। वरघोड़े के मार्ग में सम्मिलित श्रावक-श्राविकाएँ सम्पूर्ण नगर में तपस्वी अमर रहे का जयघोष गुँजायमान कर रहे थे। दिनांक 13.8.2019 को प्रातः 10 बजे आचार्य देवेशश्री के मुखारविन्द से सकल श्रीसंघ की उपस्थिति में पच्चक्खाण कराया गया। दोपहर 3 बजे महिलाओं द्वारा मंगल गीत का आयोजन 76/बी, 8 वीं गली, धानेरा में किया गया। जिसमें विशाल संख्या में महिलाओं ने आकर मंगल गीत गूँजार किया। दिनांक 15.8.2019 को प्रातः 10 बजे तपस्विनी बहिन पायलकुमारी को पारणा करवाया गया। इस अवसर पर आचार्यदेवेशश्री ने तप की महिमा बताते हुए कहा कि मनुष्य के कर्मों की निर्जरा का कोई श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम साधन है तो वह तपस्या है । हमारे तीर्थंकर देवों ने भी तप के द्वारा अपने कर्मों की निर्जरा करते हुए अपना आत्मकल्याण करते हुए केवल्य को प्राप्त किया है। आवश्यक नहीं कि हम दीर्घ तपस्या ही करें। शास्त्रों में वर्णित है कि यथाशक्ति पच्चक्खाण । हमारी शक्ति और सामर्थ्यानुसार हमें तप करने की भावना हमारे भीतर रखनी चाहिये और जहाँ भाव आ जाता है तो अभाव स्वतः ही समाप्त हो जाता है और हम तप के पथ पर आरूढ़ हो जाते हैं।

दोपहर सकल श्रीसंघ एवं पधारे मेहमानों का स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया, जिसका लाभ शा. अशोककुमारजी धनराजजी श्रीश्रीमाल परिवार, धानेरा-समदड़ी-अहमदाबाद ने लिया। इस अवसर पर अनेक नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधि पधारे एवं तपस्विनी बहनों की सुखसाता- पृच्छा करते हुए तप की अनुमोदना की। नवकार आराधना में

आराधकों को प्रतिदिन मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा. एवं मुनिराजश्री जिनरत्नविजयजी म.सा. महामन्त्र नवकार की महिमा दर्शाते हुए भाव वन्दना के साथ अपनी मधुर वाणी के द्वारा सभी को महामंत्र की महिमा का रसपान करा रहे है। ■ ■

पैदल संघ का मुहूर्त्त गच्छाधिपति ने दिया

पारा। पारा श्रीसंघ एवं छाजेड़ परिवार के कुल 108 गुरु भक्त पिपलौदा में चातुर्मास हेतु विराजित गच्छाधिपति धर्म दिवाकर आचार्य देवेश श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज साहब के दर्शन वंदन एवं पैदल संघ का मुहूर्त लेने पहुंचे। पैदल संघ के आयोजक प्रकाशचंद्र केसरीमल छाजेड़ ने धर्म सभा में परिवार की ओर से गवली व गुरु वंदन कर श्री अयोध्यापुरमतीर्थ पैदल संघ निकालने की विनती कर गुरुदेव के मुहूर्त का निवेदन किया।

508 नवकार मंत्र के आराधकों एवं मालवा के अनेकों श्री संघ की उपस्थिति में गुरुदेव ने दिनांक 15 जनवरी 2020 महाकृष्ण 5 का मुहूर्त प्रदान किया है। मुहूर्त पाकर प्रकाश छाजेड़ परिवार व पारा श्रीसंघ खुशी में झूम उठा एवं गुरुदेव के समक्ष नृत्य कर अपनी खुशी को जाहिर किया एवं लड्डू की प्रसादी का वितरण किया। समस्त साधु-साध्वी भगवंत तथा गुरुभक्तों को संघ में पधारने का निवेदन

किया। यात्रियों को पारा से बस सुविधा द्वारा दिनांक 13.01.2020 को निकलकर 14/01/2020 को अयोध्यापुरमतीर्थ पर पहुंचेगा जहां से छःरि पालित संघ प्रस्थान करेगा।

सम्पूर्ण साधु-साध्वी समुदाय के साथ 500 से अधिक यात्री संघ में भाग लेंगे। संघ में हाथी, घोड़े, रथ, धर्मध्वजा, भगवान का रथ, गुरुदेव का रथ, बैंडबाजा, शहनाई, संगीतपार्टी, सिद्धाचलजी का चित्र, गुरुदेव का चित्र रहेंगे। 20/01/2020 को संघ माला का महोत्सव होगा। गच्छाधिपति ने प्रकाशचंद्रजी केशरीमलजी छाजेड़ परिवार को भावी संघपति की उपमा से अलंकृत किया। ■ ■

माँ-बाप के उपकारों को कभी भुलाया नहीं जा सकता- गच्छाधिपति श्री

पिपलौदा। माता-पिता के ऋण को जन्मों जन्म तक नहीं चुकाया जा सकता है। माँ नौ माह तक अपने गर्भ में अनेक कष्टों को सहकर भी अपनी संतान का पालन पोषण करती है व जन्म के बाद भी उसका पालन पोषण कर उसे पढ़ा लिखाकर होशियार बनाती है, ऐसे माँ-बाप के सभी उपकारों को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। माँ-बाप अपने बच्चों के लिए दिन-रात मेहनत करके जीवन में आने वाली चुनौतियों के लिए उन्हें तैयार करते हैं व अपनी संतान को दुखी देखकर माँ के नयन से नीर बहने लगते हैं। ऐसे माँ - बाप की छाया में बच्चे सुखमय जीवन यापन करते हैं। बच्चों को अपने माँ - बाप का दिल कभी भी नहीं दुखाना चाहिए। उक्त उद्‌बोधन पावनीय चातुर्मास महोत्सव के दौरान श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर श्री संघ की आज्ञा से गोस्वामी परिवार द्वारा आयोजित माता-पिता की वंदन कार्यक्रम अंतर्गत गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने दिया।

मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने बताया कि मैं माँ-बाप के साथ रहता हूँ नहीं कि माँ-बाप मेरे साथ रहते हैं ऐसा हमें कहना चाहिए। माँ-बाप का स्नेह प्रेम- संतान के प्रति कम नहीं होता है।

भगवान को हमने नहीं देखा किन्तु माँ-बाप और गुरु वर्तमान में भगवान तुल्य हैं।

मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि माता-पिता धन दौलत की चाह नहीं रखते, वे तो दो शब्द प्रेम के बोलने से ही खुश हो जाते हैं। साथ ही नगर में निर्माणाधीन मुरली मनोहर मंदिर को निरंतर गति प्रदान करने के लिए जनसमुदाय को प्रेरणा दी। प्रेरणा को स्वीकार कर यथा योग्य दान राशि की घोषणा दानदाताओं ने की। मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज प्रशमसेन विजयजी म.सा., मुनिराज श्री निर्भयरत्नविजयजी म.सा., साध्वी श्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा उपस्थित थे। माता-पिता कार्यक्रम में सूरत, गुजरात से आये विवेचनकार हार्दिक भाई एवं सोमिल भाई ने अपनी मधुर शैली में माँ के ऊपर विवेचना करते हुए बताया कि

जिंदगी में माँ, महात्मा और परमात्मा के उपकार नहीं भुलाये जा सकते हैं। एक कहावत के माध्यम से बताया कि किसी ने उपवास रखा, किसी ने रोजा रखा, सबसे खुशनसीब तो वो हैं जिसने माँ-बाप को रखा। साथ ही बताया कि पत्थर जब तक पर्वत से जुड़ा रहता है उसका महत्व अधिक होता है। उसी प्रकार जो संतान अपने माता-पिता व संयुक्त परिवार के साथ रहता है उसे शांति निश्चिंतता की अनुभूति होती है साथ ही संगीतकार सोमिल भाई ने 'माँ मुझे अपने आँचल में छुपा ले गले से लगा ले' संगीत की सुंदर प्रस्तुति से सभी को भाव विभोर कर दिया। प्रवचन मण्डप में बैठी बेटियों को अपने पिता व बेटों को अपनी माता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेने को कहा तब सभी बेटा-बेटियां अपने माता-पिता के पास पहुंचे व माँ-बाँप को गले लगाकर अपने आंसुओं को रोक नहीं सके। साथ ही आर्ची बाठिया जावरा, अर्पण बाफना रतलाम व राजवी सोलंकी ने अपनी सुंदर प्रस्तुति देकर जनमानस को माता-पिता की सेवा में रहने का संदेश दिया। आयोजन के लाभार्थी गोस्वामी परिवार के शिवपुरी गोस्वामी व मंगलपुरी गोस्वामी के समीप माताजी गोदावरी बाई की तस्वीर के साथ ही श्रीसंघ अध्यक्ष बाबुलाल धींग एवँ गुणबाला बेन धींग के पुत्र व परिवारजन ने पद पक्षालन कर माता-पिता का आशीर्वाद लिया। प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने बताया कि आयोजन में श्रीसंघ परामर्शदाता व रतलाम विधायक चेतन्य कुमार काश्यप, सुशील छाजेड़, राजकमल दुग्गड़, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष कानसिंह चौहान, जिला सहकारी संस्था पूर्व उपाध्यक्ष भेरूलाल पाटीदार, नगर परिषद अध्यक्ष श्याम बिहारी पटेल, भाजयुमो जिला महामंत्री राहुल ओसतवाल, जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि रितेश जैन आदि उपस्थित थे। सभी का लाभार्थी परिवार विजय कुमार चन्द्रगोता परिवार व चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर ने बहुमान किया। श्री काश्यप ने कहा कि संत सभी के लिए पूजनीय व हितैषी होते हैं। इस चातुर्मास में जो कार्यक्रम हो रहे हैं वह अनुकरणीय व अनुमोदनीय हैं। साथ ही पिपलौदा में उपध्यान तप व अधिवेशन की रूपरेखा भी तैयार हो रही है। जो गच्छ की अभिवृद्धि कर जिनशासन की शोभा बढ़ाने में सहयोगी हैं। साथ ही सभी अतिथियों ने दादा गुरुदेव, पुण्य सम्राट गच्छाधिपति श्री व मुनिमण्डल के फोटो का विमोचन किया। गच्छाधिपति श्री ने लाभार्थी गोस्वामी परिवार को पुण्य सम्राट की प्रतिमा व माला भेंट की। संचालन वाटिका अध्यक्ष शैलेन्द्र कटारिया व चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया। ■■

नागदा जंक्शन

नागदा जं। बहना आप एक नहीं दो घर का भविष्य हो , आप के आचरण एवं व्यवहार से आप के पापा की शान है, बहना आप प्रेम एवं प्यार के प्रसंग में फंस कर ऐसा कोई निर्णय मत ले लेना जिससे आप के पापा की इज्जत मिट्टी में मिल जाए। बहना इन प्रेम प्रसंग में उलझ कर अपना भविष्य मत बर्बाद करना। प्रेम विवाह में आप को तो आप का प्यार मिल जाएगा किन्तु आपकी होने वाली संतान को नाना-नानी, दादा-दादी का प्यार नहीं मिल पाएगा। वह संतान न मामा को पहचान पायेगी और नहीं मासी को। आपकी आने वाली पीढ़ी संस्कार से भटक जाएगी। यह बात नगर पालिका कम्यूनिटी हाल में आयोजित जाहिर प्रवचन माला 'बहना तुम से कुछ कहना है 'विषय पर धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने कही। उन्होंने कहा कि बहना आपका जीवन गुलाब के फूल के समान है आपको नहीं पता कि सौन्दर्यता, रूप-रंग पर, आपके धन-दौलत पर कितने लोगों की निगाह है। वह तो बस अपनी हवस चाहे वह पैसे की हो या सम्भोग की, पूरा कर आपका भविष्य खराब करना चाहते हैं। बहना जैसे ही आपके प्रेमी को इस बात का पता चलता है कि आप अमीर बाप की बेटी हो तो वह शारीरिक सम्भोग कर आपको ब्लेकमेल करना शुरू कर देता है, इसके विपरीत यदि आप गरीब घर की बेटी हो तो वह प्रेमी हजारों रुपये के उपहार देकर आपको शारीरिक सम्भोग के लिए उत्साही बनाता है। आपको सावधान रहने की आवश्यकता है। जाहिर प्रवचन को सम्बोधित करते हुए महासतीश्री मंगलप्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय संस्कारों को त्रश -नश कर दिया है। महासतीजी ने उपस्थित बालिकाओं को प्रण दिलवाया है कि चाहे कैसी भी परिस्थिति निर्मित हो किन्तु हम अपने माता-पिता का नाम खराब मन

होने देंगे।

सकल जैन समाज दिखा एक मच पर – इस चातुर्मास में यह ऐसा पहला आयोजन था जिसमें सकल जैन समाज श्वेताम्बर, स्थानकवासी एवं दिगम्बर सम्प्रदाय एक मंच से 'बहना तुम से कुछ कहना है' विषय पर धर्मसभा के दौरान जाहिर प्रवचन श्रवण कर रहा था। धर्मसभा की शुरुआत सुबह 9 बजे साध्वीश्री के मंगलाचरण से हुई। इससे पूर्व सुबह 8.30 बजे जैन कालोनी स्थित जयंतसेन आराधना भवन से चल समारोह का आयोजन किया गया। चल समारोह में एगोशदीप स्कूल जयंतसेन आराधना भवन से चल समारोह का आयोजन किया गया। चल समारोह में एगोशदीप स्कूल के विद्यार्थी स्कूल के बेण्ड वादन से साध्वीश्री की अगवानी कर चल रहे थे। चल समारोह नगरपालिका कम्यूनिटी हाल में धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हुआ। धर्मसभा में सामूहिक गुरुवंदन की प्रस्तुति श्रीसंघ के पूर्व अध्यक्ष सुनील वागरेचा ने दी। उपस्थित अतिथि ने दादा गुरुदेव राजेन्द्रसूरीजी म.सा. के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं मालार्पण कर वंदना की। सरस्वती वंदना की प्रस्तुति प्रतिभा कुंवर ने दी। धर्मसभा में मुख्य अतिथि एवं अतिथि का श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति के पदाधिकारियों द्वारा बहुमान किया गया। धर्मसभा में स्वागत उद्बोधन चातुर्मास समिति अध्यक्ष दिलीप नांदेचा औरा ने दिया। धर्मसभा को साध्वीश्री के साथ अतिथि श्री पारस जैन ने सम्बोधित किया।

धर्मसभा के दौरान पार्श्व बहू मंडल की प्रिया गांधी, सोमन मेहता, मीनल छाजेड़, सुमन वागरेचा एवं बालिका परिषद की प्रिया बोहरा ने नाट्य मंचन के माध्यम से प्रेम विवाह के बाद होने वाली घटनाओं पर प्रकाश डाला। संचालन डॉक्टर विपिन वागरेचा व कुशल भंसाली ने किया। आभार परिषद सचिव दिलीप गांधी ने माना। धर्मसभा में प्रभावना का लाभ अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद एवं संघवी यशवंत कुमार आयुषकुमार वागरेचा परिवार द्वारा लिया गया।

पीएचडी अवार्ड होने पर श्रीसंघ ने किया सम्मान – श्रीसंघ के मीडिया प्रभारी विपिन वागरेचा द्वारा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से वाणिज्य विषय के अंतर्गत 'उज्जैन जिले के शुष्क कृषि उत्पाद भंडारण व्यवस्था एवं प्रबंध' विषय पर पीएचडी की डिग्री प्राप्त करने पर श्री वागरेचा का बहुमान किया गया।

धर्मसभा में मुख्य अतिथि पारस जैन (पूर्व मंत्री) एवं विधायक उज्जैन उत्तर, दिलीपसिंह गुर्जर विधायक खाचरौद, अशोक मालवीय नगर पालिका अध्यक्ष नागदा, राजेश धाकड़ भाजपा मंडल अध्यक्ष, रजत मेहता, ब्रजेश बोहरा, सलीम खान, प्रकाश जैन, प्रकाशचन्द्र जैन, राजेन्द्र कांठेड़, सुनील जैन, सुरेश लोढ़ा, विकास मेहता, राकेश औरा, संतोष राजोरिया, योगेश शर्मा, मीना वागरेचा, विनोद श्रीवास्तव आदि थे। ■ ■

आहोर

आहोर। साध्वीवर्या श्रीशासन लताश्री जी आदि ठाणा 9 की निश्रा में महामंत्राधिराज नवकार मंत्र की आराधना श्रावण शुक्ल 7 से श्रावण शुक्ल 15 तक चली । नवदिवसीय आराधना संगीतमय 68 तीर्थ की यात्रा हो रही है। प्रतिदिन एक पद होता है। आराधना का संपूर्ण लाभ शा. कमलेश कुमार कांतीलालजी भगुजी ओसतवाल परिवार आहोर रागमहेंद्री वालों ने लिया। **– पारस परिषद्**

जालोर

जालोर। त्रिस्तुतिक जैन संघ जालोर में 'संयम उपकरण वन्दनावली' का आयोजन साध्वी श्री डॉ. दर्शनकलाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में अत्यन्त उल्लास पूर्ण वातावरण में किया गया। संयम के प्रत्येक उपकरण के सम्बन्ध में साध्वीजी महाराज सा. द्वारा विस्तार से समझाया गया। संयम जीवन में इन उपकरणों की महत्ता, उपयोग की विधि एवं इनसे जुड़ी जीव मात्र की जयणा के बारे में विस्तार से व्याख्या की। बीच में बालिकाओं द्वारा मधुर संगीत से इन उपकरणों पर नृत्य किया। उपकरण घर ले जाने के चढ़ावे जीवन धर्म मार्ग पर अग्रसर हो उस हिसाब से बोले गये। नवकार जाप, सामायिक आसन पर सोना, साधु-साध्वी के साथ विहार में चलना, होटल का त्याग आदि के रूप में बोले गये। चढ़ावों में भाग लेकर संयम उपकरण घर ले जाने का लाभ लिया। सबसे उत्तम व मुख्य उपकरण 'ओघा' घर ले जाने का लाभ नगर सेठ भेरूलालजी अमृतलालजी खाटेड ने आजीवन ब्रह्मचर्य पालन का वृत लेकर लिया जिसका संघ ने आत्म विभोर होकर करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। कार्यक्रम के पश्चात् संघ का स्वामीवात्सल्य का आयोजन हुआ जिसके लाभार्थी नगर सेठ भेरूलालजी अमृतलालजी खाटेड परिवार थे।

– हीराचंद संघवी

अहमदाबाद

अहमदाबाद। साध्वीश्री पूर्णकिरणा श्रीजी म.सा. , श्री कल्परेखाश्रीजी म.सा., श्री परमरेखाश्रीजी म.सा, आदि ठाणा की निश्रा में पालड़ी-अहमदाबाद स्थित श्री अवन्ती पार्श्वनाथ जिनालय एवं उसमें विराजित अनन्त लब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामीजी विश्वपूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. गुरुमंदिर की 8 वीं वर्षगाँठ हर्षोल्लास के साथ विविध कार्यक्रमों के साथ मनाई गई।

बैंगलोर

बैंगलोर। साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी महाराज एवं श्री विपुलहर्षिता महाराज की निश्रा में श्री नेमीनाथ भगवान का जन्म कल्याणक महोत्सव राजेन्द्र भवन कीलारी रोड़ बैंगलोर में धूमधाम से मनाया गया।

महाराजा समुद्रविजयजी के लाभार्थी दिलीपजी कांकरीया एवं महाराजा इन्द्रदेवता के लाभार्थी शा. विकास कुमारजी वेदमुथा और दासी प्रियंवदा दीक्षित संघवी वेदमुथा और काजल संघवी वेदमुथा थे। इस

कार्यक्रम की सम्पूर्ण रूपरेखा शोभा सदानी द्वारा सम्पादित की गई।

दाधाल

दाधाल। दीयावट पट्टी की धन्य धरा दाधाल नगरी में भव्यातिभव्य प्रवेश हुआ। साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी, श्री श्रुति दर्शनाश्रीजी, दाधाल का गौरव श्री तृप्ति दर्शनाश्रीजी एवं श्री रित दर्शनाश्रीजी आदि ठाणा-4 का प्रवेश बाजते-गाजते उमंग उत्साह पूर्वक हुआ। दियावर पट्टी के सभी ग्रामों से गणमान्य मेहमान पधारे थे। चउदस के दिन से ही सौभाग्य कल्प वृक्षतप- अंखंड आयंबिल चालू हुए। वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक श्री शीतलनाथ की छत्र छाया में बड़े उल्लास से किया गया। श्री धर्म बिन्दु ग्रन्थ और जंबूस्वामी चारित्र पर सुंदर प्रवचन चल रहे हैं। पूज्य सम्राट की मासिक पुण्य तिथि के अवसर पर गुरु कृपा दिवस मनाया गया। गुरु की अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई। संध्या आरती की गई। साध्वीश्री श्रुति दर्शनाश्रीजी का 37 वीं ओली का पारणा हुआ जिसका सामायिक से चढ़ावा हुआ। पुण्य कलश की स्थापना करके प्रत्येक घर में श्रीसंघ के साथ उल्लास पूर्वक श्री नवकारमंत्र जाप का अनुष्ठान चल रहा है।

हैदराबाद

हैदराबाद। श्री सिद्धाचल राजेन्द्रसूरी जैन श्वे. मंदिर सुल्तान बाजार प्रेमबाग के तत्वावधान में प्रतिष्ठा महोत्सव साध्वीवर्या श्री आत्मादर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में भव्य हर्ष उल्लास से हुआ।

अलवर

अलवर। यहाँ चातुर्मासार्थ विराजमान डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. तथा डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. के चातुर्मास में भव्य मांगलिक कार्यक्रम हो रहे हैं। 16 जुलाई को गुरु पूर्णिमा दिवस का आयोजन हुआ।श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजन तथा स्वधर्मीवात्सल्य हुआ। 21 जुलाई को श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ महापूजन लाभार्थी की ओर से हुई, स्वामी वात्सल्य का भी आयोजन हुआ। दिनांक 2 अगस्त को प्रथम महामांगलिक हुआ तथा 4 अगस्त को सामूहिक मातृ-पितृ वंदनावली का कार्यक्रम हुआ। दोनों दिन स्वामीवात्सल्य हुए । 7 अगस्त से श्री नवकार आराधना प्रारंभ हुई, इसके आराधकों का बहुमान किया गया एवं 16 अगस्त के पारणा हुआ। 12 अगस्त को नीवी का स्वामीवात्सल्य हुआ, स्नात्र महोत्सव भी हुआ।

बीजापुर (कर्नाटक)

बीजापुर। मुनिराज श्री वैभवरत्न विजयजी म.सा. आदि ठाणा-3 का दक्षिण भारत में प्रथम विश्वमांगल्य वर्षावास हेतु शिवाजी सर्कल बीजापुर से भव्य सामैया के साथ मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर कई नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मीठाखली-अहमदाबाद

मीठाखली। मुनिराज श्री जिनागम रत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं साध्वीश्री रंजनमालाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री रत्नयशाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चरित्रकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 10 का भव्य चातुर्मास हेतु ओरियन्टल बिल्डिंग, रतनपोल हाथीखाना यतीन्द्र भवन, मीठाखली, अहमदाबाद में भव्य सामैया के साथ बैण्ड-बाजों, ढोल एवं शोभायात्रा के साथ मंगल प्रवेश हुआ।

साबरमती

साबरमती। प.पू. साध्वीश्री स्वयंप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का भव्य चातुर्मास हेतु साबरमती, अहमदाबाद में भव्य सामैया के साथ मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर अहमदाबाद के उपनगरों एवं कई नगरों के श्रीसंघ प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

रतलाम परिषद द्वारा प्रति रविवार निःशुल्क बस यात्रा धर्म आराधना एवं दर्शन वंदन

रतलाम। पुण्य सम्राट लोकसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की अंतिम चातुर्मास स्थली रतलाम से मात्र 40 किमी. दूर भक्ति भाव और समर्पण से परिपूर्ण पिपलौदा श्रीसंघ द्वारा पिपलौदा नगर में पुण्य सम्राट के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा., साधु मंडल व साध्वीवृंद का भव्यातीभव्य ऐतिहासिक चातुर्मास का लाभ मिला।

श्रीसंघ छोटा किन्तु भाव की उच्च पराकाष्ठा ने इस चातुर्मास में चार चांद लगा दिए। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद व परिषद परिवार द्वारा पिपलौदा चातुर्मास प्रवेश से लेकर पर्युषण प्रारंभ होने तक निरंतर श्रीसंघ के महानुभाव पिपलौदा पूज्य गुरुभगवंत के दर्शनार्थ प्रति रविवार संघपति की निश्रा में प्रवचन एवं अन्य धार्मिक गतिविधियों का लाभ लिया । चातुर्मासिक प्रवेश एवं प्रति रविवार बस द्वारा श्रीसंघ के रूप में दर्शनवंदन करवाने का निम्न महानुभावों का लाभार्थी के रूप में सराहनीय सहयोग रहा- श्रीलालचंद रतनलाल सुराणा, पूनमचंदजी हर्षजी लुणावत, सुशील कुमार अनुज कुमार छाजेड़, नंदलाल शांतिलालजी रांका, एस. कुमारजी बरमेचा, झमकलालजी रितेशजी वोरा, राकेश कुमार शेखर कुमार घोचा, मुकेश कुमार राजेशजी पगारिया, अभय कुमार राहुलजी सकलेचा, विनयकुमार प्रकाशचंदजी सुराणा, सोमचंद मणीलालजी सुराणा, दीपकजी खेड़ावाला, सुनीलकुमारजी गांधी, नेमचंदजी भंडारी, लोकेशजी ओस्तवाल, ललित काठेड़, शिखरचंदजी दुग्गड़, राजेन्द्रकुमार अभिषेक खाबिया, जय आप्टिकल, हितेश कुमार रतनलालजी रांका एवं परिषद परिवार की व्यवस्थापक में सक्रिय भूमिका रही। ■■

जयंतसेन धाम में जिनालय प्रतिष्ठा की तीसरी वर्षगांठ पर हुआ ध्वजारोहण

रतलाम । त्रिस्तुतिक संघ के नायक पुण्य सम्राट लोकसन्त गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की अंतिम चातुर्मास स्थली जयंतसेन धाम में काश्यप परिवार द्वारा निर्मित श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिर की तीसरी वर्षगांठ रक्षा बंधन पर ध्वजारोहण समारोह का आयोजन किया गया। श्री जयन्तसेन धाम चेतन्य काश्यप जैन श्वेताम्बर तीर्थ पेढी के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा के पूजन पश्चात जिनालय पर ध्वजारोहण किया गया। काश्यप परिवार के सिद्धार्थ काश्यप, पूर्वी काश्यप एवं श्रवण काश्यप ने पूजा विधि सम्पन्न की। संजय कोठारी, अभिषेक खाबिया एवं संदीप वोरा ने पूजा पढाई। इस दौरान श्री त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के सुशील छाजेड, राजकमल जैन, मुकेश ओरा, अभय सकलेचा, राजेन्द्र खाबिया, नरेन्द्र छाजेड, परिषद् अध्यक्ष विनय सुराना, राजेन्द्र सुराना, डॉ. नरेन्द्र मेहता, पंकज राठौड, राजेश खाबिया, सुरेन्द्र गंग सहित बडी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। ध्वजारोहण

पश्चात नवकारसी का आयोजन भी किया गया। इस मौके पर जयन्तसेन धाम परिसर में समाजजनों ने पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के लिए पौधारोपण भी किया। ■ ■

श्री संघ सौरभ

अहिंसा दिवस पर इंदौर में 4450 आयंबिल

इंदौर। शहर में करुणा दिवस पर तपस्या का रिकार्ड तोड़ काम किया और एक नया इतिहास रचा । एक नया आयाम लिखा, एक नया पैगाम दिया कि जैन हर काम, हर क्षेत्र में आगे। पूरे शहर में करुणा दिवस पर 4450 + आयंबिल हुए। सिर्फ बास्केटबॉल स्टेडियम में ही 2450 + आयंबिल हुए। पूरे जैन समाज ने देखा कि स्वामीवात्सल्य में तो भीड़ हमेशा दिखती थी परन्तु आयंबिल में भी लाइन लगाकर वेटिंग करते हुए लोगों को पहली बार देखा प्रणाम इंदौर शहर की जैन समाज की जनता को ।

क्या बच्चे, क्या बड़े, क्या बुजुर्ग, क्या महिला, क्या सिंधी, क्या पंजाबी, क्या हिन्दू सभी लोगों ने आयंबिल करने में उत्साह दिखाया।

महिदपुर। सौधर्म वृहद् तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक श्रीसंघ महिदपुर की बैठक श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में सम्पन्न हुई जिसमें सर्वानुमति से मुकेश कुमार बांठिया को आगामी वर्षों हेतु त्रिस्तुतिक श्रीसंघ का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। उक्त मनोनयन पर ईष्ट मित्रों व समाजजनों ने बांठिया को बधाई दी। बांठिया ने श्रीसंघ के सदस्यों के साथ पिपलौदा में चातुर्मास हेतु विराजित प.पू. गच्छाधिपति श्रीमद् विजयनित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

– नरेन्द्रकुमार धाड़ीवाल

खाचरौद। श्री राज राजेन्द्र जयंतसेन विद्यापीठ में वृक्षारोपण एवं हरियाली दिवस का आयोजन किया गया।

शिक्षकों ने छात्रों को 'स्वच्छ भारत', 'हरित भारत' के बारे में जानकारी दी। विद्यापीठ के छात्रों ने विकासखण्ड स्तरीय बॉलीबाल तथा फुटबाल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट सफलता अर्जित की। छात्र-छात्राओं का जिलास्तर पर चयन हुआ। इसी प्रकार योग प्रतियोगिता में भी छात्र-छात्राओं का जिलास्तर पर चयन हुआ।

हुबली। प्रधानमंत्री अल्पसंख्यक 15 सूत्रीय कल्याण कार्यक्रम समिति के सदस्य श्री महेन्द्र सिंघी द्वारा पिछले दिनों 27 जून को राज्य के मुख्य सचिव विजय भास्कर की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में मांग रखी थी कि राज्य के अनेक जिलों में व ताल्लुकों में श्वेताम्बर जैन समाज के सदस्यों को अल्पसंख्यक प्रमाण-पत्र जारी नहीं किया जा रहा है, जबकि श्वेताम्बर जैन समाज को भी राज्य सहित पूरे देश में अल्पसंख्यक दर्जा प्रदान किया गया है। इस सम्बन्ध में राज्य के मुख्य सचिव से मांग रखी की आवश्यक दिशा निर्देश जारी कर सभी जिला व तहसील मुख्यालय में सूचना प्रदान करें की श्वेताम्बर जैन समाज को भी अल्पसंख्यक प्रमाण-पत्र जारी किये जाये।

नागदा। नागदा में चातुर्मास हेतु बिराजमान साध्वी श्री डॉ. अमृत रसाश्रीजी म.सा. व निराग रसाश्रीजी म.सा. की निश्रा में श्री पार्श्व प्रधान पाठशाला में बच्चों की 'फैंसी ड्रेस' का कार्यक्रम सुबह से रखा गया। छोटे बच्चों द्वारा नाटिका 'माया पैसों की' का भी मंचन किया गया।

शास्त्रीजी का निधन

अहमदाबाद। गायत्री पंचांग के निर्माता तथा ज्योतिष विद्या के निष्णात श्री रघुनाथजी चुन्नीलालजी दवे (शास्त्रीजी) का दुःखद अवसान विगत दिनों हुआ। आपका अंतिम संस्कार आपके ग्रह ग्राम जयड़ा (थराद) में किया गया। आपका निधन अहमदाबाद में हुआ था। शाश्वत धर्म द्वारा श्रद्धाजंली।

रजत रश्मियां

रु. 1100 /- श्री बाबुलालजी बाफना, टांडावाला, इंदौर की स्मृति में श्री महेन्द्र कुमारजी कमल कुमारजी बाफना, इंदौर की ओर से शाश्वत धर्म को भेंट।

धन्यवाद !

– व्यवस्थापक

परिषद प्रांगण से

इस बार दुगुने परीक्षा केन्द्रों पर ज्ञानपीठ की परीक्षा सानन्द सम्पन्न

मंदसौर। श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ के अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र लोढ़ा तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने बताया कि स्व. राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा संस्थापित श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की वार्षिक परीक्षा दिनांक 28 जुलाई को सम्पन्न हुई। विशेषतः परीक्षा दो भाषाओं हिन्दी तथा गुजराती में हुई. हिन्दी भाषी क्षेत्र में इस वर्ष 63 परीक्षा केन्द्र स्थापित हुए थे जिन पर परीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर श्रीसंघ तथा परिषद के सदस्यों ने पहुंचकर परीक्षा संचालन का अवलोकन किया। सभी स्थानों पर पर्यवेक्षकों ने परीक्षा का निरीक्षण किया।

पारा। 15 विद्यार्थियों से पाठशाला के गुरुजी सुश्रावक राजेन्द्र कोठारी ने पाठशाला परिसर में परीक्षा ली साथ ही परिषद अध्यक्ष दिलीप कोठारी, कोषाध्यक्ष मुकेश पगारिया उपस्थित थे। सभी परीक्षार्थियों को पर्युषण पर्व पर पुरस्कृत किया जाता है। परीक्षा के बाद सभी को परिषद की ओर से प्रभावना बांटी गई।

जावरा। श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ परीक्षा, अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद जावरा द्वारा आयोजित की गई। साध्वीश्री अमित दृष्टाश्रीजी महाराज की प्रेरणा से जावरा में 100 से अधिक परीक्षार्थियों द्वारा परीक्षा दी गई। साध्वीजी ने सभी को परीक्षा का महत्व समझाया एवं कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। साध्वीजी ने मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ

किया एवं अंत में सभी को मांगलिक प्रदान की। श्रीसंघ अध्यक्ष श्रीमान् बाबूलालजी तान्तेड एवं परिषद के राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री श्री अनिलजी दसेडा ने अपना मार्गदर्शन सभी परीक्षार्थियों को प्रदान किया। इस मौके पर श्रीसंघ के महामंत्री श्री प्रवीणजी कोलन, परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य यशवंतजी चोरडीया, प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री सुरेशजी चोरडिया, परीक्षा के केन्द्र अध्यक्ष श्री प्रदीपजी सिसोदिया, चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रकाशजी मोदी, महासचिव पारसजी सकलेचा, महेन्द्रजी कोलन परिषद अध्यक्ष अशोकजी नौलखा, संजय धारीवाल, श्रेणिक चत्तर, अशोकजी बोरदिया, बच्छराजजी चोरडीया, संतोषजी चोरडिया, धर्मेन्द्रजी तातेड़, निलेशजी दसेड़ा, श्रेणिकजी सुराणा, रवि चोरडिया, पवन कटारिया, महिला परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पारसमणिजी मारवाड़ी, सारिकाजी कोलन, अध्यक्ष किरणजी चोरडिया, महासचिव जीवनबालाजी हरण, शिरोमणिजी मेहता, रेखाजी दसेड़ा उपस्थित थे। सभी परीक्षार्थियों को परिषद द्वारा प्रभावना वितरित की गई।

बैंगलोर। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा बैंगलोर द्वारा किलारी रोड़ स्थित राजेन्द्र भवन में साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा. के तत्ववाधान में परीक्षा पत्र का विमोचन किया। जिसमें ध्यान साधना के गुरु वंदना आँचलिया की उपस्थिति रही तथा सभी विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा का कार्य सुसम्पन्न हुआ।

ज्ञानपीठ परीक्षाओं का संचालन

बैंगलोर

राणापुर

इस अवसर पर राष्ट्रीय मंत्री प्रकाश हिरानी द्वारा यतीन्द्र जयंत ज्ञान पीठ बोर्ड की विस्तार से जानकारी दी।

अध्यक्ष डूंगरमल चौपड़ा, उपाध्यक्ष हेमराज जैन, मंत्री नेमीचंद संघवी, सहमंत्री दिलीप कांकरिया, कोषाध्यक्ष रमेश मयूर एवं धार्मिक शिक्षा प्रचार मंत्री माँगीलाल वेदमुथा एवं कार्यकारिणी सदस्य त्रिलोक भंडारी, चम्पालाल पोसाना, प्रकाश ओस्तवाल, कांतिलाल आदि सदस्यों की उपस्थिति रही। समस्त परीक्षार्थियों एवं परिषद परिवार के साथियों सुशीला बहन श्री मुनीसुव्रत स्वामी, राजेन्द्र जैन धार्मिक पाठशाला एवं नीपा बहन श्री सीमंधरस्वामी राजेन्द्र जैन धार्मिक पाठशाला एवं सारिका बहन अर्हम सम्यक् ज्ञान पाठशाला तथा महिला परिषद की अध्यक्ष प्रेमा बहन, मंत्री मधु बाला तथा सभी सदस्यों का सहयोग रहा। अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् परिवार की तरफ से परीक्षा में बैठे सभी परीक्षार्थियों को प्रभावना वितरण की गई।

राणापुर। में श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञान पीठ परीक्षा सम्पन्न हुई। जिसमें 28 परीक्षार्थीयों ने भाग लिया। केन्द्राध्यक्ष जितेन्द्र सालेचा ने बताया कि उदय, इष्ठ, जेष्ठ के विभिन्न परीक्षार्थियों ने अपने पाठ्यक्रम का पठन कर परीक्षा दी।

पूरी परीक्षा प्रक्रिया बोर्ड अनुसार आयोजित थी। परीक्षा का निरीक्षण अखिल भारतीय राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री कमल कटारिया एवं महिला परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती पद्मा सेठ ने किया। इस अवसर पर परीक्षा केन्द्र पर मुनिसुव्रत जिनालय के अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, समाज के वरिष्ठ मदनलाल नाहर, मनोहरलाल नाहर, वीरेन्द्र जैन, परिषद अध्यक्ष पवन नाहर, उपाध्यक्ष विनय कटारिया, कोषाध्यक्ष रजनीश नाहर, सहमहामंत्री प्रवीणण नाहर, शिक्षा मंत्री जितेन्द्र नाहर, तरुण परिषद महामंत्री पूर्वेश सालेचा आदि उपस्थित थे। ■ ■

- थैर्य बिना धन नहीं, बिना शौर्य के जश नहीं।
- ज्ञान बिना सद्गति नहीं, बिना दान के यश नहीं।
- भूल होना मानव की सहज प्रकृति है।
- भूल को भूल नहीं मानना विकृति है।
- भूल न करे वह भगवान, भूल करके माफी मांगे वह इन्सान।
- सहज मिले सो दूध बराबर, मांग लिये सो पानी।

अहिंसा दिवस पर आयंबिल हुए

नागदा जं.। सकल जैन श्रीसंघ द्वारा मूक पशुओं की आत्मशान्ति हेतु सामूहिक आयंबिल का आयोजन श्री पार्श्वप्रधान पाठशाला भवन में रखा गया। इस अवसर पर सामूहिक प्रवचन एवं धर्मसभा का आयोजन रखा गया। जिसमें साध्वीश्री मंगलप्रभाजी म. सा. ने अपने प्रवचन में भगवान महावीर स्वामी के प्रथम सूत्र 'जीयो और जीने दो' एवं 'अहिंसा परमोधर्म' पर विस्तारपूर्वक व्याख्या की। इसी तारतम्य में साध्वी श्री डॉ. अमृतरसाश्रीजी म.सा. ने प्रशासन एवं राजनेताओं का जीवदया पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहाकि जिस प्रकार होली एवं अन्य त्यौहारों पर प्रशासन निर्देशित करती है, उसी प्रकार मूक पशुओं को अभयदान देने के बारे में भी आगे कदम बढ़ावें।

कार्यक्रम में समाजसेवी कवि श्री मनोहरलालजी कांठेड़ द्वारा काव्य पाठ किया गया। अत्यधिक सामायिक करने वाले श्रावक एवं श्राविकाओं का चाँदी के सिक्के से बहुमान किया गया। साथ ही निःशुल्क धार्मिक शिक्षा पढ़ाने वाली शिक्षिका श्रीमती कोमलबेन चौधरी व प्रकाशजी चौधरी का बहुमान किया गया। तपस्वी श्री मास्टर तुषार करनावट का भी बहुमान किया गया। आयंबिल के मुख्य लाभार्थी आदिनाथ फेमेली ग्रुप की अध्यक्षा श्रीमती प्रतिभा ओरा का भी बहुमान किया गया। लाभार्थी द्वारा 368 आयंबिल आराधकों को प्रभावना एवं 25 लक्की ड्रा विजेता को ईनाम वितरित किये गये। आयंबिल में भाग लेने वाले छोटे बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् व जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा प्रभावना वितरित की गई। आराधना के कार्यक्रम का संचालन हेमन्त कांकरिया व सुनील वागरेचा ने किया। आभार परिषद अध्यक्ष मनोज वागरेचा ने माना।

– दिलीप ओरा एवं ब्रजेश बोहरा

राणापुर। शाखा परिषद द्वारा अहिंसा दिवस पर सकल श्वेताम्बर जैन संघ का सामूहिक आयंबिल कार्यक्रम का आयोजन श्री राजेन्द्र भवन में रखा गया। जिसमें कुल 55 तपस्वियों ने आयम्बिल तप किये। कार्यक्रम के लाभार्थी दिनेशचन्द्र नाहर, जितेन्द्र नागोरी, सज्जनलाल कटारिया, रमेशचन्द्र नाहर, स्व. श्री चन्द्रशेखरजी कटारिया परिवार थे। साथ ही नवकार मन्त्र जाप में बैठे सभी नवकार आराधकों ने एकासने में सफेद वस्तु, फल, मीठे का त्याग किया।

बैंगलोर। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन

नवयुवक परिषद् शाखा बैंगलोर द्वारा पू. सा. श्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से करुणा दिवस मनाया। इस दिन चिकपेट स्थित श्री वर्धमान तप आयंबिल खाता में करीबन चार सौ पचास (450) तपस्वियों ने आयंबिल तप की आराधना की । इस अवसर पर परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रकाश हिराणी ने तप के बारे में प्रेरणा दी और कहा कि इस दिन (बकरीईद) ज्यादा से ज्यादा तप एवं नवकार महामंत्र का जाप करना चाहिए। पुण्य सम्राट आचार्य देव श्री जयंतसेनसूरिजी के दिव्य आशीष से पूरे देश में सभी शाखाओं द्वारा जप तप का कार्यक्रम चला आ रहा है ताकि अमूल्य भाव भरे प्रयास से सम्भवतः मरते हुए प्राणियों की अंतिम अवस्था गति सुधर सके। परिषद् के अध्यक्ष डूंगरमल चोपड़ा ने बताया की सेवा देने वाले सभी मंडलों का बहुमान किया गया। सभी तपस्वियों को प्रभावना दी गई। इस अवसर पर दक्षिण प्रांतीय अध्यक्ष बाबुलाल सवानी, अध्यक्ष डूंगरमल चौपड़ा, मंत्री नेमीचंद संघवी, कोषाध्यक्ष रमेश जैन, सहमंत्री दिलीप कांकरिया, प्रकाश बालर एवं सदस्यगण तथा महिला परिषद की अनेक सदस्याओं ने भी सेवा प्रदान की।

■ ■

परिषद की हीरक जयंती वर्ष पर ६० पौधे गौशाला में लगाएँ

राणापुर। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के हीरक जयंती वर्ष के अवसर पर गुरुवार को श्री राज राजेन्द्र गोपाल गौशाला रानापुर में परिषद की स्थानीय शाखा द्वारा 60 छायादार पौधों को गौशाला परिसर में लगाया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर प्रबल सिपाहा, विशेष अतिथि शिवगंगा के संयोजक महेश शर्मा, नगर परिषद अध्यक्ष सुनीता अजनार थे। मंच पर गौशाला अध्यक्ष हरिओम दवे, तहसीलदार नितिन चौहान भी आसीन थे। कार्यक्रम की शुरुआत में अतिथियों ने गुरुदेव राजेन्द्रसूरीजी एवम् पुण्य सम्राट जयंतसेनजी के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन किया। जिसके बाद अतिथियों का स्वागत परिषद एवम् गौशाला समिति की ओर से पचरंगी दुप्पटा पहनाकर किया गया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कलेक्टर प्रबल सिपाहा ने कहा कि विदेशों में प्रति व्यक्ति के अनुपात में 300 पेड़ होते हैं और भारत में प्रति व्यक्ति के अनुपात में 30 पेड़ ही हैं उन्हें भी काटते जा रहे हैं। हम सभी

के खाने में बढ़ती यूरिया की मात्रा को रोकने के लिए हमें पौधे लगाना चाहिये, गोधन का उपयोग करते हुए उनके गोबर से बनने वाली जैविक खाद का उपयोग खेत में करना चाहिए। उन्होंने इस हेतु परिषद को बधाई दी। कार्यक्रम को मुनिसुव्रत जिनालय के अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया ने सम्बोधित किया। परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने स्वागत भाषण देते हुए परिषद के कार्यों को विस्तार से अतिथियों को बताया। गुरुवार को परिषद के कार्यक्रम में ट्री गार्ड, पौधे आदि सामग्री के लाभार्थी वीरेन्द्र रतनलाल नाहर का परिषद द्वारा कलेक्टर प्रबल सिपाहा के कर कमलों से बहुमान किया गया। साथ ही उनकी तरफ से ही अतिथियों को प्रतीक चिन्ह भी भेंट किये गए। कार्यक्रम का संचालन रजनीश नाहर ने किया जबकि आभार ललित सालेचा ने व्यक्त किया।

मंदसौर। भीषण गर्मी में राहत देने हेतु जीवदया प्रकल्प के अंतर्गत अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद ने मंदसौर रेलवे स्टेशन पर निर्धारित गणवेश में 4 ट्रेनों बान्द्रा ट्रेन, आगरा फोर्ट, डेमु ट्रेन एवं कोटा-रतलाम रेलगाड़ियों के यात्रियों तथा प्लेटफार्म पर मौजूद सवारियों को 70 केन लाकर जलसेवा की। शीतल एवं शुद्ध पेयजल पीकर यात्रियों ने खुशी एवं आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर परिषद की कुसुम लोढ़ा, भारती पोरवाल, सुनिता खानिया, सरोज चपड़ोद, हेमा लोढ़ा, माधुरी खाबिया, चंद्रकांता सोनगरा, रत्ना डोसी, पद्मा मेहता, दीक्षिता तलेरा सहित अनेक महिलाएँ मौजूद रहीं।

नागदा। साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वन्दन करने अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष करण मोरखिया, श्रीमती मोरखिया व तरुण परिषद् पदाधिकारी राज देसाई मुंबई व राहुल सकलेचा उज्जैन नागदा पधारे। श्रीसंघ व मधुकर चातुर्मास समिति नागदा की ओर से सभी का बहुमान किया गया। तरुण परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारी ब्रजेश बोहरा राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी के निवास पर पधारे। वहाँ से श्री नागेश्वर तीर्थ व आलोट में बिराजमान साध्वीश्री विद्वद्गुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वन्दन कर अष्टापद तीर्थ होते जावरा में साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. के दर्शन वन्दन कर पिपलौदा में चातुर्मास हेतु बिराजमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा. व साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वन्दन कर गच्छाधिपतिजी की निश्रा में तरुण परिषद के पदाधिकारियों की मिटिंग की गई। ■■

पिपलौदा। पुण्य सम्राट लोकसंत गच्छाधिपति श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की अंतिम चातुर्मास स्थली रतलाम से मात्र 40 किमी. दूर भक्ति भाव और समर्पण से परिपूर्ण पिपलौदा श्रीसंघ द्वारा पिपलौदा नगर में पुण्य सम्राट के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपती श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिश्वरजी म.सा., साधु मंडल व साध्वीवृंद का भव्यतीभव ऐतिहासिक चातुर्मास का लाभ मिला।

श्रीसंघ छोटा किन्तु भाव की उच्च पराकाष्ठा ने इस चातुर्मास में चार-चार चांद लगा दिए।

इसी भक्ति भाव की श्रृंखला में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा पिपलौदा चातुर्मास प्रवेश पर रतलाम श्रीसंघ से लगभग 400 समाजजन मंगल प्रवेश के साक्षी बने। तत्पश्चात् परिषद अध्यक्ष एवं संचालकगण ने सामूहिक रूप से घोषणा कर प्रति रविवार श्रीसंघ के रूप में पिपलौदा दर्शनवंदन हेतु बस द्वारा विभिन्न संघपतियों के माध्यम से सहभागिता प्रदान कर गुरुदेव से आशीर्वाद लिया। ■■

श्रृद्धांजलि

मुंबई। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और मुंबई सुधर्मा वृहद्ध तपोगच्छीय श्री जैन संघ के ट्रस्टी श्री नवीन भाई नरपतलाल बल्लू के भाई श्री अरविंद भाई नरपतलाल बल्लू (बल्लू भाई) का दिनांक 05.08.2019 श्रावण सुदी पंचमी को समाधिमय देवलोक गमन मुंबई नगर में हुआ।

श्री अरविंदभाई के अवसान से ना केवल उनके परिवार ने स्वजन खोया है, परन्तु समस्त बल्लू परिवार एवं थराद जैन समाज के एक सेवाभावी का गमन हो गया है, उनकी आयु 64 वर्ष थी। इस वय में समाधि मरण देवलोक गमन हुआ। वह बाल्यकाल से ही गुरुदेव श्री के भक्त थे और राष्ट्रसंत आचार्य भगवान श्रीमद् विजय जयंतसेन सुरेश्वरजी महाराज के साथ जुड़े हुए थे समस्त परिवार ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। ■■

जापान में नवकार आराधना में 171 आराधकों ने भाग लिया

नागानेकेन। जापान के नागानोकेन में स्व. पुण्य सम्राट जैनाचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की भक्त तुलसीजी ने समाचार प्रेषित किया है कि जापान में पुण्य सम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयनन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से नवदिवसीय आराधना पूर्ण

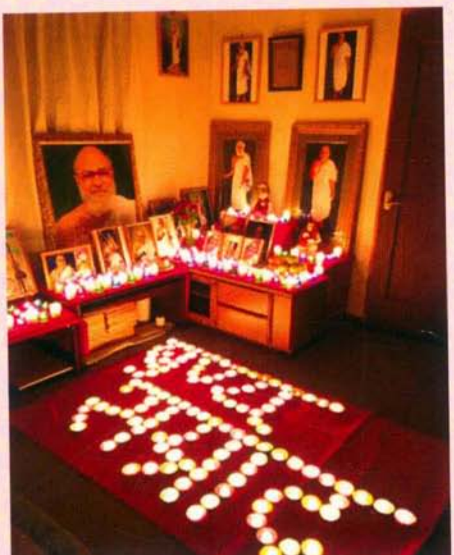

हुई। जापान में जितना कार्यक्रम हो रहे हैं। ये सब गुरुदेव का आशीर्वाद से ही हो पा रहे हैं। मैं जितनी मेहनत करूं गुरुदेव श्री के आशीर्वाद के बिना सम्भव नहीं है। मैं तो

बस गुरुदेव के दिखाये रास्ते पर चल रही हूँ और गुरुदेव ने दिया ज्ञान सबको सीखा रही हूँ। ये भी गुरुदेव के आशीर्वाद से ही हो पा रहा है।

इस बार (वर्ष) नवकार आराधना में171 लोग थे, 83 लोगों ने एकासना किया इसमें 2 साल एवं 3 साल के बच्चे ने भी एकासना किया। मैं तुलसी ने नव उपवास कर आराधना की। यह सब गुरुदेव के आशीर्वाद से ही हो पाया है। गुरुदेव है तो सब है, गुरुदेव नहीं है तो कुछ नहीं है। मेरी जिन्दगी और जापान मैं गुरुभक्त को सुखशांति और सब कुछ दिया है गुरुदेव ने हमें । गुरुदेव को पूर्ण समर्पित जापान के तुलसीबेन, कुरूमी, चीकाए, खओरी, इउकी, खाना, हीरोइउकी, ताका, खजुको, मासातो, इकुए, रीसा, ताकानोरी आदि 13 गुरुभक्तों ने 8 दिन मोबाइल का त्याग किया है ।

जैन विश्व

◆ अहमदाबाद में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी ने छह करोड़ रु. की लागत से निर्मित तेरापंथ भवन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत जैन धर्म के सिद्धान्तों का वैज्ञानिक तथ्यों के साथ स्थापित कर दुनिया को राह दिखाएगा।

◆ श्री मंगल प्रभात लोढ़ा को सम्पूर्ण मुंबई शहर का भारतीय जनता पार्टी का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

◆ प्रसिद्ध गणितज्ञ शिक्षाविद् डॉ. अनुपम जैन का अभिनन्दन ग्रंथ 'अणुण्य गणितज्ञ' का प्रकाशन किया जा रहा है।

◆ अजमेर में दादा गुरुदेव श्री जिनरदत्तसूरिजी म. का 865 वाँ स्वर्गारोहण समारोह मनाया गया।

◆ पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी म. तथा अन्तर्मना मुनिश्री प्रसन्नसागरजी का पुष्पागिरी पर छह वर्ष बाद मिलन हुआ।

◆ अमेरिका में विभिन्न जैन सेण्टरों के अध्यक्ष पद पर श्री महेशभाई वाघर की नियुक्ति तीन हजार एकत्र जैन प्रतिनिधियों ने की।

◆ जैनाचार्य श्री रामेशजी के आज्ञानुवर्ती श्री अशोक मुनिजी ने अपना 87 वां मासखमण पूर्ण किया है। इनके गुरुभाई श्री राकेशमुनिजी ने 335 आयम्बिल पूर्ण किये हैं।

◆ जैनाचार्य श्री राजयशसूरीश्वरजी म. श्री का 75 वां जन्मोत्सव आगामी दो वर्षों तक अहिंसा अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जायेगा। इसका शुभारंभ अहमदाबाद में गुजरात के पूर्व मुख्य सचिव द्वारा किया गया।

◆ ग्राम रैणी (दवेड़ली) में नसिया की भूमि पर हो रहे अवैध अतिक्रमण को हटाने की मांग को लेकर मुनि श्री संयम सागरजी अनशन कर रहे हैं। सकल जैन समाज ने अतिक्रमण मुक्त करवाने की मांग की है।

◆ राजस्थान के जहाजपुर में निर्माण हेतु की जा रही खुदाई के दौरान एक जैन मूर्ति प्राप्त हुई जो जैन समाज के लोगों को सौंप दी गई।

◆ राज्य स्तर पर श्रेष्ठ नृत्यांगना रहीं तथा दस देशों का प्रवास करने वाली सत्रह वर्षीया स्तुति शाह ने सूरत में दीक्षा

ग्रहण की। वह प्रखर वक्ता बनना चाहती थी लेकिन उसे वैराग्य का उदय हो गया।

◆ सूरत में बाहर गांव से इलाज हेतु हास्पिटल में आने वाले जैन परिवारों के लिये रियायती दर पर ठहरने आदि की सुविधा श्रीमती कंचन बेन छोटालाल चौकसी जैन आरोग्य भवन में की गई है।

◆ नैल्लोर (आंध्रप्रदेश) से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित कोवूर मंदिर में 31 इंची श्री पार्श्वनन्दजी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा आगामी 31 जनवरी 2020 में होगी।

◆ सूरत में श्री ओंकारसूरि आराधना भवन में आचार्यदेव श्री रविरत्नसूरीश्वरजी म. का चातुर्मास प्रवेश भारी उत्साह से हुआ। सामूहिक आयंबिल हुए। रविवार को युवाओं, महिलाओं, बालकों के शिविर हो रहे हैं। चातुर्मास के पश्चात् दांतराई से श्री राणकपुर महातीर्थ के लिये छ'रिपालक संघ आयोजित है।

◆ पू. श्री लब्धिसूरिजी समुदाय के आचार्यश्री वारिषेणसूरीश्वरजी का 31 जुलाई को पालीताना स्थित श्री गिरिविहार उपाश्रय में कालधर्म हो गया।

◆ अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद के युवा एवं महिला परिषद केएमपी का दो दिवसीय संयुक्त चतुर्थ अधिवेशन 21 व 22 सितम्बर को आचार्य श्री जिनमणिभसूरिजी म. की निश्रा में महाराष्ट्र के धुलिया नगर में होगा।

◆ श्री आदिनाथ जैन ट्रस्ट चैन्नई द्वारा संचालित जैनोलॉजी कोर्स की परीक्षा 29 जुलाई को देश के 160 केन्द्रों पर आयोजित की गई जिस पर 2300 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

◆ श्री जिनकुशलसूरिजी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट बैंगलुरू के श्री निर्भयलालजी गुलेच्छा अध्यक्ष तथा श्री कुशलराजजी गुलेच्छा महामंत्री निर्वाचित हुए। अन्य पदाधिकारी भी घोषित किये गये।

◆ अ.भा. जैन अल्पसंख्यक महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललितजी गांधी के नेतृत्व में मिले प्रतिनिधि मंडल को केन्द्रीय रेलमंत्री श्री पीयूष गोयल ने आश्वासन दिया कि प. बंगाल के वर्धमान रेलवे स्टेशन का नाम नहीं बदला जायेगा।

◆ सूरत में श्री ओंकारसूरि आराधना भवन में आचार्य देव श्री रविरत्नसूरीश्वरजी म. सा. का चातुर्मास प्रवेश भारी उत्साह से हुआ। सामूहिक आयंबिल हुए। रविवार को युवाओं, महिलाओं, बालकों के शिविर हो रहे हैं। चातुर्मास के पश्चात दांतराई से श्री राणकपुरमहातीर्थ के लिये छ'रिपालक संघ आयोजित है।

◆ पू.श्री लब्धिसूरिजी समुदाय के

आचार्यश्री वारिषेणसूरीश्वरजी का 31 जुलाई को पालीताना स्थित श्री गिरि विहार उपाश्रय में कालधर्म हो गया।

◆ हुबली यहाँ श्री जैन मरूधर संघ में चातुर्मास हेतु विराजित साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में 'संयम उपकरण वंदनावली की चाब घर ले जाने का लाभ शा. अचलचंदजी हरकचंदजी मांडोत रेवतड़ा वालों ने लिया। प्रवचन के बाद साध्वीजी की निश्रा में सकल संघ के साथ ढोल नगाड़ों के साथ चाब को उनके निवास पर ले आये। शाम को लाभार्थी परिवार के यहाँ प्रभु भक्ति का आयोजन किया गया।

◆ **चेन्नई** । अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को सूर्यदत्त संस्थान समूह, पूणे (महाराष्ट्र) की सलाहकार परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है।

◆ **हुबली** । कॉम्पलेक्स स्टेशन रोड़ हुबली में करेमा माँ के मंदिर का वार्षिक उत्सव बड़े ही हर्षोल्लास व धूमधाम से मनाया गया।

◆ कोयम्बटूर जैन महासंघ द्वारा विशाल चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 600 लोगों ने लाभ लिया। इसमें सभी दवाएं निःशुल्क दी गईं तथा टेस्ट का भी शुल्क नहीं लिया गया। इसका आयोजन श्री माणकचंद शांतिदेवी नाहर चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से किया गया।

◆ आचार्य श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. की निश्रा में वि.सं. 2075 के वर्ष में होने वाले जिनशासन प्रभावना के कार्यक्रमों की सूची घोषित की गई है। ■ ■

श्री जयंतसेन जयनाद

या तो सुधार या फिर परित्याग

जो अनुशासनहीन है, न्याय नीति के विरूद्ध चलता है, उसे सुधारने के लिए अवश्य प्रयास करना चाहिए। यदि वह नहीं माने, अपनी आदत न छोड़े, तो उसे त्याग देना चाहिये । ऐसे अनुशासनहीन को अपना मान कर उसे प्रोत्साहित करना साँप को दूध पिलाना है। अतः उसे या तो सुधारा जाये या फिर उसका सर्वथा परित्याग कर देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो वह अपने नाम को कलंकित कर देगा. उसके कारण अपना जीवन दुखमय बन जायेगा ।

जैसे धर्म मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अधर्म के रास्ते पर चलने वाले नास्तिक से संबंध रखना पसंद नहीं करना, वैसे ही अनुशासनप्रिय व्यक्ति अनुशासनहीन स्वच्छन्द व्यक्ति के साथ अधिक समय तक संबंध नहीं रख सकता। जो नहीं सुधरे, उसे छोड़ ही देना चाहिए।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा. अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

धानेरा में गूंज रहा है जय जयकार, जय जयकार
जैनाचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. के सान्निध्य में चातुर्मास

दाधाल/यहां गुरूवर्या श्री प्रीति दर्शनाश्रीजी ठाणा-4 का चातुर्मास बहुत ही हर्षोल्लास के साथ हो रहा है। भव्य प्रवेश के दिन से अब तक संघ में विविध तपस्या हो रही हैं। जिसमें सिद्धि-तप, सौभाग्य-कल्प वृक्ष तप, नवकार एकासणे (जिसमें 40 आराधको ने भाग लिया है) विविध-विविध प्रकार के अनुष्ठान हुए और होने जा रहे है। श्री शितलनाथ परमात्मा के शक्रस्तव स्त्रोत द्वारा भव्य अभिषेक हुआ। पुण्य सम्राट की मासिक पुण्य तिथि पर श्री जयन्तसेन अष्टप्रकारी पूजन का प्रथम बार भव्य आयोजन हुआ। सभी भावुकों ने खूब उत्साहपूर्वक भाग लिया, श्रावण सुद पूनम को सिद्धाचल भावयात्रा का आयोजन हुआ।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/-

वर्ष-66, अंक-9

कुल पृष्ठ कवर सहित -136

पिपलौदा चातुर्मास में फहर रही है शान से धर्मपताका गच्छाधिपति जैनाचार्य धर्म दिवाकर श्रीमद्विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. का परम सान्निध्य

पूज्य गच्छाधिपति श्री का उद्बोधन

आशीर्वाद मुद्रा में

च्छाधिपतिश्री तथा विधायक श्री चेतन्यजी काश्यप

आशीर्वाद लेते हुए श्री के.के. सिंह

पुण्य सम्राट की वंदना

भक्ति

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001